कहानियाँ

|| अँगरेज़ी से अनुवादक ||

श्रीनारायण झा

|| सम्पादक ||

महादेव साहा

|| कवर के शिल्पी ||

श्री गणेश वसु

|| भीतर के चित्र मूल पुस्तक की अनुकृति हैं ||

|| मुद्रक ||

श्री श्यामल दे

हिन्द पेपर प्रिंटर्स

७६।६ लोअर सरकुलर रोड, कलकत्ता-१४

|| प्रकाशक ||

ईस्टर्न ट्रेडिंग कम्पनी की ओर से

श्री देवीप्रसाद मुखोपाध्याय

६४ए धर्मतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता-१३

साइज़—७ × ५.५ इंच। पृष्ठ संख्या १६४+८। पाइका टाइप।

प्रथम संस्करण, १९५७; २०५० प्रतियाँ।

मूल्य—दो रुपये पचास नये पैसे

लेखक का निवेदन

बचपन में मैं यात्रा की और दुस्साहसिक कार्यों की पुस्तकें बहुत पसन्द करता था। मैं सदा विज्ञान की रहस्यमय बातें ढूँढ़ता रहता था और दूर-दूर के देश मुझे बराबर खींचते थे।

जब यूक्राइन के दक्षिण में गृह-युद्ध छिड़ा हुआ था, तब तक मेरा बचपन बीत चुका था। अपने पिता से, बतौर बपौती के तगड़ा शरीर पाकर मैं उन दिनों घर बैठा नहीं रह सकता था जब मेरा देश खतरे में था।

फौज में भरती होकर गृह-युद्ध के दिन मैंने अज़ोव और काला सागर के तट पर बिताये और बुरी तरह घायल होकर फिर अपनी किताबी दुनिया में जा बसा।

१९२२ में मैंने अपने देश के एक विख्यात वैज्ञानिक का एक लेख पढ़ा जिसमें अपूर्व वैज्ञानिक तत्परता के साथ उस विशाल नदी का वर्णन किया गया था जो बीस करोड़ वर्ष पहले बहती थी। लेखक ने उस नदी के किनारे रहनेवाले विचित्र पशुओं को मानो पुनर्जीवित कर दिया हो, पाठकों के सामने पृथ्वी के अतीत को ढकनेवाला पर्दाफ़ास कर दिया हो।

मैंने उस विख्यात वैज्ञानिक को पत्र लिखकर बताया कि

उस लेख से मेरे अन्दर उस विषय में कितनी दिलचस्पी पैदा हुई है। उन्होंने मुझे अपने पास बुला लिया, पढ़ने के लिये किताबें दीं, अपने संग्रहालय की चीज़ें मुझे दिखाईं और उनकी सहायता से मैं पृथ्वी और जीवन के इतिहास में डुबकी लगाने लगा।

बहुत दिनों तक मैं दुविधा में पड़ा था कि कौन-सा पेशा अख़्तियार करूँ—नाविक का या वैज्ञानिक का? एक दिन मैं मोटरबोट से बाकू लौट रहा था। दिन शान्त और साफ़ था। मुझे ३० फुट नीचे समुद्र का तल दिखाई पड़ रहा था।

यकायक मैंने महसूस किया कि मैं एक ऐसे शहर का ध्वंसावशेष देख रहा हूँ जो अगम्य और डूबा हुआ है। उसकी दीवारें और ऊँचे गुम्बद मुझे दिखाई पड़े। जब मैं उस शहर के मकानों और सड़कों की रूपरेखा देखने लगा तो सहसा हवा चली और पानी लहरा उठा जिससे वह विचित्र दृश्य ग़ायब हो गया।

इस घटना की मुझ पर ऐसी अमिट छाप पड़ी कि मैं विज्ञान की ओर खिंचता चला गया। पृथ्वी के इतिहास की, परिवर्तन और विकास के कारणों की जानकारी हासिल करने की एक अदम्य आकांक्षा ने मुझे अपने वश में कर लिया।

उस वैज्ञानिक महोदय की कृपा से मुझे विज्ञान अकादमी में एक छोटी-सी नौकरी मिल गई और मैंने अपनी ज़िन्दगी का विज्ञान से गँठबन्धन करा दिया।

जाड़ों में मैं प्रयोगशाला में काम करता था और गर्मियों में पथराये पशुओं को ढूँढ़ने के लिये सारे सोवियत संघ का

चक्कर लगाता था। मैं सफल शिकारी साबित हुआ और उत्तर के जङ्गलों और दलदलों में, यूराल की प्राचीन खानों की गुम-दुनिया में और मध्य एशिया के गर्म रेगिस्तानों और पहाड़ों पर मैंने कई दिलचस्प आविष्कार किये।

मैंने लिखना शुरू किया। लेकिन बार-बार लिखता था और बार-बार फाड़ फेंकता था। फिर भी अपनी कहानियाँ खुद मुझे ही पसन्द नहीं आती थीं। मेरे चुने हुए शब्द नाकाफ़ी थे, प्रकृति का वर्णन नीरस था। आखिरकार मैंने लिखना ही छोड़ दिया।

फिर एक बड़े अर्से के बाद मैं लिखने लगा। पिछले महा-युद्ध के समय एक भयङ्कर बीमारी ने मुझे क़रीब अपाहिज बना डाला था। बीमारी तो आख़िर गयी, मगर पूर्ण स्वस्थ होने में काफ़ी समय लगा। मेरे वे बड़े बुरे दिन थे। सदा यह विचार सताता रहता कि देश के ऐसे दुर्दिन में मैं कुछ करने के लायक ही नहीं। तब मैंने तय किया कि अगर मैं अपने देश-वासियों के सामने समुद्र के रहस्य, अपने इस विशाल देश की प्रकृति का वर्णन, अपनी आश्चर्यजनक जनता के नाविकों पर्यटकों, वैज्ञानिकों के स्वप्न तथा विज्ञान को उनकी अपूर्व देनों की कहानियाँ पेश कर सकूँ तो शायद मैं भी देश के लिये कुछ करने में हाथ बँटा सकूँ।

मेरी कहानियाँ पहले-पहल १९४४ में प्रकाशित हुईं और जनता ने उनका स्वागत किया। इससे मुझे प्रोत्साहन मिला और जब मैं भला-चंगा होकर फिर वैज्ञानिक कार्य करने लगा तब भी

लिखना नहीं छोड़ा। १९४५-४८ में मेरी और भी कहानियाँ प्रकाशित हुईं जिनमें से चार इस संग्रह में हैं। १९४९ में मेरी सबसे लम्बी रचना—प्राचीन मिस्र और यूनान के संबन्ध में ऐतिहासिक उपन्यास—प्रकाशित हुई। १९५३ में और एक ऐतिहासिक पुस्तक, 'बौरीज़ेद की यात्रा' निकली।

मैं समझता हूँ कि मेरी सब कहानियों में मेरे बचपन के सपनों की, दूर-दूर देशों के प्रति मेरी दिलचस्पी की छाप है। इन देशों का विज्ञान की कसौटी पर कसा इतिहास हो या न हो फिर भी कभी-कभी मेरा दिमाग़ काल की रहस्यमय गहराई में डुबकी लगाता है। मेरे ये 'दूर-दूर के देश' ऐसे नये रास्ते भी हैं जिनपर चलना बाकी है, सिर्फ़ कहीं-कहीं दूर के कुछ निशान दिखाई पड़ते हैं। इन रास्तों पर पड़े रहस्य का पर्दाफ़ास करने की कोशिश करना भावी वैज्ञानिक सफलताओं को वास्तविकता के रूप में पेश करना, विज्ञान के अगले पड़ाव तक पाठकों को ले जाना—यही तो वैज्ञानिक कहानी का मुख्य उद्देश्य होता है। कम से कम मैं तो ऐसा ही सोचता हूँ। मगर सोवियत वैज्ञानिक कहानी का दायरा इतना तंग नहीं : समाज-जीवन के अध्ययन में सहायता करने के लिये अपनी जनता की मानसिक और सृजनात्मक प्रवृतियों के विकास को बल देना, अतीत के नये-नये रहस्यों का पता लगाना और इसी रास्ते पर भविष्य की झाँकी पाना इसका प्रधान उद्देश्य है।

अक्तूबर—१९५३ आई० ए० येफ़्रेमोव

सूची

चन्द्र-पर्वत

वितिम-ओलेक्मा राष्ट्रीय इलाका पूर्वी साईबेरिया में पड़ता है। दक्षिणी याकूतिया की सीमा से मिले हुए इस विशाल पहाड़ी इलाके का उत्तर-पूर्वी भाग घनी पर्वतमालाओं से भरा है और शायद वहाँ के पहाड़ सारे साईबेरिया में सब से ऊँचे-ऊँचे हैं। इस जंगली और दुर्गम देश की आबादी नहीं के बराबर है। अभी हाल तक इसकी खोज बिलकुल ही नहीं हुई थी। पन्द्रह वर्ष पहले मैंने ही पहले नक्शे पर के इस कोरे भूभाग में प्रवेश किया। 'पहले' कहने का मेरा तात्पर्य यह है कि मैं ही पहला वैज्ञानिक अन्वेषक था। इस देश के आदिवासी तुंगुस और याकूत लोग शिकार की खोज में वहाँ के हर इलाके में बार-बार आ-जा

चुके थे। तुंगुस शिकारियों ने अकसर मुझे वहाँ के बहुत दूर-दूर के कोनों के विषय में कीमती ब्यौरा दिया और नदियों, उद्गमों तथा पहाड़ों के सिलसिलों के तुरन्त सविस्तर नक्शे बना दिये। छोटी-छोटी नदियों का भी नामकरण हो चुका था क्योंकि आम तौर से नदियों के किनारे-किनारे ही वे खानाबदोश सफ़र करते थे। पहाड़ों का यह हाल नहीं था क्योंकि वास्तववादी तुंगा शिकारी ऐसे मामूली ब्यौरों को कभी अपने दिमाग़ में नहीं ठूँसेगा जिनका सम्बन्ध उसकी गतिविधि या पड़ाव डालने से न हो। इसलिये पहाड़ों का नामकरण स्वयं मुझे ही करना पड़ा जिन्हें वहाँ वाले 'गोलेत्स' कहते हैं।

दिसम्बर १६३५ के अन्त में मैं याकूलिया से चल देने तथा तोक्को नदी के किनारे-किनारे वितिम-ओलेक्मा राष्ट्रीय इलाके के भीतर तक जाने के लिये उसी नदी के पास था। मेरे बड़े अभियात्री दल का अब एक छोटा-सा हिस्सा ही रह गया था। बाकी लोगों को मैंने अलपान और लेना नदियों की ओर भेज दिया था और इस प्रकार अपनी खोज के इलाके को बढ़ाया था।

यद्यपि पाला बहुत भयानक था और हमारे पास खानेपीने के सामान की भी कमी हो गई थी, फिर भी मैंने वहाँ की पार्वत्य-प्रणाली को पार करने का निर्णय किया। जाड़े में यह काम काफ़ी आसान होता है जब कि नदियाँ दुर्गम सँकरी पहाड़ी घाटियों में तूफ़ान की तरह गरजती नहीं रहती हैं, बल्कि बर्फ़

से जमी रहती हैं और बारहसिंगे की स्लेजों पर आसानी से पार की जा सकती है।

मेरे तीन आदमियों में से हर कोई अपने-अपने काम के लिये निहायत ज़रूरी था। वे थे, हमारा याकूत पथ-प्रदर्शक और बारहसिंगों के झुण्ड का मालिक गाविशव, भूगर्भशास्त्री अलेक्ज़ान्द्रोव और हमारा रसोइया, सोने का अन्वेषक और शिकारी हर-फ़नमौला अलेक्सेई। ये तीनों के तीनों तैगा के घिसे-पिटे आदमी थे और अकसर साईबेरिया के सब से अधिक जंगली अंचलों के काफ़ी भीतर तक मेरे साथ जा चुके थे।

हमलोग जब से चले थे, तब से करीब नौ महीने बीत चुके थे। एक बहुत कठिन भूभाग सामने पड़ा था। तोकूने उपत्यका के और भी बड़े भाग का नक्शा तैयार करता हुआ सात स्लेजों और चार अतिरिक्त बारहसिंगों का हमारा काफ़िला बर्फ से जमी हुई नदी के किनारे-किनारे तेज़ी से बढ़ने लगा। यहाँ पर नदी ने अपनी टेढ़ी धारा को बदल दिया है (तुंगुस भाषा में 'तोक्कोरीकान' का अर्थ टेढ़ा-मेढ़ा, है) और बहुत सीधी धारा में बहने लगी है, जिससे उसका नाम सार्थक नहीं रह पाता। रोज़-ब-रोज़ मुख्य नक्शों में नयी-नयी शाखायें जुड़ने लगीं जो कई महीनों के कठोर परिश्रम का फल थीं। नक्शे में एक लम्बी चौड़ी उपत्यका का निशान बन गया जो नदी के उद्‌गम से दक्षिण को गई थी। लहराते नुकीले गोल टीलों—जिसे यहाँवाले 'सोपका' कहते हैं—के उस पार उदास पर्वतों की ऊबड़-खाबड़ पाँत की

ओर तेज़ी से बढ़ती हुई हमारी स्लेजों की खड़खड़ाहट और बारह-सिंगों की टापों की आवाज़ रोज़-ब-रोज़ वहाँ की अनन्त निस्तब्धता को भंग कर रही थी।

हमलोग मालभूमि के दक्षिणी हिस्से पर पहुँच गये। वह उदास और सुनसान जगह थी। यह मालभूमि नीची थी जिस पर सोप-काओं की अनगिनत पाँतें बिखरी थीं, सबकी ऊँचाई साधारणतः एक-सी थी और उन पर चीड़ के पेड़ों से अँधेरा छाया था। छोटे दिनों का अधिक से अधिक फायदा उठाने की कोशिश में हम फिसलते चले गये।

२१ दिसम्बर को सोपकाओं की जगह बड़े-बड़े टीले दिखाई पड़े जिनका ऊपरी भाग सँकरा था और जिनपर लाल-से भूरे बबूलों की भरमार थी। ये बबूल काले चीड़ों और सदाबहार देवदारों से अलग लगते थे। यह इस बात का निशान था कि चूना-पत्थर की उदास मालभूमि को हम पीछे छोड़ आये हैं तथा ग्रेनाइट और स्तर-विन्यस्त प्रस्तर के देश में आ गये हैं। मानों इस महा-देश का यह नीचे का प्राचीन तल्ला हाल में धरती की पपड़ी के उभर जाने से काफ़ी ऊँचाई पर पहुँच गया है। हमारा भूगर्भ-शास्त्री जिस तरह चौकन्ना हो गया था, वह भी इसका एक पक्का चिह्न था! इसके पहले तक वह ऊबा हुआ अपनी स्लेज पर बैठा था और उसके गले से टोपोग्राफिक प्लेन-टेबल लटक रही थी।

आकाश अधिक साफ़ और अधिक नीला होता गया, बादलों का नीचे झुका हुआ ठोस पर्दा दक्षिण को उड़ गया, जो पार्वत्य-प्रदेश

के प्रवेश-पथ पर तिरछा होकर लटका रहा। पाला और भी दुखदायी होता जा रहा था, स्लेजों की खड़खड़ाहट और भी ज़ोर, और भी अधिक तीक्ष्ण हो गयी। बारहसिंगों के तेज़ी से हाँफने से काफ़िले के ऊपर भाप का सफ़ेद धुन्ध छा गया। माल की चौड़ी स्लेज पर मैं आराम से असबाब के बीच में दुबका बैठा था, मेरा दाहिना पाँव मुड़ा हुआ बदन के नीचे छिपा था और बाँया नीचे लटकता हुआ गाड़ी को रोकने और घुमाने का दुहरा काम कर रहा था। बीच-बीच में मैं लगाम एक से दूसरे हाथ में ले लेता था और उद्विग्नता के साथ अपने पञ्जों को रगड़ता था क्योंकि पाला पड़ने से उसके सुन्न हो जाने के डर से मैं बराबर सावधान रहता था। खतरे का पहला लक्षण देखते ही हम गाड़ी से कूदकर स्लेज के साथ दौड़ते चलते थे। हमारा मक्खन बहुत पहले ही समाप्त हो चुका था जिससे ठण्ड से बचने की हमारी शक्ति कम हो गयी थी।

सामने के भूरे बादल गहरे लाल हो गये और उस तुषारक्षेत्र में जहाँ भी जो खोखली जगह थी, वह हल्के-नीले रङ्ग की छाया से भर गई। नदी के एक घुमाव के उस पार एक बड़ा सीधा खड़ा गोलेत्स उभरा दिखाई पड़ा। हमने जब उसका प्रदक्षिण कर लिया तो देखा कि वह उपत्यका दो शाखाओं में बँट गई है। बीच में एक ऊँचा सोपका है जिसका ऊपरी हिस्सा ऊबड़-खाबड़ है। हम तुरन्त पहचान गये कि यही वह विन्दु है जहाँ तोक्को नदी में उसकी बाँयी ओर की विशाल सहायक नदी चिरोदा

आ मिलती है। और आगे चलकर तोक्षो उपत्यका एक सँकरी, चट्टानों से भरी घाटी हो गई जो दक्षिण-पश्चिम को चारा नदी के उद्गम की ओर घूम गई। वहाँ दो ऊँचे-ऊँचे पर्वत-पृष्ठों के बीच में एक बड़ी निम्नभूमि में एक छोटी-सी बस्ती थी जहाँ एक मामूली व्यापारिक केन्द्र और एक बेतार केन्द्र भी था। उसी बस्ती से हम अपने खाने-पीने का सामान जुटाना चाहते थे।

तोक्षो उपत्यका में रात का पड़ाव डालने के लिये जब हम रुके, उससे पहले ही सूरज डूब चुका था। हमारा यह दल इतने दिनों से एक साथ सफ़र कर चुका था कि हम सारे काम बड़ी तेज़ी और दक्षता से उसी तरह करते थे जैसे अभिनेताओं का एक दल हो जिसे एक साथ काम करने का वर्षों से अनुभव हो। अन्धकार से भरती सन्ध्या में हमने बाँस बाँधे, बर्फ़ हटाई, तम्बू खड़े किये और लकड़ी काट ली। अलेक्सेई ने चूल्हा जलाया और ब्यालू बनाने लगा। उसकी नली से एक हल्की लपट निकलने लगी। यह नली तम्बू के दरवाज़े के पास तक आ गई थी। जब हम सब गर्म सुर्ख़ चूल्हे के पास गरमाकर तम्बू में दाख़िल हुए, तब तक सफ़ेद बर्फ़ पर हमारी स्लेजें काले-काले धब्बे-सी हो गयी थीं। भीषण सर्दी में सारा दिन बिताने के बाद गर्मीवाली जगह में आराम करने से अधिक आनन्ददायक क्या हो सकता था? लेकिन पहले अपने गले से भीगा-सा बर्फ़ से ढका मफलर खोल लेना है, जूते उतार लेने हैं, बर्फ़ से जमी ज़मीन को ढकने के लिये आपने बबूल की डालें बिछाई हैं, उनपर

मृगछाला फैला लेना है, अपनी सोने की बोरी को तब खोलकर फैलाना है। अब जबकि आप अपने भारी कपड़े उतार चुके हैं तो एक विशाल सिगरेट बना सकते हैं और अपने शरीर की पोर-पोर में उस आनन्ददायक गर्मी का मज़ा ले सकते हैं।

उस शाम को हम इसी तरह अपने तम्बू के अन्दर बैठे थे। हमारे पाँव मुड़े हुए नीचे दबे थे और उबाले मांस की आनन्द-दायक आशा में गरमागरम चाय इतनी पी रहे थे कि आपके लिये विश्वास करना कठिन होगा। भयानक पाला भी किसी को भयानक गर्मी से कम खुश्क नहीं करता; और हमने अपने नियम के अनु-सार दिन भर कुछ भी नहीं पिया था। इसलिये शाम तक हमारी प्यास ऐसी हो गई थी कि बुझ ही नहीं रही थी। चूल्हे की टिमटिमाती गुलाबी रोशनी की सुखद गर्मी में मौसम के मारे कठोर चेहरों पर कोमलता आने लगी और उभरी झुर्रियाँ दबने लगीं।

ज्योंही हमारी जलाने की लकड़ी खत्म हो गयी कि बर्फीली हवा लगातार तम्बू के अन्दर घुसने लगी। हमें फिर अपना रूईभरा कोट और रोयेंदार चमड़े के मोजे पहन लेने पड़े और हर छोटे-से छोटे छेद को बन्द करके अपनी सोने की बोरियों में घुस जाना पड़ा। उस बर्फीली निस्तब्धता में चूल्हे की बुझती हुई लपट कुछ देर तक टिमटिमाती रही। कभी वह उसके ऊपर सूखने के लिये टंगे बर्फ पर चलने के जूतों को, दस्तानों को, मफलरों को रोशन करती तो कभी सवेरे के लिये जमा जलाने की लकड़ी को और कभी बारहसिंगों के साजों को। तब आग

बुझ गई। ऊंघते हुए हम बाहर की दुनिया के शोर सुन रहे थे, कहीं दूर बर्फ के बैठने की आवाज़, जाड़े से टूटते हुए किसी पेड़ की चरमराहट, और अपने को गर्म रखने के लिये बारहसिंगों का बार-बार रंभाना।

अगला दिन दक्षिणायण का दिन था। उस दिन मौसम शान्त था, किन्तु पाला ज़बर्दस्त पड़ रहा था। बदरंग आसमान साफ़ और बहुत ऊँचा दिखाई पड़ता था। सवेरे की स्थिर हवा में हमारे मुँह से निकलता हुआ भाप तुरन्त हिमकण बन जाता था। इन हिमकणों का एक दूसरे से टकराना एक विचित्र सरसराहट पैदा करता था। जिसे याकूत "तारों की फुसफुसाहट" कहते हैं, उस मृदु सरसराहट का अर्थ था कि तापमान शून्य से ४५ सेन्टीग्रेड से भी नीचे है। पारे का एक थर्मामीटर रात को बाहर छूट गया था और नंगे हाथ उसे छूते ही अले-कज़ान्द्रोव आश्चर्य से चीख उठा। उसकी काँच की नली चकनाचूर हो गयी और जमे हुए पारे की गोली उसकी उँग-लियों में चिपक गई। साज की बोरी से अपना अलकोहल थर्मामीटर निकालने के सिवा कोई चारा नहीं रह गया और उसने जल्दी ही शून्य से नीचे ५७ सेन्टीग्रेड का आतंक उत्पन्न करनेवाला अंक दिखलाया।

जलाने की लकड़ी का अपना स्टाक हमने फिर पूरा कर लिया और अपने को चाय से गर्म किया। उसके बाद हर कोई अपने-अपने काम में जुट गया। भूगर्भशास्त्री अपनी स्लेज

पर चिगोदा तक गया, पथ-प्रदर्शक बारहसिंगों की देखभाल करने लगा, अलेक्सेई सोने की तलाश में निकला। वहाँ की ज़मीन देखने और उसका नक्शा बना डालने के लिये मैंने पास के एक गोलेत्स पर चढ़ना तय किया।

मैंने चढ़ने की दृष्टि से सबसे आसान पहाड़ी चुनी और उस गोलेत्स पर चढ़ना शुरू कर दिया। मेरे बर्फ़ पर चलने के जूतों की चिकनी एड़ियाँ चूर-चूर होने और अविश्वास्यरूप से साफ़ तुषार पर फिसलने लगीं और मैं पेड़ों के कुन्दों को पकड़कर अपने को संभालता रहा। पाले के कारण मैं ज़ोर से साँस नहीं ले पाता था जिससे चढ़ाई और भी मुश्किल हो गई। मेरे चेहरे के चारों ओर रोयेंदार चमड़े की टोपी पर जमे हुए पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें उभरी हुई थीं। इस सब के बावजूद मैं जैसे-तैसे उस गोलेत्स की चोटी पर एक समतल मञ्च जैसे स्थान पर चढ़ गया। उस गोलेत्स पर दो बड़ी-बड़ी ग्रेनाइट की चट्टानें थीं जिन पर काई जम गयी थी और हवा ने जिन्हें रगड़कर चिकना बना दिया था। उनमें से एक की चोटी पर मैं जैसे-तैसे चढ़ गया और चारों ओर देखने लगा।

बौने-बौने बबूलों की आड़ में आधे छिपे तम्बू के साथ अपना खाली डेरा मैंने देखा जो बहुत छोटा और विशाल-विशाल चट्टानों के बीच में खोया-सा दिखता था। मेरे पीछे की ओर वह गोलेत्स बिलकुल सीधे जहाँ उतर गया था, वह फुन्नीदार गलीचा-सा लगता था जिसकी बुनावट में देवदार का हरा और बर्फ़ का

सफ़ेद रंग थे। बाँयी ओर ऊबड़-खाबड़ सोपका के पीछे चिरोदा की सफ़ेद धार गई थी, दाहिनी ओर उसी तरह की एक धार तोकों का निशान थी। दक्षिण की ओर सूरज के नीले से प्रकाश में करीब ३० मील के फ़ासले पर मैंने उदोका पर्वतपृष्ठ देखा जिसकी दीवार रुपहले धुन्ध से ढकी थी। एक ओर वह यकायक पूर्व में ओलेक्मा की ओर घूम गया था और उसके मुड़ने के ठीक नुक्कड़ पर एक बहुत बड़े गोलेत्स के विशाल-विशाल स्तूप दिखाई पड़े, उस इलाके में मैंने जितने देखे थे, उन सबसे ऊँचे-ऊँचे। जो सबसे नज़दीक था, उस पर मेरी निगाह पड़ी—एक विशाल अकेला बहुत ऊँचा पहाड़ जिसकी नुकीली चोटी पर तीन बड़े-बड़े दाँतों जैसा मुकुट था।

बड़ी कड़ी मेहनत से मैंने चारों ओर की भूमि का एक रेखाचित्र बनाया। मेरा ठिठुरा हाँथ पेन्सिल पकड़ने में भी करीब असमर्थ था! फिर कुतुबनुमा से दिशायें देखीं।

मेरे चारों ओर की गम्भीर पथराई निस्तब्धता में हवा का तनिक कम्पन तक नहीं था। ऊपर सिर पर निर्मल नील आकाश था, वह भी गम्भीर और निस्तब्ध। वह सर्द और दुश्मन दुनिया थी, पत्थर-सी मौन; और मेरे हृदय में बहुत दिनों से गर्म देशों के प्रति जो आकर्षण था, वह फिर ज़ोर मारने लगा।

बिलकुल बचपन से ही मैं अफ्रीका के सपने देखता आया हूँ। यात्रा और साहसिक कार्यों की पुस्तकों से मैं उस अनदेखे काले महादेश और उसके रहस्यों के प्रति किशोरावस्था के आक-

देश में पहुँचा, उसके विशाल-विशाल, अकेले-अकेले, पेड़ोंवाले धूप से जगमग मैदानों (veldt) के, उसकी विशालकाय झीलों के, केनिया के विचित्र वनों के और दक्षिण की ऊँची ऊसरभूमि के सपने देखता रहा। बाद में भूगोलशास्त्री और पुरातत्वशास्त्री के नाते मैंने अफ्रीका में वह देश देखा जहाँ से मानव-समाज, एक से दूसरे देश को जाते हुए पशुओं के साथ उत्तर की ओर फैल गया। मेरी वैज्ञानिक दिलचस्पी ने अफ्रीका की आत्मा के विषय में अपने जवानी के सपनों को एक ठोस बुनियाद दी—जिसका शक्तिशाली सर्वजयी जीवन उसकी विस्तृत उच्चभूमि पर, महान् नदियों में, दो महासमुद्रों के बीच हवा से पिटती वेलाभूमि में लहरा रहा है।

उस अंधकार महादेश की जाँच-पड़ताल करने के मेरे सपने कभी सार्थक नहीं हुए। मेरी मातृभूमि भी अफ्रीका जैसी ही विस्तृत थी और उसके नक्शे पर भी उतने ही कोरे स्थान थे। मैं साई-बेरिया का अनुसन्धानकारी बन गया और उत्तर के असीम, जनहीन बियाबान ने मुझे मोह लिया। किन्तु कभी-कभी जब सर्दी के कारण मेरा शरीर थककर चूर हो जाता और उदास तथा दुख-दायी प्रकृति से जब मन ऊब उठता तो मैं फिर अफ्रीका के उस रोमांचक, मोहक और अपने लिये निषिद्ध देश के सपने देखता।

बेरहम सर्दी ने मुझे असलियत पर ला दिया। मैं उस गोलेत्स से उतरा और डेरे तक गया। सूरज पहाड़ियों की आड़ में पहले ही डूब चुका था, लेकिन मेरे मित्रों में से कोई अभी

तक नहीं लौटा था। मैंने चूल्हा जलाया, उस पर चाय की जमी हुई केतली रख दी और एक मृगछाला पर अपने शरीर को पटक दिया। इन्तज़ार करने लगा कि तम्बू काफ़ी गर्म हो जाय तो कपड़े उतारूँ।

अगले दो दिन, २२ और २३ दिसम्बर हमारे लिये बड़ी कठिनाई के थे। तांक्रो उपत्यका संकुचित होकर एक दरार बन गई जिसके दोनों ओर ऊँची-ऊँची पहाड़ियों की दीवारें थीं। उस घाटी में ज़ोर से चलती हुई हवा ने बर्फ पर से पाले को बुहार दिया था। वह नदी अपने धारामार्ग में पड़नेवाले अनेक जलप्रपातों तथा नदीप्रपातों की पूरी नकल करती हुई बर्फ से जम गई थी। कहीं-कहीं चट्टानों के तीखे दाँत बर्फ के बाहर निकले दीखते थे। वह घाटी दूर के बज्र-गर्जन तथा टूटती और बैठती बर्फ की कराहों से गूँज रही थी।

आगे बढ़ना भी एक अजीब आतंक उत्पन्न करनेवाला था। बार-बार गिरना और सँभलना, अपने पैरों के ठीक नीचे, सिर्फ़ एक फ़ुट से कुछ ज्यादा मोटी पारदर्शी बर्फ के नीचे नदी के मचलते हुए पानी को उछलते-कूदते एक चमकीले हरे-से जल-प्रपात में गिरते देखना। पानी और फेन की उस तेज़ उथलपुथल की वैसी चुप्पी से वह अलौकिक-सी अवस्था और भी विचित्र हो गई थी। लगता था कि पालेदार सन्ध्या जिस तरह बहुत नीचे और बहुत भारी बोझ के साथ उस घाटी पर लटक रही है, उसी तरह पानी और फेन भी जमकर चुप हो गये हैं।

खुली बर्फ पर स्लेज गाड़ियों पर सफ़र करना कमरतोड़ काम है। उसकी कड़ी, चिकनी सतह पर हमारे बारहसिंगे बिलकुल असहाय थे। वे बड़ी बहादुरी से संघर्ष कर रहे थे, लेकिन पग-पग पर उनकी टाप फिसलती थी और वे बार-बार गिर पड़ते थे।

उस घाटी की गहराई से एक दबा हुआ शोर आने लगा जो बढ़ता गया और जल्दी ही एक निरन्तर गंभीर गर्जन बन गया। अब हम कुछ बड़े भीषण नदीप्रपातों के निकट पहुँच रहे थे जिनकी पाशविक शक्ति शून्य से पचास डिग्री नीचे की सर्दी में भी वश न मानती थी। उस घाटी की रूपान्तरित शैलों (Shale) से बनी ऊँची-ऊँची दीवारों की ऊँचाई के करीब आधे तक सफ़ेद धुन्ध छा गया था। चिकनी, बलखाती लहर की शक्ल में पानी करीब दस फुट ऊपर उठ जाता, नीचे की ओर छलाँग मारता और ऊबड़-खाबड़ चट्टानों पर पछाड़ खाकर चूर-चूर हो जाता, फेन और फौआरा बन जाता, तब गरजता हुआ दाहिने किनारे की ओर उछल पड़ता। यह पानी बर्फ और तुषार के कारण काला-सा लगता था। दाहिने किनारे के विशाल-विशाल करार इस तरह लटक रहे थे मानो अब टूटकर गिरने ही वाले हों। उनके नीचे नदीप्रपातों ने काली गहरी खाइयाँ खोद दी थीं। बाँया किनारा भी सीधे खड़ा था, जहाँ से एक विशाल चिकनी हिमधारा नीचे उतरती थी और नदीप्रपातों में अपने को खो देती थी। हमारा एकमात्र रास्ता उसीके ऊपर से

जाता था। वह सँकरा और खतरनाक दीखता था, मगर हमारे जाने के लिये दूसरा रास्ता नहीं था।

भूगर्भशास्त्री हमारे काफ़िले का अगुआ था। उसने त्यौरियाँ चढ़ाईं और लगाम पकड़ी। वह लगाम बारहसिंगों की हर जोड़ी के साथ बँधी थी। अपने दल के साथ वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा। इसके बाद मेरी बारी आयेगी। मैं अपने बारहसिंगों के पास खड़ा था और अलेकज़ान्द्रोव पर दृष्टि रखे हुए था। मेरे जानवर बेचैन और आगे चलने को उतावले थे। मैं अलेकज़ान्द्रोव की किसी तरह से सहायता नहीं कर सकता था क्योंकि मुझे अपने दल पर काबू रखना था और शुरू में दीवार के निकट एक-एक इंच भी बढ़ना ऐसा महत्वपूर्ण था जिस पर सब कुछ निर्भर था। भूगर्भशास्त्री का दल ज्यों-ज्यों आगे बढ़ने लगा, त्यों-त्यों वह धारा बहुत निकट, और भी निकट, गरजते नदी प्रपातों की धूमिल लहरों के पास फिसलने लगी। उसका बारहसिंगा गिरा फिर उछल कर खड़ा हो गया। एक गज़, मृत्यु से सिर्फ़ आधे गज़ का फ़ासला था···अगर वह बाँया बारहसिंगा गिरा तो बस, खेल खतम···नहीं, वह बारहसिंगा नहीं गिरा। एक मिनट के बाद मैंने चीखकर अलेकज़ान्द्रोव को बधाई दी, लेकिन मेरी आवाज़ नदीप्रपातों के कोलाहल में डूब गयी।

मेरे बारहसिंगों ने अपनी नाक मेरी पीठ में रगड़ी और अधीरता से अपनी सींगें टकराईं। अपने दल के बाँयी ओर चलते हुए मैंने बारहसिंगे को अपने कंधे से घाटी की दीवार

की तरफ़ दबाया और इस प्रकार नीचे के पानी से काफ़ी दूर रहने में समर्थ हुआ। पथप्रदर्शक गाविशेव और अलेक्सेई ने मेरा पदांक अनुसरण किया और तुरन्त हम माल की स्लेजों के पास पहुँच गये। शाम से पहले हमें और भी कई नदीप्रपातों को पार करना पड़ा। उस रात उस गर्जन ने ही हमें सुला दिया।

अगले दिन हम मुश्किल से दो मील गये होंगे कि एक नुक्कड़ पर घूमते ही हमें बहुत भयानक हवा का सामना करना पड़ा। उसके मोटे और उड़ते हुए बर्फ के बरछों से बचने के लिये हमें कहीं छिपने की भी जगह नहीं थी। सिर्फ़ आँख खुली छोड़ अपने सारे चेहरे को लपेटकर और झुककर करीब दुहरा होते हुए हम आगे बढ़े। बारहसिंगे भी सिर झुकाकर आगे बढ़े। उनके काले-काले थुथने करीब बर्फ को छू रहे थे। शून्य से नीचे ६० डिग्री पाले में तेज़ हवा मानव की सहनशक्ति से परे होती है। कुछ मिनटों के अन्दर ही मैंने महसूस किया कि मेरे शरीर का सामने का हिस्सा बिलकुल सुन्न हो गया है। मुझे हवा की ओर अपनी पीठ करनी पड़ी और जब तक सामने के हिस्से में फिर कुछ गर्मी न आ गयी, तब तक उसी तरह चलना पड़ा। उस चीख़ती सिसकारती हवा ने दूसरी सारी आवाज़ों को डुबा दिया था...

शाम तक कहीं उस भयानक पहाड़ी रास्ते से हमलोग निकल पाये और एक चौड़े अवनमन में गिरते-पड़ते पहुँच सके। एक समतल गढ़ा समझिये जो चारों ओर से चौरस छतवाली पहाड़ियों से बिलकुल घिरा था। हमारे सामने समतल तुषारक्षेत्र फैला था

जो शाम को चमक रहा था और एक स्याह जंगल से घिरा था। वहाँ की घोर निस्तब्धता उस चीखती घाटी के बिलकुल विपरीत थी। चूँकि हमने ही पहले पहल उसका पता लगाया था इसलिये उस निम्नभूमि का हमने नाम दिया—ऊपरी तोक्को अवनमन। हमने वायुचालित तुषार के ढेर को पार किया और जंगल के किनारे पहुँच गए। हमारी यात्रा के और भी एक ऊबानेवाले घटनाविहीन दिन का यह अन्त था।

पथप्रदर्शक बड़े तड़के ही जाग पड़ा। ऊषाकाल का आश्चर्य-जनक नीला कुहरा बता रहा था कि यह दिन शान्त रहेगा। पहाड़ी दर्रे को पार करने के लिये हमने चढ़ाई शुरू कर दी। यह दर्रा दो चोटियोंवाले तुषारमंडित गोलेत्स के बीच जीन का काम करता था। हम बारी-बारी से राह दिखाते हुए आगे बढ़ने लगे। हमने सिर्फ़ जम्पर पहने, अपनी स्केल से एक लकीर बनाई जिसपर स्लेजें चल सकें। बड़े परिश्रम से आगे बढ़ते हुए आदमी के सिर पर भाप का एक छोटा-सा बादल छाया था और उसकी पीठ पाले से भर गई थी। इसी प्रकार हमलोग बड़ी मेहनत से दर्रे तक पहुँचे। थककर चूर बारहसिंगे तुरन्त लेट गये और बर्फ़ चाटने लगे। धूमपान के बाद हम-लोग स्लेजों पर अपनी-अपनी जगह बैठ गए और पहाड़ की बगल के चौड़े रास्ते से कई मील चौड़े विशाल ढालू मैदान में उतरने लगे जो चारा नदी की सहायिका तरिन्नाख नदी की ओर गया था।

उसी समय मैंने अपनी दाहिनी ओर दो काले धब्बे देखे। इस समय पथप्रदर्शक हमारे काफ़िले का अगुआ था और उसने तेज़ भागते हुए बारहसिंगों की लगाम खींची। मैंने तिरपाल के नीचे से अपनी विन्चेस्टर बन्दूक़ जल्दी से खींच निकाली। वे दोनों भूरे धब्बे एक जोड़ा शानदार कस्तूरीमृग बन गये थे। मैंने छिटकनी खोली क्योंकि ऊँचे-नीचे रास्ते पर मैं बचाव के लिये कभी अपनी राइफल भरकर नहीं रखता था। कस्तूरीमृग चौंक पड़े; उनकी काली-काली तीक्ष्ण आँखें हमारी हर गतिविधि पर निगाह रख रही थीं, उनकी पतली-पतली टाँगों में खिंचाव आ गया जिससे ज़रा सन्देह होते ही वे उन्हें खतरे से दूर पहुँचा दें। घोड़े को मैं काफ़ी ज़ोर से दबाने लगा, फिर भी वह कारतूस के सिरे से आगे किसी तरह नहीं गया। मैंने तेल तो बड़ी सावधानी से पोंछ दिया था, लेकिन फिर भी वह भयानक पाला अपना काम कर चुका था। कारतूस भरने के लिये मैंने ज़ोर से झटका दिया और कस्तूरीमृग बड़ी तेज़ी से जान बचाने के लिये बबूल की झुरमुट की ओर भागे।

जङ्गली ढालू ज़मीन से बर्फ पर फिसलता हमारा काफ़िला फिर आगे चल पड़ा।

"तोखतो!" (रुको!)

सहसा इस चीख से मैं उछल पड़ा। पथप्रदर्शक की स्लेज तब तक नुक्कड़ पर गायब हो चुकी थी। सोचने के लिये बिना रुके ही मैं स्लेज से कूद पड़ा और उसके पिछले हिस्से को ज़ोर

से पकड़ लिया जिससे वह रुक सके। रफ़्तार बहुत तेज़ थी, बारहसिंगे रुके और उछले और मैं ऊपर उड़ गया किन्तु जान बचाने के लिये स्लेज से लटका रहा। दूसरे ही क्षण मेरे दल के आखिरी बारहसिंगे ने मेरे हाथ पर कदम रखा और मैंने अपने को गाविशेव की बगल में पड़ा पाया।

"लोखतो!" फिर वही चीख सुनाई पड़ी।

अलेकज़ान्द्रोव की दो स्लेजें नुक्कड़ पर से नीचे गिरीं और क्षण भर में बारहसिंगे, मनुष्य और स्लेजें अव्यवस्थित रूप से नीचे लुढ़कने लगीं।

कोई असाधारण घटना नहीं हुई थी, बात सिर्फ़ यह थी कि उतराई यकायक इतनी सीधी हो गई थी कि हमारे बारहसिंगे उस पर चल नहीं सकते थे।

हम फिसलते हुए उसके बिलकुल नीचे पहुँचे। मेरी पीठ बर्फ़ पर इतने ज़ोर से गिरी कि मेरी साँस बन्द होने लगी। अलेक्सेई का दल बहुत पीछे था। अब वह उतराई के बिलकुल ऊपर दिखाई पड़ा। जब उसने नीचे लोगों, बारहसिंगों और स्लेजों को उस तरह अस्तव्यस्त पड़ा देखा तो उसका दिमाग़ खराब हो गया। कूद पड़ने के बदले उसने स्लेज को पकड़ लिया। उसके बारहसिंगे उछलकर जी-जान से कूद पड़े। भूगर्भशास्त्री उतराई के बिलकुल नीचे था, किन्तु वे स्लेज़ें उसके ऊपर से उड़ चलीं, बर्फ़ पर गिरीं और टुकड़े टुकड़े हो गईं। अलेक्सेई सामान पर बैठा ही रहा। भय और आश्चर्य से वह आँखें मिलमिला

रहा था। उसके बारहसिंगे स्लेजों से खुल गये, और भी कई छलाँगें मारीं और अन्त में रुक गये।

यह जानने में हमें देर नहीं लगी कि हमारे किसी बारहसिंगे को चोट नहीं आई और कोई सामान भी नुकसान नहीं हुआ। अपने इस छोटे-से साहसिक कार्य पर खूब हँस लेने के बाद हमने तय किया कि रात भर के लिये हम उसी जगह ठहरेंगे जहाँ सबसे पहले बारहसिंगों को चारा मिल सके। शीघ्र ही हम एक लम्बे-चौड़े ढलाव के ऊपर पहुँचे जो तग्निआख की ओर गया था और हमने एक छितरी झुरमुट में डेरा डाला। कुछ समय पहले वह जंगल में आग लगने से जल गई थी, किन्तु भोज और बबूल के नये-नये पेड़ तब तक वहाँ फिर उग चुके थे। बबूल के पुराने पेड़ों में अब न तो छाल थी, न डालें, इसलिये वह बढ़िया ईंधन था। हमने अपने को गर्म करने के लिये और स्लेजों की मरम्मत तथा उन्हें बाँधने के लिये बाँस को टेढ़ा करने के हेतु बहुत बड़ी धुनी जलाई। इस काम में जितनी लकड़ी लगी, उसके अलावा भी हमने काफ़ी लकड़ी जमा कर ली।

अलेकज़ान्द्रोव और अलेक्सेई सोनेवाली मिट्टी को धोने के लिये नज़दीक के झरने पर गये, जब कि गाबिशेव और मैं स्लेजों की मरम्मत करने का सामान तैयार करने लगे।

अँधेरा हो गया। हमने भोजन किया और चाय भी पी ली, किन्तु तब भी हमारे साथी नहीं लौटे। मैंने जाकर उनसे मिलना तय

किया। दिन का पालेदार कुहरा गायब हो चुका था। उस अर्ध-स्वच्छ हवा में चाँद पर्वत से काफ़ी ऊपर लटका हुआ था। जल्दी ही मैंने देखा कि दो काली मूर्तियाँ तेज़ी से मेरी ओर बढ़ी आ रही हैं।

"लगता है कि यहाँ सोना है," भूगर्भशास्त्री ने कहा। "तुम्हारा क्या खयाल है, अलेक्सेई?"

"तुम्हारे जैसा ही," दूसरे ने कहा।

हमलोग खिल उठे और कुछ देर तक चुप ही रहे। उस तुषारमंडित, चाँदनी से जगमग रात ने हमें मोह लिया था। लगता था कि सारी दुनिया एक स्वच्छ दूधिया चादर से ढक दी गई है।

"क्या वही आपका वह भयावना गोलेत्स तो नहीं है, ग्योर्गी पेत्रोविच?" तारिन्नाख उपत्यका की ओर इशारा करते हुए अलेकज़ान्द्रोव ने पूछा। उस उपत्यका के बाँई ओर रजत-नील बन्धुर शृङ्गों की एक पंक्ति थी जिसकी रूपरेखा साफ़ दीखती थी, यद्यपि उनके पादप्रदेश अन्धेरे में छिपे हुए थे। उस शीतल चाँदनी ने काल्पनिक पर्वत पृष्ठ अंकित किये थे और दूर दिगन्त को अधिक गंभीर कर दिया था। लगता था कि चाँदी के बड़े-बड़े आरे आकाश में लटके हुए हैं जिन्हें नीचे से सहारा नहीं है। दूसरों से कुछ अलग-सा वह गोलेत्स खड़ा था जिसके तीन शृंग बुर्जों जैसे थे और जिसे मैं पहले देख चुका था। लगता था कि वे शृंग चाँद को स्पर्श कर रहे हैं जो चाँद दक्षिण की

तरफ़ पर्वत की चट्टानदार पीठ और बर्फ के ढलाव को प्रकाशित कर रहा था।

"ग्योर्गी पेत्रोविच, क्या उस गोलेत्स के लिए एक अच्छा सा नाम चाहते हैं," भूगर्भशास्त्री ने फिर पूछा। "चन्द्र पर्वत! उसके दाँत तो देखिये—लगता है कि वे बस तुरन्त चाँद को काट खायेंगे।"

"विचार बुरा नहीं," अपने कुतुबनुमा से फिर दिशा स्थिर करता हुआ मैं सहमत हो गया। अब चूँकि मैं दूरी का हिसाब लगा चुका था, इसलिये मैं उसे नक्शे पर ठीक जगह बैठा सकता था।

अगले दिन दोपहर के पहले ही हमने अपनी स्लेजों की मरम्मत पूरी कर ली और अपने आगे के रास्ते के विषय में बातें करते हुए आराम करने के लिये तम्बू में लेट गए। हमने हिसाब लगाया कि तीन दिन में हम 'चारा' अवनमन पहुँच जायेंगे और फिर दो दिन में बस्ती में। पाँचवें दिन हमलोग उस व्यापारिक केन्द्र में कपड़े उतार कर सोयेंगे और जितना चाहेंगे, उतना खा सकेंगे।

उस बस्ती में थोड़ा आराम करने के हमारे स्वप्न में बाहर के शोर ने खलल डाला—दौड़ते हुए बारहसिंगों के दल की हिनहिनाहट और धमक, स्लेज की चरमराहट और किसी आदमी की आवाज़। तैगा के उस सुनसान तुषारपूर्ण वियाबान में किसी आदमी का दिखाई पड़ना एक अनहोनी-सी बात थी और मेरे

सभी साथी जल्दी से टोपी पहनते हुए तम्बू से बाहर निकल पड़े। मैं जहाँ का तहाँ रहा क्योंकि तेगा में सरदार के लिये यही रिवाज़ था।

शीघ्र ही एक अजनबी झुककर तम्बू के अन्दर दाखिल हुआ जिसके पीछे-पीछे मेरे सब साथी आये। वह चूल्हे के पास बैठ गया, अपने पाँव को मोड़ कर नीचे ले लिया, घमण्ड के साथ सिर उठाया और छाती ठोंकी।

"ओ-खो! उलाखान तोयोन!" (बड़ा सरदार) उसने ऊँची आवाज़ में कहा।

मैंने उस पर एक शान्त स्थिर दृष्टि डाली जिसने उसे विच-लित कर दिया। उसने आँखें झुका लीं और अपना पाइप ढूँढ़ने लगा। वह याकूत था—लम्बा और बूढ़ा, बेतरह दुबला, बाज की जैसी बड़ी-बड़ी गोल-गोल आँखें, टेढ़ी नाक, पिचके गाल, कुल्हाड़ी जैसा मुखड़ा जिसमें नुकीली दाढ़ी। मुझे तुरन्त क्विक्सॉट याद पड़ गया।

मैंने बूढ़े को अपना तम्बाकू का बटुआ पेश किया और अले-क्सेई को इशारा किया कि और भी चाय का पानी तथा मांस चढ़ा दे। उलाखान तोयन राजसी स्वागत का अधिकारी था।

शिष्टाचार के नियम के अनुसार कुछ देर चुप रहने के बाद मैंने बाकायदे कुशल-मंगल पूछा, "कापसे, तोगोर" (मित्र, अब अपने बारे में बताइये!)

"मी ओखक् एन कापसे" (मैं क्या बताऊँ, आप बताइये); बूढ़े ने अस्पष्ट कहा।

इसी प्रकार शिष्टाचार के कई वाक्य हमलोगों ने याकूत भाषा में एक दूसरे से कहे। तब चेतावनी दिये बिना ही उस अजनबी ने रूसी बोलना शुरू कर दिया। सम्भवतः उसने समझा कि उसकी रूसी मेरी याकूत से अच्छी है। हमारी यात्रा में उसने काफ़ी दिलचस्पी दिखाई और उसके सब से कठिन मंजिलों का ज़िक्र आने पर समर्थन में सिर हिलाया। उस देश की विचित्रता के मेरे ज्ञान में ग़लती पकड़ने की उसने कई बार कोशिश की किन्तु काफ़ी दिनों से वहाँ मेरा घूमना ऐसा रहा था कि मेरे ज्ञान को कच्चा साबित करना असम्भव था। बूढ़े को एक छोटा गिलास भर कर शराब दी गई, उसने खूब डटकर भोजन किया। तब वह कुछ पसीजा और उसके चेहरे पर से अहंकार का भाव दूर हो गया। जैसी चीज़ मैंने कभी वहाँ नहीं देखी होगी, ऐसी कोई चीज़ मुझे दिखलाने का वायदा करके बूढ़ा बड़ी तेज़ी से अपनी दोनों स्लेजों के पास चला गया।

"इस बूढ़े को क्या तुम जानते हो?" मैंने गाविशेव से पूछा।

"हाँ," पथप्रदर्शक ने कहा। "इसका नाम किलच्चेगासोव है। अच्छा शिकारी है। हर जगह जानता है।"

बूढ़ा याकूत लौट आया। मैंने फिर उससे कोई सवाल नहीं किया।

"तोक्को पर ये चीज़ देखा?" मैमथ के दाँत का एक भारी टुकड़ा सामने बढ़ाता हुआ धूर्ततापूर्ण मुस्कान के साथ उसने पूछा।

मैंने बूढ़े को बता दिया कि वह चीज़ क्या है और अपने हाथ से अर्धवृत्त बनाने का संकेत किया और दिखलाया कि पूरा दाँत कैसा दीखता है। जब मैंने अनुमान से उसे बता दिया कि किसी सूखी नदी के किनारे उसे वह चीज़ मिली होगी तो वह बिलकुल दुखी हो गया।

"तुम बहुत जानता, सरदार!" उसने सिर हिलाते हुए कहा।

इस प्रशंसा से प्रसन्न होकर मैंने लेना नदी के मुहाने पर के टापू के बारे में बूढ़े को बताया जहाँ तिमि की हड्डियों और फेंके हुए पेड़ के कुन्दों के साथ मैमथ के दाँतों का ज़मीन पर ढेर लगा है।

बूढ़ा बहुत ध्यान से मेरी बातें सुनता रहा। तब उसने एक बगल थूका और जोश के साथ मेरी ओर बढ़ा। "तुम जानकार आदमी है, सरदार! लेकिन हमारा शिकारी लोग जो जानता है, तुम नहीं जानता। हम ऐसा गोलेत्स जानता है जहाँ मैमथ के इन सींगों का जंगल जैसा है। सिर्फ़, वो सींग टेढ़ा नहीं है, वो सीधा है, थोड़ा टेढ़ा है।"

"यह तो बड़ी दिलचस्प बात है," मैंने आश्चर्य के साथ कहा।

मेरे तम्बाकू के बटुए की ओर किलचेगासोव ने एक हाथ बढ़ाया। उसने अपना पाइप सुलगाया और एकटक ऊपर देखने लगा मानो कुछ याद करने की कोशिश करता हो।

"मेरा बाप का भाई वहाँ सोग्दिज़ोई (जंगली बारहसिंगा) का शिकार करने गया," किलचेगासोव ने पूर्व की ओर संकेत

किया—"वहाँ सींग देखा—हमको पीछे बताता। तुम सुनता है, हाँ?" उसने पथप्रदर्शक की ओर मुख़ातिब होकर पूछा।

"सुनता है। सोचता है—वो झूठ बोला," गाविशव ने प्रभावित न होकर जवाब दिया।

"झूठ नहीं! वो सींग का टुकड़ा लाया—नोक लाया। हम खुद देखा।"

"पर वह गोलेत्स है कहाँ?" मैंने बूढ़े से पूछा।

"गोलेत्स पास होगा तो सरदार जायेगा?"

"बेशक मैं जाऊँगा।"

एक मिनट तक चुप रहने के बाद बूढ़े के चेहरे पर से सन्देह का भाव हट गया।

मैंने अपना बड़ा नक्शा खोला।

"यहाँ, जहाँ से चिरोदा निकलता है और जहाँ से तोक्को निकलता है, उसके बीच में कई बड़ा गोलेत्स है—बहुत बड़ा।"

"ठीक है," मैंने पुष्टि की, लेकिन बूढ़े ने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया।

"जहाँ से चिरोदा और चिरोदाखान निकलता है, वहाँ सबसे बड़ा गोलेत्स है—पेड़ के बड़े ठूँठ जैसा"—अलेकज़ान्द्रोव और मेरी आँखें चार हुईं: पिछले दिन जिस गोलेत्स का हमने चन्द्र पर्वत नामकरण दिया था, यह उसका सुन्दर वर्णन था—"वहाँ यह गोलेत्स अकेला खड़ा है—तोक्को जहाँ से निकलता है, उसके ज्यादा पास। गोलेत्स की दाहिनी तरफ़ बहुत ऊँचा है, बरा-

बर, साफ़ जगह, मेज की तरह! यहाँ सींग पड़ा है। वहाँ एक बड़ा छेद भी है जिसमें सींग है।"

"वह क्या यहाँ से दूर है?" मैंने पूछा। मेरा कुतूहल जाग्रत हो चुका था।

"दूर नहीं," बूढ़े याकूत ने झट कहा। "तुम तरिन्नाख पकड़ कर जाओ। तरिन्नाख निकल कर दाहिने जाता है, इचोनचाकित बाँये को जाता है। तुम इचोनचाकित पकड़कर बीच के दर्रे तक जाओ। नीचे बराबर जगह और छोटा झरना है। झरना तालुमाकित तक जाता है। तोक्को जहाँ से निकलता है, वहाँ से छोटा नदी किवेती बाँयें जाता है। वो छुरी की तरह पहाड़ को काटकर निकलता है। तब बराबर जगह मिलता है..." एक मिनट सोचने के बाद किलचेगासोव ने आगे कहा, "साठ या पैंसठ मील है।"

बूढ़ा चुप हो गया। और कोई कुछ न बोला। केवल चूल्हे में जलते लकड़ी के कुन्दों के चिटखने की दबी-सी आवाज़ से निस्तब्धता भंग हो रही थी। जब कि हमारे खाने-पीने के सामान करीब समाप्त हो चुके हैं, तब दुर्गम स्थानों का चक्कर लगाना क्या बुद्धिमानी का काम होगा? अलेक्ज़ान्द्रोव मुझ पर तीक्ष्ण दृष्टि रखे हुए था किन्तु किसी प्रकार से पता नहीं चलता था कि उसके क्या विचार हैं। गाबिशेव ने बूढ़े याकूत से कुछ कहा और तब वे दोनों बड़ी धीमी आवाज़ और याकूत भाषा में बातें करने लगे। मुझे केवल कुछ परिचित शब्द सुनाई पड़े

"बड़े बड़े नदीप्रपात···अच्छा चारा···स्लेज नहीं जा सकता··· भूतों का बहुत उपद्रव!"

"गाब्रिशव, भूतों का बहुत उपद्रव कहाँ है?" मैं उनकी बात-चीत के बीच में बोल उठा। मैं जानता था कि प्रकृति के जिन करिश्मों की वे व्याख्या नहीं कर सकते, उन सब को याकूत और तुंगुस लोग "भूतों का उपद्रव" कहते हैं।

"मैं वो जगह जानता है। वहाँ भूतों का बहुत उतपात है," पथप्रदर्शक ने पुष्टि की। "और बड़ा-बड़ा नदी है जहाँ मौत घूमता है।"

"बड़ी नदी क्या? वहाँ तो सारी नदियाँ छोटी छोटी हैं।"

"वो नदी नहीं हैं, रास्ते पर बड़ी-बड़ी गिरावट है।"

हमने समझा कि इसका अर्थ है चट्टानों की चढ़ाई—यह पर्वत का एक प्रकार का सीधे खड़ा थाक है जो कभी कभी तुषारपूर्ण उपत्यकाओं में आरे-तिरछे चलता है। मैं तब भी किसी निश्चय पर नहीं पहुँच सका था। आखिर साईबेरिया के हिसाब से ६० मील का एक तरफ़ का रास्ता कोई बड़ा फ़ासला नहीं था। परेशानी यह थी कि बस्ती में पहुँचने के लिये हमारे पास जो पाँच दिन थे, अब उससे ज़्यादा दिन लगेंगे। किन्तु, इस दूर देश में फिर कभी आने की संभावना बहुत कम थी।

मैंने किलचेगासोव की तरफ़ देखा:

"आप क्या हमारे साथ उस जगह जायेंगे?"

अपने साथियों की उत्तेजना से मुझे मालूम हो गया कि वे

मेरा निर्णय समझ गये हैं। बूढ़ा अपनी पाइप की कश लेता हुआ जवाब देने के बारे में सोच रहा था।

मैं नहीं चाहता था कि वह जल्दी करे, इसलिये मैंने अलेक्ज़ान्द्रोव से पूछा, "अनातोली अलेक्ज़ान्द्रोविच, तुम्हारा क्या खयाल है?"

"हाँ,हाँ, ज़रूर चलकर देखना चाहिये।" उसने उत्साहजनक उत्तर दिया।

"और अलेक्सेई, तुम कहो। क्या हमारे पास दस दिन के लिये काफ़ी भोजन है?"

"बहुत मुश्किल से। हमारे पास एक बोरी बिस्कुट है, चाय है और करीब पाँच डिब्बे बीन है!"

वह बूढ़ा विचारों से मानों जागा और हमें बताया कि वह हमारे साथ जाने को तैयार है। अब गाविशेव की बारी थी।

"क्यों जी वासिली, तुम तो जाओगे हमारे साथ?" मैंने पूछा। "अगर तुम चलोगे तो हम सामान और सामान की स्लेजें यहीं छोड़कर बारहसिंगों को साथ ले चलेंगे।"

सर झुकाये, आँखें ज़मीन पर गड़ाये पथप्रदर्शक निश्चिन्तता के साथ अपने पाइप का कश लेता रह। उसके निर्णय पर बहुत कुछ निर्भर था क्योंकि बारहसिंगे उसके थे।

"सब के साथ हम भी जाता है, सरदार!" अन्त में उसने गम्भीरता के साथ कहा और शान्त भाव से जोड़ दिया, "हम जानता, हम सब मरेगा..."

मैंने उस साहसी याकूत का हाथ पकड़ लिया। हमारे इस

काम को वह खतरनाक समझता था किन्तु इस खतरे में भी वह हमारा साथ देने को बिलकुल तैयार था।

शाम तक हम उस यात्रा के बारे में बातें करते रहे। तम्बू के अन्दर हम चारों में उस रात पाँचवाँ आदमी भी शामिल हो गया था। अगले दिन सुबह हम जल्दी से तरिन्नाख उपत्यका में उतर गये, वहाँ अपना अतिरिक्त तम्बू तान दिया, और अब तक हमने जो कुछ संग्रह किया था, उससे उसे भर दिया। हमें सामान और अतिरिक्त स्लेजों की ज़रूरत नहीं थी। तब हमने चारा की ओर पीठ फेरी और ऊपर तरिन्नाख के भीषण गोलेत्स की ओर चल पड़े।

उस चौड़ी नदी उपत्यका पर सफ़ेद भाप छाया था। बर्फ़ को फोड़कर निकले आधा जमे पानी में से यह भाप उठ रहा था। इसे याकूत लोग तारिन कहते हैं। तुषार के नीचे पानी नहीं के बराबर था, फिर भी कभी-कभी उस स्थिर मटमैले पानी पर स्लेजें नाव की भाँति तैरने लगती थीं, यहाँ तक कि उसमें डूब तक जाती थीं और गहरे गढ़ों तक पहुँचती थीं। ऐसी जगहें भी थीं जहाँ हम चीखकर बारहसिंगों को उत्साहित करते थे और पतली बर्फ़ के नुक्कड़ों पर भयानक तेज़ चाल से आगे बढ़ते थे। उस दिन हमने अपने रास्ते का एक बड़ा फासला तय कर डाला और शाम को वहाँ पहुँचे जहाँ उस उपत्यका के छोर पर एक सीधी दीवार खड़ी थी। यह एक मशहूर चट्टान की चढ़ाई थी, करीब एक चौथाई मील ऊँची। हमारे दाहिनी ओर नदी ने

दीवार में एक पतली दरार बना दी थी जिसके ऊपर बर्फ का एक विशाल, टेढ़ा खम्भा लटक रहा था। जहाँ वह टेढ़ा था, वहाँ से पानी गिर रहा था और उस पर महीन भाप छाया था। हमारे बाँयो ओर एक नंगी पीली चट्टान थी जो बिलकुल दीवार की भाँति खड़ी थी। उसका एक अंश टूटकर गिर चुका था। वही हमें कुछ कम खतरनाक जान पड़ी।

सवेरे सब से ताकतवर तीन जोड़े नर बारहसिंगे हल्की की हुई स्लेजें खींचने लगे। हर जोड़े के साथ दो आदमी थे—एक बारहसिंगों को लगाम पकड़े लिये जा रहा था और दूसरा पीछे से स्लेज को धकेल और उठा रहा था। सीधी चढ़ाई के डर के कारण फालतू बारहसिंगे स्लेजों के पीछे-पीछे चल रहे थे। बड़े कष्ट के साथ हमलोग उस दीवार पर धीरे-धीरे चढ़ रहे थे। मैं समझता हूँ कि तैगा का अत्यन्त अनुभवी पर्यटक भी इसके सामने हिम्मत हार बैठता। बिलकुल ऊपर पहुँचकर अलेक्ज़ान्द्रोव फिसला और अपने बारहसिंगे पर गिरा। एक बड़े काले नर बारहसिंगे ने उसे अपने सींगों में फँसा लिया और डर के मारे पागल होकर दो छलाँगों में ही उसे चोटी पर पहुँचा कर सुरक्षित रूप में उतार दिया। बाकी लोग, मनुष्य और बारहसिंगे सब एक साथ ही उसकी चौड़ी, समतल सतह पर आ गिरे। हम सब बदहवास हो चुके थे।

"क्या चढ़ाई है!" अलेक्सेई बड़बड़ाया। "नीचे देखने से कलेजा काँप उठता है। और अगर कोई गिर जाये तो…?"

"स्लेज का धज्जियाँ उड़ेगा। आदमी का गुर्दा निकलेगा," हमारे पथप्रदर्शक ने बात-बात में कहा।

अब हमें नदी पार करना और उपत्यका के दाहिनी ओर आना था। यह काम आसान लगा, किन्तु अनजाने ही हम जिस खतरे में आ फँसे थे, उसने दिखला दिया कि हमें हर कदम पर सावधानी बरतने की ज़रूरत थी। एक ताज़ा 'तारिन' ऊपर बराबर चिकनी ढिबरी बन गई जिसके ऊपर तुषार की पतली चादर थी। ज्यों ही हम वहाँ पहुँचे कि बारहसिंगे फिसलने लगे। हम स्लेजों से कूद पड़े और खुद हमलोग फिसलने और गिरने लगे; बारहसिंगों की मदद करना तो दूर रहा। यकायक मुझे पता चला कि हमलोग तेज़ी के साथ एक पर्वत-पृष्ठ के छोर की ओर फिसलते जा रहे हैं जहाँ से जमा हुआ जलप्रपात एक हज़ार फुट नीचे उपत्यका में गिर रहा था।

पथप्रदर्शक का तीक्ष्ण स्वर गूँज उठा, "रुको, मौत पास ही है।"

मेरे मित्र जैसी विपत्ति में पड़ गए थे, उससे घबराकर मैं आगे झपटा, जो स्लेज छोर के एकदम निकट थी, उसका पिछला हिस्सा ज़ोर से पकड़ा। मैं फिर फिसला और गिरा। मेरे शरीर के ढाई मन वजन ने ताज़ा बर्फ में एक बड़ा-सा गढ़ा बना दिया जिसने मुझे फिसलने से कम से कम बचा लिया। अपनी रूईदार पतलून को भिगोते हुए पानी की परवाह न करके मैं तब तक उस अभिशप्त स्लेज को पकड़े रहा जब तक कि मेरे साथियों

ने बारहसिंगों को खींच कर छोर से अलग नहीं कर दिया। अन्त में उपत्यका के दाहिनी ओर हम ठोस तुषार पर पहुँचे और सबसे ज्यादा तेज़ चाल से उस खतरनाक जगह से भागे।

इचोनचाकित के किनारे हमने रात बिताई। सबेरे जब हम जागे तो देखा कि सारे आकाश पर हल्का पतला बादल छाया है। सूरज तो दिखाई नहीं पड़ता था, फिर भी उसकी रोशनी थोड़ी थी जो बादलों के अन्दर छितराई हुई थी और तुषार पर प्रतिबिम्बित हो रही थी। छायाहीन धरती पर पड़ती यह रोशनी दिग्भ्रम पैदा कर रही थी और आसपास की हर चीज़ की रूपरेखा को इस प्रकार बदल दिया था कि भ्रम होता था। ऐसी हालत में सफर करना बहुत मुश्किल था। किलचेगासोव और गाबिशव बुरी तरह त्योरियाँ चढ़ाये रहे, बारबार थूकते और गालियाँ देते रहे क्योंकि वे सोचते थे कि यह सब शैतान की करामात है।

अन्त में वह उतराई समाप्त हुई। अब हमने अपने को जिस अवनमन में पाया, वह बहुत बड़ा नहीं था। उसके चारों ओर गोलेत्स की दीवारें थीं, जिनकी चोटियाँ आसमान को छिपाये हुए दूधिया लबादे में गायब हो गयी थीं। हमारे ठीक सामने पर्वतमाला करीब सीधी खड़ी दीवार थी जो हमारे वहाँ जाने का रास्ता रोककर खड़ी थी। इसीके बारे में किलचेगासोव ने बताया था।

जब हमने अपना तम्बू तान दिया और इंधन की लकड़ी जमा कर ली, तब हमारे दोनों याकूत एक रहस्यमय कार्य में जुट गये।

उन्होंने लम्बे-लम्बे डंडे काट लिये, उनमें चिथड़ा और लकड़ी का टुकड़ा बाँध दिया और वे डंडे डेरे के चारों ओर गाड़ दिये। उन्हें सीधे खड़ा रखने के लिये जमी हुई धरती पर पत्थर के टुकड़े और बर्फ उसके चारों ओर रख दी। उन्होंने मुझे बताया कि यह शैतान को दूर रखने के लिये है।

और दरअसल, शैतान जल्दी ही हमारे पास आ धमका। रात शुरू होने के ठीक पहले एक अद्भुत चीख से वातावरण गूँज उठा, साथ ही एक पैशाचिक ठहाका सुनाई पड़ा, फिर भयंकर चीत्कार। वह कर्कश बेसुरी आवाज़ वहाँ की असाधारण शक्तिशाली प्रतिध्वनि से और भी बढ़कर ऐसी भयानक सुनाई पड़ी कि याकूतों से ज़्यादा शायद मैं ही डर गया था यद्यपि वे बराबर विश्वास करते आये थे कि शैतान ज़रूर आयेगा।

अलेक्ज़ान्द्रोव ने अपनी राइफल उठाई और दौड़कर तम्बू से बाहर निकला। किन्तु उस बुझती धोखेबाज़ रोशनी में वह कुछ भी नहीं देख सका।

"वो गया, वो देखो!" सहसा अलेक्सेई चीख उठा। वह भी तम्बू से बाहर दौड़ आया था। नीचे झुके टेढ़े बबूल की डालों के ऊपर उड़ते कई काले धब्बों की ओर उसने इशारा किया जो कुछ-कुछ लपकती नील-धूसर सन्ध्या में करीब अदृश्य से थे। भूगर्भशास्त्री ने अपनी राइफल ऊपर फेंकी—उसकी नली से आग की एक लम्बी लपट फूट निकली, और तब ऐसे भीषण विस्फोट से आसमान गूँज उठा कि हम सब लोग अवाक् हो

गये। उसकी प्रतिध्वनि और भी ज़ोरदार होती गई, और तब क्रमशः समाप्त होती हुई वह आहिस्ते-आहिस्ते दूर पहाड़ों में गायब हो गई। वह मानों मानव के धृष्टतापूर्ण आक्रमण की घोषणा कर रही हो।

हमलोग जहाँ खड़े थे, उसके पास ही कहीं कुछ गिरा और बड़ी बुरी तरह धरती पर छटपटाने लगा। अलेक्ज़ान्द्रोव उसकी तरफ़ दौड़ा और एक बहुत बड़ा उल्लू ले आया। वह ईगल उल्लू से बहुत कुछ मिलता-जुलता था, लेकिन उसके पर दूध-से सफ़ेद थे और पंखों पर, पीठ पर तथा सिर के ऊपर धब्बे और धारियाँ थीं। अलेक्सेई बड़ी शान से उल्लू को हमारे पथप्रदर्शकों के पास ले चला मानों कह रहा हो, "यह देख लो अपने शैतान को!" वे दोनों तम्बू से बाहर नहीं निकले थे। किन्तु लगा कि इससे वे दोनों विशेष प्रभावित नहीं हुए। उन्होंने सिर्फ़ इतना ही कहा कि हमें अभी "भूतों का उतपात" काफ़ी देखना पड़ेगा।

हम तम्बू के अन्दर गये और जहाँ मैमथ के दाँत थे। अगले दिन उस गोलेत्स पर चढ़ने के सम्बन्ध में बातें करने लगे। किलचगासोव के आश्वासनों के अनुसार किवेता नदी की उपत्यका —जो ग्रीष्म ऋतु में अगम्य रहती है—हमें एक "साफ़ जगह" पहुँचा देगी और तब उस समतल मालभूमि में पहुँचायेगी जहाँ दाँत थे। गार्बिशव ने यकायक घोषणा की कि वह अब आगे नहीं जा सकेगा। किलचैगासोव को भी वहीं छोड़ जाना पड़ेगा, क्योंकि उसके पाँव में घाव थे। तब हमने अलेक्सेई को भी याकूतों

के पास ही छोड़ जाने का निर्णय किया। इस तरह नतीजा यह निकला कि सिर्फ़ भूगर्भशास्त्री और मुझे ही आगे बढ़ना था।

तब तक हमलोग ऊँघने लगे थे कि सहसा एक भयानक गर्जन सुनाई पड़ा। किसी भारी वस्तु के गिरने और बेतरह छटपटाने की एक नारकीय ध्वनि। ध्वनि चक्र में परिणत हो गयी जो काफ़ी देर तक ज़ारी रही। मैंने भूगर्भशास्त्री की तरफ़ देखा और सोचा कि यह हिमानीसम्पात है, किन्तु उसने शान्तभाव से मुझे आश्वासन दिया; "ग्योर्गी पेत्रोविच, यह सिर्फ़ कोई चट्टान गिरी है। यहाँ के पर्वतपृष्ठ असाधारणरूप से सीध खड़े हैं क्योंकि हाल ही में धरती की पपड़ी के ऊपर उठने से ये बने हैं। इसीलिये चट्टानें अक्सर गिरती हैं। उन्हीं का गिरना और उसकी प्रतिध्वनि ही असल में भूतों का उपद्रव है।"

हँसते हुए हम फिर बिस्तर की अपनी बोरियों में घुस गये।

पिछले दो दिनों से पाला कुछ कम हो गया था मगर रात को वह फिर बढ़ गया। बहुत ठण्डी और तेज़ हवा चलने लगी। हवा बिस्तर की मेरी बोरी में घुस गयी और उधर मेरे शरीर का जितना अंश था, वह ठिठुरने लगा। ठण्ड से मेरी नींद तो टूट गई, फिर भी मैं काफ़ी देर तक पड़ा रहा क्योंकि एक तो मैं ऊँघ रहा था, दूसरे बिस्तर से निकलकर आग जलाने की इच्छा बिलकुल ही नहीं हो रही थी। अन्त में मैं उछलकर बिस्तर से निकला और सर से पाँव तक थरथर काँपते हुए चूल्हे की लकड़ी में दियासलाई जलाकर आग लगाई। मैं वहीं

बैठ गया और तम्बू के फिर गर्म होने की प्रतीक्षा करने लगा। चूल्हे की लकड़ी चिटकने और आग की लपट ऊपर उठने लगी।

वहीं बैठकर मैं अगले दिन के अभियान के सम्बन्ध में विचार कर रहा था कि सहसा बाहर भारी कदमों की, किसी विशाल जानवर के पैरों की आहट सुनाई पड़ी। वह तम्बू के नज़दीक आता गया और तब उसका प्रदक्षिण किया। अलेक्सेई हल्का सोनेवाला था और जाग गया। उसने अलेक्ज़ान्द्रोव को हिलाया। एक बार फिर हमने वह विचित्र पदध्वनि तम्बू के पास ही सुनी। मैंने अपनी रायफल उठाई जिसे मैंने अपने नियम के विपरीत तम्बू में ही गर्म करने के लिये रखा था और अगर मौका मिले तो देखना चाहता था कि शैतान पर ·३५१ शीशे की कारतूस का क्या असर होता है। अलेक्ज़ान्द्रोव और मैं जल्दी से दौड़कर तम्बू के बाहर निकले, अपने पथप्रदर्शकों के ऊपर से उछल गये। उन्होंने अपने सिर ढक लिये थे और उठने के लिये क़तई तैयार नहीं थे।

आकाश मेघमुक्त हो चुका था। क्षीण होता हुआ चाँद पहाड़ों की चोटियों पर विचित्र बाँकपन के साथ मौजूद था। अपने तईं हमने काफ़ी गौर से देखा, फिर भी तुषार पर हमें पैरों की कोई छाप नहीं दिखी। पाला हमारी हड्डियों तक पहुँच रहा था और वह शीघ्र ही हमें भगाकर तम्बू के अन्दर ले गया।

ज्यों ही मैं अन्दर दाखिल हुआ कि गाविशेव उठ बैठा और चिन्तित स्वर में पूछा, "क्यों, क्या देखता ?"

"कुछ भी नहीं।"

"तो···कल भी पैरों का छाप नहीं मिलेगा।"

"क्या था वह? तुम्हारा क्या ख़याल है?"

"इस जगह का मालिक आता!"

"कौन-सा मालिक?"

"तुम काहे नहीं समझता," याकूत सहसा बिगड़ उठा। "मैं कहता—मालिक!"

मैंने कन्धे फड़काये और उससे सवाल करना बन्द कर दिया, यद्यपि मैं किसी प्रकार नहीं समझ सका कि तम्बू के चारों ओर कौन-सा 'मालिक' चक्कर लगा रहा था।

जब अलेक्ज़ान्द्रोव और मैं मोमबत्ती की रोशनी में यात्रा की तैयारी करने लगे, तब तक उस अवनमन में ऊषा का प्रकाश अस्पष्ट ही था। हमने तय कर लिया था कि रायफल साथ नहीं ले जायेंगे—फासला कम नहीं था, इसलिये बोझ जितना कम रहे, उतना ही अच्छा क्योंकि हमलोग अपने साथ कुछ नमूना भी लाना चाहते थे। रायफलों और कुल्हाड़ों के बदले रिवाल्वरों और शिकार के छुरों से हमारा काम चल जायेगा। फिर भी ऐनरोयड, (अनार्द्र वायुभार-मापक), कैमरा, टौपोग्राफिक प्लेन-टेबल और खाने-पीने के सामान वगैरह से हमारा बोझ काफ़ी भारी हो गया।

यह सारी तैयारी करके जलपान समाप्त करने के बाद सूर्योदय हो गया। वे दोनों याकूत तम्बू के चारों ओर घूम आये

और घोषणा की कि उन्हें सिर्फ़ बारहसिंगों के पैरों की छाप मिली है।

हम चल पड़े और उस अवनमन को जल्दी से पार कर लिया। हमारे बर्फ पर चलने के जूतों के नीचे नीला तुषार ज़ोर की आवाज़ के साथ चकनाचूर होने लगा।

"फिर करीब शून्य के नीचे साठ!" अपने मफलर को नाक तक खींचते हुए अलेक्ज़ान्द्रोव बड़बड़ाया।

आधे घन्टे में ही हमने किवेता उपत्यका में प्रवेश किया। वहाँ तब भी अँधेरा था और प्रातःकाल के राख जैसे भूरे प्रकाश में हमारे कई मील आगे बढ़ जाने के बाद सूरज उस दर्रे के तल तक पहुँच सका।

यह दर्रा विचित्र दिखाई पड़ता था। अपने अनजाने ही हम लोग फुसफुसाकर बोलने लगे थे मानों हमें डर हो कि कोई स्थानीय 'मालिक' कहीं नाराज़ न हो जाय। वह दर्रा १५ फुट से ज़्यादा चौड़ा नहीं था, उसकी कालिख जैसी काली दीवारें बिलकुल सीधे ऊपर चली गई थीं और कहीं-कहीं उसकी चोटियाँ एक दूसरी को करीब छू रहीं थीं जिनमें कोलतार की तरह काली मेहरावें और सुरंगें बनी हुई थीं। हमारे सिर से करीब १५ फुट ऊपर विशाल-विशाल पेड़ों के टूटे हुए कुन्दे चट्टानों के बीच में मज़बूती से फँसे हुए थे जिससे पता चलता था कि वसन्त काल में बाढ़ का पानी वहाँ तक पहुँचता है। पानी ने दीवारों को खोद कर गहरे गढ़े और गुफायें बना दी थीं जहाँ बैलगाड़ी

के चक्के के बराबर आकार के गोल-गोल पत्थर बिखरे हुए थे।

जमी हुई नदी एक प्रकार की सीढ़ी बनाए हुई थी जिसकी पूरी चौड़ाई पर काई और पानी जमा था। हमारे बर्फ पर चलने के जूते शीघ्र ही बर्फ की भारी गठरियाँ बन गये। अपनी छड़ियों से हम उन्हें लगातार पीटते रहे। वे बार-बार फिसलने लगे और सीढ़ियाँ भी ज़्यादा ऊँची होती गयीं। किन्तु अन्य मौसम में वह नदी एक गरजता जलप्रपात होती और वसन्त, ग्रीष्म या शरत् ऋतु में दुनिया की कोई भी शक्ति हमें इस नदी के पार नहीं पहुँचा सकती। उस सँकरे, काली दीवारोंवाले दर्रे की निस्तब्धता न जाने क्यों कष्टदायक लग रही थी।

छः मील के बाद वह दक्षिण को मुड़ा और ऊपर लटकती चट्टानों की दरारों से सूरज की रोशनी नीचे आने लगी। यहाँ दीवार का एक अंश टूटकर गिर गया था जिससे चट्टानों की बनावट मालूम हो रही थी। मैंने देखा कि दीवारें अबरख की शैलों की बनी हैं। सुनहले रंग का वह महीन अबरख धूप में सुनहले और रुपहले रेशम की भाँति चमक रहा था; मरकत-नील पारदर्शी बर्फ पर सर्वत्र सुनहली और रुपहली चट्टानें बिखरी थीं। अब वह दर्रा क़तई उदास नहीं दिखता था।

सीढ़ी से और भी ढाई मील ऊपर जाने पर हम एक साफ़ जगह में पहुँचे जहाँ देवदार की छाया थी और बड़े-बड़े गोल पत्थर जहाँ-तहाँ बिखरे थे। अब मेघमुक्त आकाश में चन्द्र-पर्वत स्पष्ट दिखता था। वह ऐसा आकाशचुम्बी प्रस्तर प्राचीर था कि

उत्तर-पूर्व का पूरा दिगन्त ही उसकी आड़ में छिपा हुआ था। हमारे सामने उस सीढ़ी पर और भी एक कदम था, ऐसी चढ़ाई और इतना सीधा मानों उसे छुरी से काटकर रख दिया गया हो। उसपर ३०० फुट चढ़ने में ही हमें पूरा एक घंटा लग गया। अपने भारी कपड़ों में पसीने से तर जब हम उसकी चोटी पर पहुँचे तो देखा कि ग्रैनाइट की और एक दीवार से हमारा रास्ता वन्द है। वह बहुत ऊँची नहीं थी और बिना अधिक कठिनाई के ही हम उस पर चढ़ गये। उसकी चोटी पर से हमें अपनी इस छोटी-सी चहलक़दमी का लक्ष्य दिखाई पड़ा, एक छोटी-सी भीतर धँसी मालभूमि जिस पर तुषार करीब नहीं के बराबर था और जिसके चारों ओर नुकीले आकार के छिटफुट सोपकाओं की पंक्तियाँ थी। कुछ आगे देवदार के बौने पेड़ों की एक झुरमुट की आड़ में हमने काफ़ी तरतीबी के साथ फुटबाल के गोल-पोस्टों की तरह रखे स्तर-विन्यस्त प्रस्तर के कई स्तम्भ देखें।

हम देवदार के उन बौने पेड़ों के बीच से आगे बढ़े और एक चौड़ी खुली जगह में कई हाथीदाँत दिखाई पड़े। लेकिन वे मैमथ के टेढ़े, करीव अर्धवृत्ताकार दाँत जैसे नहीं दीखे, बल्कि अफ्रीका के विशाल हाथियों के दाँत जैसे करीब बिलकुल सीधे थे। मैंने चौदह दाँत गिने जिनमें कुछ १० फुट लम्बे थे। वे काले हो गये थे और मोटा छोर सड़कर टूट गया था। मुँह के अन्दर के दाँत या अन्य हड्डियाँ वहाँ बिलकुल नहीं थीं।

पास ही मालभूमि के बीच में एक टीले पर हमने हाथी

दाँतों का एक बहुत बड़ा ढेर देखा। काफ़ी जगह पर वे लकड़ी की तरह टाल लगाकर रखे गये थे। उत्तेजना से चिल्लाते हुए हम उसकी ओर दौड़ पड़े। वहाँ सैकड़ों दाँत और विशाल-विशाल हड्डियाँ भी थीं जो ज़रा छूते ही चूर हो जाती थीं।

टीले से कुछ दूर पर ही हमें एक गहरी नाली मिली—निस्सन्देह वही किलचेगासोव का 'छेद' था। उसकी बायीं ओर हमें एक चौड़ा आधा बन्द प्रवेशपथ मिला। हम सिकुड़कर उसमें घुस गये और शुरू में बर्फ से ढकी मेहराबों के नीचे घुटनों के बल ऊपर की तरफ़ चलना पड़ा। तब सहसा लुढ़ककर हमलोग बिलकुल नीचे गिर पड़े।

अलेक्ज़ान्द्रोव को अपनी झोली में मोमबत्ती का एक ठूँठ मिल गया जिसने पीछे बहुत काम दिया।

यह गुफा बहुत बड़ी निकली जिसमें कई ऊँचे-ऊँचे गलियारे थे। बर्फ से ढके उसके फ़र्श पर जानवरों की हड्डियाँ उभरी हुई थीं।

हम सबसे ऊंचे गलियारे से चले और तुरन्त आश्चर्य के मारे हमारे मुँह से एक लम्बी चीख निकली। चिकनी, सीधी खड़ी दीवारें जानवरों के विशाल, कुछ-कुछ टेढ़े-मेढ़ चित्रों से भरी थीं, कुछ जल्दी में खींची लकीरों से बने थे और कुछ अभी तक बिलकुल साफ़ लाल और काले रंगों से अंकित थे। वे चित्र हर प्रकार से बिलकुल वास्तव जैसे थे और आश्चर्यजनकरूप से भावमय थे। मोमबत्ती के अस्थिर आलोक में वे जानवर जीवित

से जान पड़ते थे। आश्चर्य से मौन मैंने अपने सामने उन काली दीवारों पर अफ्रीका की ज़िन्दगी को प्रकट होते देखा। चम-गादड़ के पंख जैसे कान फैलाये विशाल-विशाल हाथी, कृष्णसार मृग, सिंह···दो सींगवाले अफ्रीकी गैंड़ों के सिर...

"अरे, यह तो गज़ब है," मैं चिल्लाया। "ये गैंड़े और हाथी तो अफ्रीका के हैं।"

हमें और भी बहुत से चित्र मिलते गये। एक कूबड़वाला धब्बेदार लकड़बग्घा, जिराफ़, धारीदार ज़ेबरा। अफ्रीका! साई-बेरिया के बर्फ से ढके पहाड़ों की छाती पर अफ्रीका!

गुफा के भीतर ठण्ड बाहर से कम थी। बर्फ पर चलने-वाले अपने भींगे और बर्फ से भरे जूते को मैं भूल गया। मेरा सारा शरीर गर्म हो चुका था—मानो मैं अफ्रीका की कड़ी धूप में होऊँ।

कुछ आगे बढ़ने पर मैंने दो गढ़े देखे जो हाथी के दाँतों से भरे थे। यहाँ सबसे बड़े-बड़े नमूने लकड़ी की भाँति जमा थे। कुछ नमूने तेरह फुट तक लम्बे थे। हमारी मोमबत्ती की रोशनी में वे पीले-काले दाँत कुछ-कुछ चमक रहे थे।

अपनी इस आश्चर्यजनक खोज से बेसुध मैं और भी एक गलियारे में घुसने ही वाला था कि अलेक्ज़ान्द्रोव ने मुझे रोक-कर कहा कि तीन बज चुके हैं। डेढ़ घंटे के अन्दर अँधेरा हो जायेगा; इसीलिये हमें जल्दी करना पड़ा। उस वृक्षहीन स्थान में भींगे कपड़ों में और शून्य से नीचे साठ डिग्री पाले में रात

बिताना बहुत खतरनाक होता। फिर भी, जो लोग उन गुफाओं में रहते थे और उन दीवारों पर जिन्होंने वे चित्र अंकित किये थे, उनका कोई चिह्न ढूँढ़ने की ज़बर्दस्त कोशिश में हमने वहाँ और भी आधा घंटा बिताया। उन रहस्यमय गुहावासियों के विषय में हम अधिक से अधिक जानकारी हासिल करना चाहते थे, लेकिन हमें सिर्फ तीर की एक जोड़ी पत्थर की नोंक तथा हड्डी के एक औज़ार के अलावा कुछ भी नहीं मिला। मैं समझ नहीं सका कि वह औज़ार किस काम आता होगा।

सूरज पहले ही पहाड़ों से नीचे उतर चुका था। तब हम हाथी के दाँतों के भारी बोझ से दबे ग्रेनाइट की दीवार पर चढ़े और उस अद्‌भुत स्थान को आखिरी बार मुड़कर देखा। एक के बाद एक विचार बड़ी तेज़ी से मेरे दिमाग़ में आने लगे। अफ्रीका के समस्त पशुओं का देश छोड़कर एशिया में पहुँचने का वह विचित्र युग मुझे याद आया। याद आया कि तुषार-युग से पहले बाईकाल झील से उत्तर की भूमि और मंगोलिया का एक अंश गर्म स्तेप भूमि थी जहाँ कछुए, कृष्णसार मृग और जिराफ़ रहते थे। तब मैंने समझा कि हमलोग अफ्रीका के उत्तर-पूर्व सीमा पर पहुँच गये थे जो उस देशान्तर का सबसे दूरस्थ बिन्दु था।

यह सचमुच एक अलौकिक-सी बात थी: मैं साईबेरिया के बर्फीले दर्रों में अफ्रीका के स्वप्न देख रहा था और उन्हीं में मुझे एक ऐसा कोना भी मिला था जो बहुत समय पहले अफ्रीका

से जान पड़ते थे। आश्चर्य से मौन मैंने अपने सामने उन काली दीवारों पर अफ्रीका की ज़िन्दगी को प्रकट होते देखा। चमगादड़ के पंख जैसे कान फैलाये विशाल-विशाल हाथी, कृष्णसार मृग, सिंह···दो सींगवाले अफ्रीकी गैंडों के सिर···

"अरे, यह तो ग़ज़ब है," मैं चिल्लाया। "ये गैंडे और हाथी तो अफ्रीका के हैं।"

हमें और भी बहुत से चित्र मिलते गये। एक कूबड़वाला धब्बेदार लकड़बग्घा, जिराफ़, धारीदार ज़ेबरा। अफ्रीका! साईबेरिया के बर्फ से ढके पहाड़ों की छाती पर अफ्रीका!

गुफा के भीतर ठण्ड बाहर से कम थी। बर्फ पर चलनेवाले अपने भीगे और बर्फ से भरे जूते को मैं भूल गया। मेरा सारा शरीर गर्म हो चुका था—मानो मैं अफ्रीका की कड़ी धूप में होऊँ।

कुछ आगे बढ़ने पर मैंने दो गढ़े देखे जो हाथी के दाँतों से भरे थे। यहाँ सबसे बड़े-बड़े नमूने लकड़ी की भाँति जमा थे। कुछ नमूने तेरह फुट तक लम्बे थे। हमारी मोमबत्ती की रोशनी में वे पीले-काले दाँत कुछ-कुछ चमक रहे थे।

अपनी इस आश्चर्यजनक खोज से बेसुध मैं और भी एक गलियारे में घुसने ही वाला था कि अलेक्ज़ान्द्रोव ने मुझे रोककर कहा कि तीन बज चुके हैं। डेढ़ घंटे के अन्दर अँधेरा हो जायेगा; इसीलिये हमें जल्दी करना पड़ा। उस वृक्षहीन स्थान में भीगे कपड़ों में और शून्य से नीचे साठ डिग्री पाले में रात

बिताना बहुत खतरनाक होता। फिर भी, जो लोग उन गुफाओं में रहते थे और उन दीवारों पर जिन्होंने वे चित्र अंकित किये थे, उनका कोई चिह्न ढूँढ़ने की ज़बर्दस्त कोशिश में हमने वहाँ और भी आधा घंटा बिताया। उन रहस्यमय गुहावासियों के विषय में हम अधिक से अधिक जानकारी हासिल करना चाहते थे, लेकिन हमें सिर्फ तीर की एक जोड़ी पत्थर की नोंक तथा हड्डी के एक औज़ार के अलावा कुछ भी नहीं मिला। मैं समझ नहीं सका कि वह औज़ार किस काम आता होगा।

सूरज पहले ही पहाड़ों से नीचे उतर चुका था। तब हम हाथी के दाँतों के भारी बोझ से दबे ग्रेनाइट की दीवार पर चढ़े और उस अद्‌भुत स्थान को आखिरी बार मुड़कर देखा। एक के बाद एक विचार बड़ी तेज़ी से मेरे दिमाग़ में आने लगे। अफ्रीका के समस्त पशुओं का देश छोड़कर एशिया में पहुँचने का वह विचित्र युग मुझे याद आया। याद आया कि तुषार-युग से पहले बाईकाल झील से उत्तर की भूमि और मंगोलिया का एक अंश गर्म स्तेप भूमि थी जहाँ कछुए, कृष्णसार मृग और जिराफ़ रहते थे। तब मैंने समझा कि हमलोग अफ्रीका के उत्तर-पूर्व सीमा पर पहुँच गये थे जो उस देशान्तर का सबसे दूरस्थ बिन्दु था।

यह सचमुच एक अलौकिक-सी बात थी: मैं साईबेरिया के बर्फीले दर्रों में अफ्रीका के स्वप्न देख रहा था और उन्हीं में मुझे एक ऐसा कोना भी मिला था जो बहुत समय पहले अफ्रीका

था और आज तक ज्यों का त्यों बना था। इन जानवरों के चित्र अंकित करनेवाले वे रहस्यमय व्यक्ति कौन थे? अगर वे तुषारयुग से पहले यहाँ रहते हों तो निश्चय अत्यन्त प्राचीन जाति के थे और गुफा की दीवारों पर वे जो चित्र छोड़ गये थे, उनके आधार पर कहा जा सकता है कि वे बहुत सभ्य भी थे। इससे पहले साईबेरिया में या सोवियत संघ में कहीं और ऐसे चित्र नहीं मिलते थे। वे गोल-पोस्ट बहुत कुछ उन रहस्यमय 'डोलमेन' जैसे लगते थे जो मध्य और पूर्व अफ्रीका में अकसर मिलते हैं। हाँ, वे लोग, हाथियों के वे निर्भय शिकारी और उल्लेखनीय कलाकार, देश छोड़कर जाते हुए अफ्रीका के पशुओं के पीछे-पीछे ज़रूर उत्तर चले गये होंगे।

अपने इस आविष्कार से यद्यपि मैं अवाक् हो गया था, फिर भी मैंने इसकी सर्वाधिक तर्कसङ्गत व्याख्या ढूँढ़ने की भरपूर कोशिश की। इस आविष्कार का पूर्ण महत्त्व बहुत धीरे-धीरे मेरी समझ में आया। तुषारयुग एक हुआ था या कई, इस विषय पर बहुत दिनों से वैज्ञानिकों में जो विवाद चल रहा था, यह सदा के लिये उसका समाधान कर देगा। चतुर्थक युग में साईबेरिया के इस इलाके के इतिहास के विषय में, मानव के युग के संबंध में वैज्ञानिकों की धारणाओं पर, उसी प्रकार पशु-भूगोल तथा समसामयिक स्थलचर पशुधन के विषय में भूगर्भशास्त्रियों के मतों पर पुनर्विचार करने की ज़रूरत पड़ेगी। और सबसे अधिक दिलचस्प बात यह थी कि हमें मानव का एक ऐसा कबीला मिला

था जो मध्य साईबेरिया का सबसे प्राचीन अधिवासी था और संभावितरूप से यह भी देखा गया कि अभी तक केवल पश्चिम और दक्षिण में जो कबीला मिला है, यह कबीला उसका सम-सामयिक और सम्बन्धी भी था। भयानक पाले में बर्फ़ जमे पहाड़ों पर जिन्होंने कठोर परिश्रम और लगन से यह काम किया, उन मुट्ठीभर खोज करनेवालों के इस आविष्कार पर वैज्ञानिकों को काफ़ी समय तक सोचना पड़ेगा!

हमलोग चुपचाप नदी पर उतरे। भूगर्भशास्त्री ने जानना चाहा कि अपने आविष्कार के बारे में मेरा क्या खयाल है और मेरे अनुमान से वह सहमत हो गया।

उसने कहा, "हाँ, मैं भी समझता हूँ कि ये हड्डियाँ और वे चित्र पृथ्वी की सतह की स्थानीय विकृति से पहले के हैं; दरअसल तुषारयुग से भी पहले के हैं। चूना-पत्थर में पानी से यह गुफा बनी है। और इतनी ऊँचाई पर इतना ज़्यादा पानी आपको कहाँ मिलेगा? करीब पचास हजार वर्ष पहले, जब यह सारा विस्तृत अंचल धरती की सतह की गति से ऊपर उठ आया और फिर बर्फ़ से जम गया तो चिड़ककर यह कई इलाकों में बँट गया जिनमें कई ऊपर उठ गये और पर्वतमालायें बन गये और दूसरे अवनमन हो गये। हमने जो गोलेत्स ढूँढ़ निकाला है—जो प्राचीन चट्टान की एक शाखा है—वह कम ऊँचाई तक ऊपर उठाया गया और इस प्रकार बर्फ़ जमने और क्षय होने से बच गया। साथ ही यह इतना नीचे भी नहीं गया कि

हिमनदी के किनारों और बहकर आये कंकड़-पत्थरों के नीचे दब जाता। इसी लिये यहाँ हमें सारी चीज़ें करीब ज्यों की त्यों मिलीं; परिवर्तन केवल जलवायु में हुए हैं..."

यहीं पर हमारा विद्वत्तापूर्ण विचार समाप्त हो गया क्योंकि रात हो जाने के कारण हमें अपना सारा ध्यान रास्ते पर देना पड़ा। जो भूशास्त्रीय नमूने हम दर्रे के मुँह पर छोड़ आये थे, उन्हें उठा लिया और तब हम बिलकुल अँधेरे में डूब गये। उस रात किवेता दर्रे से गुज़रने के समय मैं जैसी आफ़त में पड़ा, वैसी आफ़त में मैं अपने किसी पर्यटन में नहीं पड़ा था। पानी के ताज़े जमाव में हम बार-बार गिरने लगे, और बर्फ पर चलने के हमारे जूतों पर बर्फ लगातार मोटी होती गयी। एक-एक इञ्च आगे बढ़ने के लिये हम सिर्फ़ अपने भारी झोलों को फिसलनेवाली बर्फ पर घसीट सकते थे और जमे हुए जल-प्रपातों पर गिरते थे और असहाय भाव से नीचे लुढ़कते थे। बहुत जल्दी हमारे कपड़े भी जम गये। मैं कह नहीं सकता कि इस तरह हम कितनी मील गये होंगे। अन्त में हमने आशा छोड़ दी। लेकिन हम जानते थे कि वहाँ आग के बिना देर तक विश्राम करना आत्महत्या होगा। और वहाँ आग जलाना असंभव था क्योंकि आसपास बर्फ और पत्थर के सिवा कहीं कुछ न था।

सहसा मुझे मोमबत्ती याद पड़ी। सौभाग्य की बात थी कि मैंने उसके अवशेष को गुफा में फेंक नहीं दिया था। वहाँ की स्थिर हवा में मोमबत्ती इस तरह जलेगी जैसे कमरे में हो। बर्फ

से ठिठुरी हुई मोमबत्ती हमने कठिनाई से जलाई, फिर बारी-बारी से मोमबत्ती को सिर के ऊपर उठाये आगे बढ़ते गये। अब कविता के जमे जलप्रपात पहले के जैसे उतने भयानक नहीं लगते थे—अब हम सावधानी से ऊपर फिसलते हुए नीचे उतर सकते थे। वह ठूँठ (वह मोटी "रेलवे" मोमबत्ती थी) करीब एक घंटे तक जलती रही। जब हम फिर अंधेरे में डूब गये, तब हम जानते थे कि दर्रे का छोर अब नज़दीक ही है।

उस गोलेत्स के ऊपर कृष्णपक्ष का चाँद लटका हुआ था, उसकी चाँदनी हमारी उस काली सुरङ्ग के दाहिनी ओर हमारे सिर के काफ़ी ऊपर तक पड़ रही थी। जब हम उन काली दीवारों के मुँह से निकलकर बाहर रजत शुभ्र तुषारक्षेत्र में आये, तब तक काफ़ी समय बीत चुका था। वहाँ से हमारे तंबू का फ़ासला सिर्फ ढाई मील का था, मगर वहाँ भी आसपास एक भी पेड़ नहीं था, जिसका अर्थ था कि हम वहाँ भी विश्राम नहीं कर सकते थे। मैं एक तिहाई मील और भी चला और तब सहसा महसूस किया कि बेहद परिश्रम से मेरे कलेजे की धड़कन रुकने लगी है। रास्ता बड़ा कठिन रहा, करीब २४ घंटे तक शून्य से नीचे साठ डिग्री पाले में रहना पड़ा था, कपड़े भींगे और भारी थे, पीठ पर भारी बोझ था, फिर दर्रे से उतरने में अमानुषिक प्रयास करना पड़ा था—और इस सबके ऊपर—ठीक से साँस लेना असम्भव था क्योंकि फेफड़े बर्फीली हवा खींच नहीं सकते थे। इसलिये यह आश्चर्य की बात नहीं

थी कि अलेक्ज़ान्द्रोव और मेरे जैसे घुटे हुए आदमी भी अन्त में हिम्मत हारने लगे।

मैंने सुझाया कि हम अपने नमूने के झोले और सारे सामान कहीं छोड़ चलें। अलेक्ज़ान्द्रोव ने पल भर में इस सुझाव को कार्यान्वित किया।

ज़ोर से चरमराते तुषार पर हमलोग लड़खड़ाते हुए आगे बढ़े, बीच-बीच में एक दूसरे को उत्साहित करने के एकाध शब्द कह देते थे। हर क़दम पर हमारी शक्ति क्षीण होती जा रही थी। और आधी मील, एक मील—और अलेक्ज़ान्द्रोव के पाँव डगमगाये और वह मुँह के बल गिरा। वह बैठकर इस तरह हाँफने लगा मानों दम तोड़ रहा हो।

अपनी कमज़ोरी को दबाता हुआ मैं उसके पास पहुँचा और उठकर चलने के लिये उसे समझाने की कोशिश की। उसने जवाब दिया कि उसका क्या होगा, उसे इसकी बिलकुल परवाह नहीं है—वह चल नहीं सकता। जैसे तैसे मैंने उसे उठने को राज़ी किया और आगे बढ़े। तब कई सौ क़दम चलने के बाद मैंने खुद महसूस किया कि अब एक कदम भी नहीं चल सकता। अपनी बची-खुची इच्छाशक्ति बटोरकर मैंने अपने को दो सौ क़दम गिनने को मजबूर किया, फिर और सौ क़दम—और तब अलेक्ज़ान्द्रोव की भाँति ही मैं भी तुषार पर गिर पड़ा।

एक अपूर्व शान्ति ने मुझे आच्छन्न कर लिया। मैं सोना—सिर्फ़ सोना चाहता था, दुनिया की किसी चीज़ की मुझे ज़रूरत

न थी। तब मेरे दिमाग़ में विचार आया कि सोने का मतलब मर जाना होगा, मगर इस विचार को मैंने भगा दिया। जब मैंने पैरों की ज़ोर, बहुत ज़ोर आहट सुनी—वह अलेक्ज़ान्द्रोव के मुड़कर आने की आहट थी—तो उसके साथ ज़िंदगी भी लौट आयी और फिर उठने और आगे चलने की अत्यावश्यकता भी साथ ही आई। कंधे से कंधा मिलाकर, अलग होने से डरते हुए, विश्राम करने की बात सोचने में भी डरते हुए हमलोग कब तक चलते रहे, यह मुझे याद नहीं।

तुषार के अन्दर छिपे हुए किसी टहनी या डाली पर मैंने क़दम रखा। उसके टूटने की विचित्र तेज़ आवाज़ मेरे सुन्न दिमाग़ में प्रवेश कर गयी। सारी बातें मुझे स्पष्ट स्मरण हो आयीं : हिमानीसंपात का पाशविक गर्जन, पिछली रात को आये हुए हमारे रहस्यमय मेहमान के क़दमों की गूँजती हुई आहट, अलेक्ज़ान्द्रोव के पैरों की ज़ोर की आहट। मैं रुका, अपने दस्ताने उतारे जो जमकर पेड़ की छाल की भाँति कड़े हो गये थे, और अपनी पिस्तौल खींचकर निकाली। मामूली ब्राउनिंग की आवाज़ तोप की जैसी सुनाई पड़ी। वह ध्वनि तरंगायित होकर सारी उपत्यका में गूँजने लगी। बार-बार मैं गोली चलाने लगा, अर्थात् वज्रनिर्घोष से सहायता की प्रार्थना करने लगा। अन्त में दूर से चीखने की आवाज़ आई जो प्रतिध्वनि से और भी तेज़ हो गयी।

मैंने पिस्तौल फिर जेब में रख ली और अपनी मुट्ठी खोलने

में क़रीब असमर्थ, मैं अलेक्ज़ान्द्रोव की बग़ल में घुटनों के बल गिर पड़ा।

हमलोग ऊँघने लगे, किन्तु दोनों याकूतों और अलेक्सेई के हमारी ओर आने की आहट से जाग पड़े। जब उन्होंने गोलियों की आवाज़ सुनी तो उसका मतलब तुरन्त समझ गये। हमारे लिये अलेक्सेई गर्म चाय का एक फ्लास्क और एक बोतल वोदका लिये आया था। वे हमें सहारा देकर तम्बू में ले गये जहाँ कपड़े उतारे बिना ही हम तुरन्त गहरी नीन्द में सो गये। शीघ्र ही अलेक्सेई ने हमें जगाया और रात भर के लिये बिस्तर की बोरियों में आराम से लिटा देने के पहले भोजन करा दिया।

अगले दिन सुबह हमलोग फिर भले-चंगे थे। खाने-पीने का सामान हमारे पास बहुत कम रह गया था, इसलिये हमने जब तुरन्त चल देना तय किया तो याकूतों की खुशी का ठिकाना न रहा। हम जो नमूने राह में छोड़ आये थे, सूरज निकलने के साथ ही याकूत उसे उठा लाये, मगर नमूनों को चुनने की भी हमने प्रतीक्षा नहीं की। हम किसी कम उदास स्थान में नया साल मनाना चाहते थे।

लज्जित भाव से मुस्कुराता हुआ गाविशेव मेरे पास आया। मेरे स्लेज में रस्सा कस लेने तक प्रतीक्षा करने के बाद बोला, "हम जानता है, रात को कौन मालिक आता। किलचेगासोव भी जानता है। हियाँ आवाज़ बहुत जोर होता। हमारा बारह-सिंगा जाता।"

पथप्रदर्शक आनन्द से हँस पड़ा और मेरी ओर आखें मार-कर अपनी स्लेज पर चला गया।

अपनी स्लेजों की पुरानी लीक पकड़कर हम तेज़ी से लौट चले। नये वर्ष १६३६ की दो तारीख तक हम चारा उपत्यका के निकट पहुँच गये। किलचेगासोव की लीक पर मेरे बारह-सिंगे बड़े मज़े से जा रहे थे। अलेक्सेई "वितीम नदी के किनारे भयानक पाले में एक बोदाइबो शोधक के मुश्किल से आगे बढ़ने" के विषय की एक उदास गीत गा रहा था। मेरी स्लेज उछलती हिलती हुई चली जा रही थी, बर्फ जमी नदी की श्वेत रेखा पर सूरज आनन्द से जगमगा रहा था।

पहाड़ी भूतों की झील
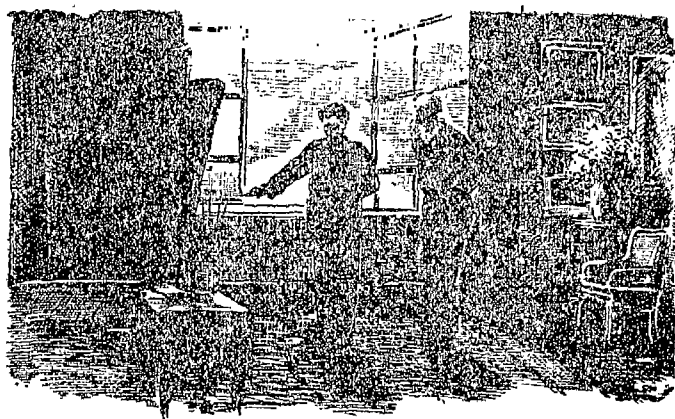
कुछ वर्ष पहले मैंने मध्य अलताई और उत्तर करातून के बायें किनारे-किनारे लिस्त-वियागा पर्वतमाला का मार्ग सर्वे किया था। उस समय मेरा प्रधान उद्देश्य सोने की खोज करना था। उस ग्रीष्मकाल में मुझे कोई काम लायक संचय नहीं मिला, किन्तु अलताई के अपूर्व दृश्यों ने मुझ पर गहरी छाप डाली।

शुरू में मेरे रास्ते में उल्लेखनीय कुछ भी नहीं था। लिस्त-वियागा अपेक्षाकृत नीची पर्वतमाला है, इसलिये वहाँ न तो हिम-नदियाँ हैं, न पहाड़ी झीलें। गगनचुम्बी शृङ्ग भी नहीं। बड़ी पर्वत-मालाओं में जो नाना प्रकार के अपूर्व दृश्य मिलते हैं, जो दृष्टि को मुग्ध और मन को विस्मय से अभिभूत कर देते हैं, उनमें से एक भी वहाँ नहीं था। फिर भी ऊबड़-खाबड़ तैगा के ऊपर

अपनी कुबड़ी नंगी पथरीली पीठ फैलाये विशाल गोलेत्स और उनके चारों ओर फैली पहाड़ियों की सादगी भरी सुन्दरता मेरे उस उदास जीवन की क्षतिपूर्ति कर रही थी जो जीवन मुझे अपने अनुसंधान कार्य में नदियों की चौड़ी दलदल भरी उपत्यकाओं में बिताना पड़ा था।

उत्तरी प्रकृति से मुझे प्रेम है जहाँ कठोर निस्तब्धता रहती है और तरह-तरह के रंग नहीं; शायद उसके आदिम एकान्त और निर्द्वन्द्व बियाबान के कारण ही उससे मुझे प्रेम है, और दक्षिण के चमकदार नाना रंगों से मैं उसे कभी बदल न सकूँगा। अन्य अनुसंधान करनेवालों की भाँति ही जब मैं शहर की ज़िन्दगी से ऊबने लगता हूँ तो मैं खुले मैदान के लिये तरसने और भूरी दरारें, शीशे से समुद्र, हवा की चोट से घायल देवदार के विशाल कुन्दे और चीड़ के घने जंगल की अँधेरी गहराई के स्वप्न देखने लगता हूँ।

संक्षेप में, चारों ओर के एक-से दृश्यों से मैं ऊबा नहीं और अपना काम लगन से करता रहा।

अपने मुख्य दायित्व के अलावा, एक दूसरा—कातून नदी के मध्य भाग में चेमल नामक बड़े गाँव के पास एज़बेस्टोस के काफ़ी अच्छे संचय की छानबीन करने का—भार भी मुझ पर था। वहाँ जाने का सबसे सीधा रास्ता अलताई में सबसे ऊँची कातून पर्वतमाला के पाद-प्रदेश से, उत्तर कातून के किनारे-किनारे गुज़रता था। उईमोन नामक गाँव में पहुँचने के बाद मुझे तेरेकतिंस्क

पर्वतमाला के चिर-तुषार पर चढ़कर उसे पार करना और ओन्दुगाई को पार करके कातून उपत्यका में फिर प्रवेश करना पड़ा। यद्यपि मुझे जल्दी थी जिसके कारण रोज़ कई मील चलना पड़ता था, फिर भी अलताई के सौन्दर्य ने मुझे पूरी तरह मोह लिया था।

एक विशेष घटना मुझे अच्छी तरह याद है, जब कि एक अरमान—चीड़, देवदार और बबूलों का घना जंगल—के बीच से बड़ी देर तक अपने छोटे कारवाँ के साथ कठोर संग्राम करने के बाद मैं कातून उपत्यका में उतरा और दूर तक फैले दल-दल के कारण मुझे रुक जाना पड़ा। काई के हरे गलीचे के नीचे छिपे फिसलनभरे भूरे दलदल में हमारे घोड़े करीब डूब-से गये। एक-एक गज़ आगे बढ़ने के लिये हमें बड़ी तकलीफ़देह कोशिश करनी पड़ी थी। लेकिन उसी रात को कातून के दाहिने किनारे पहुँचने के लिये उत्सुक मैंने उस रात रुकने की आज्ञा न दी। चाँद पहाड़ों पर जल्दी ही उग आया और हमारे आगे बढ़ते रहने के लिये रोशनी काफ़ी थी। नदी की तेज़ धारा के एक-रस कलकल निनाद ने दूसरे तट पर हमारे आगमन का स्वागत किया। चाँदनी में कातून का पाट चौड़ा लगता था, लेकिन जब हमारा पथप्रदर्शक अपने बलूती रंग के घोड़े पर कलकल करते हुए काले जल में उतरा और हमलोग उसके पीछे-पीछे चले तो हमने देखा कि पानी सिर्फ़ घुटने भर ही है। हम आसानी से दूसरे तट पर पहुँच गये। हमने बाढ़ के पानीवाली

कंकरीली ज़मीन को पार किया और फिर दलदल में प्रवेश किया; इसवार ऐसा दलदल जिसे साईबेरिया के लोग कारागाइनिक कहते हैं। उसके काई के मुलायम गलीचे पर चीड़ के पेड़ जहाँ-तहाँ बिखरे हुए थे। और उसकी ऊँची-ऊँची ढिबरियों पर उगे मोटे मोटे मोथे सरसरा रहे थे। मैंने आगे बढ़ते रहने का ही निश्चय किया क्योंकि वैसी जगह में घोड़ों को कोई चारा नहीं मिल सकता था।

ऊपर उठते हुए ढलवान से पता चलता था कि आगे सूखी ज़मीन मिलेगी। वह पगडंडी चीड़ के जंगल के उदास अन्धकार में ग़ायब हो गयी और घोड़ों की टाप काई में डूबने लगी। डेढ़ घंटे तक हम इसी प्रकार चलते रहे, तब कहीं जंगल पतला होने लगा; चीड़ की जगह देवदार आ गये और काई क़रीब बिलकुल ग़ायब हो गयी, लेकिन ढलवान की चढ़ाई और भी कड़ी हो गई। दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद फिर एक या दो घंटे तक की यह चढ़ाई ऐसी थी कि हमें अपना उत्साह बनाये रखना मुश्किल हो गया। इसलिये जब चोटी पर की समतल पथरीली सतह पर घोड़ों की टाप खट खट आवाज़ करने और चिनगारियाँ निकालने लगी तो हमलोग बहुत खुश हुए। वहाँ हमें घोड़ों के लिये घास और तम्बू लगाने के लिये सूखी ज़मीन मिली। घोड़ों पर से सामान उतारने और देवदार के बड़े-बड़े पेड़ों की झुरमुट में तम्बू गाड़ने में हमने बिलकुल देर नहीं की। सदा की भाँति घड़े भर चाय पीने और धूमपान के बाद हम गहरी नींद में सो गये।

जगमग धूप ने मुझे जगाया और मैं घुटनों के बल तम्बू से निकला। तम्बू के ठीक दरवाज़े पर बहुत ऊँचे खड़े देव-दार की गहरी हरी डालों को ताज़ा हवा बहुत आहिस्ते-आहिस्ते हिला रही थी। बाँयी ओर, दो ऊँचे पेड़ों के बीच में, जैसे काले चौखटे में जड़ी हो, चार तुषारमौलि पर्वत-शृङ्गों की हलकी रूपरेखा प्रातःकाल की स्वच्छ गुलाबी-सी रोशनी में ऊपर लटकी हुई-सी दीखती थी। हवा आश्चर्यजनकरूप से स्वच्छ थी। तुषारावृत पर्वतों के सीधे-से ढलवानों से लाल रंग की सब प्रकार की आभा फूटकर नीचे आ रही थी। कुछ नीचे एक हल्का-नीला उभरा हिमवाह था जिसपर लम्बी, ढालू, गहरी नीली छायायें छाई थीं। यह नीला आधार पर्वत के विशाल शरीर को और भी अधिक विचित्र बना रहा था। लगता था कि ये पहाड़ जैसे भीतर से रौशन हों। उनके बीच का आकाश खालिस सोने के सागर-सा लगता था।

कुछ क्षण बीते। सूरज और भी ऊपर चढ़ चुका था, और उस सोने में अब बैंगनी की धारियाँ थीं, पर्वत-शृंगों का गुलाबी रंग अब फीका होकर नीला हो गया था वह हिमवाह चमकती चाँदनी की चद्दर बन गया था।

घोड़ों की घंटियाँ टुनटुना रही थीं। हमारे कमकर लादने के लिये घोड़ों को एक जगह ला रहे थे और उनकी पीठ पर गट्ठर डालकर बाँध रहे थे; लेकिन मैं तब भी रोशनी और रंग की माया से मुग्ध था। तैगा के रास्तों के सीमित दृष्टि-क्षेत्र और

गोलोत्स तुन्द्रा की भयानक कठिनाई के बाद पारदर्शी प्रकाश और सूर्य-किरणों के सदा बदलते खेल की यह दुनिया एकदम अनोखी थी।

आप समझ सकते हैं कि यह पहली बार देखते ही प्यार हो जाने का एक उदाहरण था और अलताई के तुषार के प्रति इस प्रेम के पीछे-पीछे ठगे जाने का मनोभाव तो आया ही नहीं, बल्कि मुझ पर और भी कई तरह से नया-नया प्रभाव पड़ा। पहाड़ी झीलों के विचित्र पारदर्शी नील या पन्ने की तरह हरे पानी या नीली बर्फ की दीप्ति और चमक को देखकर मुझे कैसी-कैसी अनुभूति हुई, मैं उसका वर्णन करने की कोशिश नहीं करूँगा। मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि तुषारावृत पर्वतों के इस चित्र ने मुझे प्रकृति के सौन्दर्य के विषय में अच्छी तरह सजग कर दिया। रोशनी, रंग और छायाओं की वह करीब-करीब संगीतात्मक विभिन्नता संसार को एक अपूर्व एकरूपता दे रही थी। एक साधारण सांसारिक जीव से कुछ अधिक होने का मैं दावा नहीं करता, किन्तु पहाड़ों की दुनिया ने मेरी अनुभूति को प्रखर कर दिया और निस्संदेह इसी कारण से मैं उसका आविष्कार कर सका जिसकी कहानी मैं आपको सुनाऊँगा।

अपने रास्ते के पहाड़ी हिस्से से जब मैं गुज़र चुका तो फिर कातून उपत्यका में उतरा और वहाँ से उइमन स्तेप पहुँचा जो बढ़िया चारेवाला समतल अवनमन है। तेरेकर्तिस्क के तुषार के मेरे भूगर्भशास्त्रात्मक पर्यवेक्षण से ऐसा कोई नतीजा न निकला

जिसमें कोई दिलचस्पी ली जा सके। ओंदुगाई पहुँचते ही मैंने अपने सहकारी को एकत्रित नमूनों तथा सरोसामान के साथ क्लिस्क भेज दिया। मैं यथासम्भव कम से कम सामान के साथ चेमल का एज़बेस्टोस का संचय देखने जाना चाहता था। मैंने नये घोड़े कसवाये और पथप्रदर्शक के साथ जल्दी ही कातून पहुँच गया, जहाँ विश्राम करने के लिये हम कथाञ्चा गाँव में ठहरे।

सुगन्धित मधु के साथ चाय पीकर हमलोग काफ़ी देर तक बगीचे में उस सफ़ेद मेज़ पर बैठे रहे जिसपर हाल ही में रंदा लगाया गया था। मेरा पथप्रदर्शक गम्भीर और अल्पभाषी उई-रोत था जो अपना पीतल-मढ़ा पाइप पीने में मशगूल था। हमारे मेजवान थे एक युवक स्कूल-शिक्षक जिनका सरल चेहरा धूप में तपकर पका हुआ था। मैंने उनसे चेमल जाने के अपने रास्ते की पूरी जानकारी चाही।

मेरे प्रश्नों के उन्होंने खुशी से उत्तर दिये। फिर उस शिक्षक ने कहा "कामरेड इंजिनीयर, प्रसंगतः कह दूँ कि चेमल के पास ही एक छोटे गाँव से आप गुजरेंगे। उसी गाँव में हमारे विख्यात कलाकार चोरोसोव रहते हैं। उनके बारे में आपने शायद सुना हो। वह बूढ़े और चिड़चिड़े हो गये हैं, लेकिन अगर आप उन्हें जँच गये तो वे आपको सारी चीजें दिखला देंगे। और उनके पास बहुत से सुन्दर चित्र हैं।"

तीमुस्क और ब्लिस्क में देखे चोरोसोव के चित्र, खासकर "कातून का मुकुट" और "खान् अलताई" मुझे याद आ गये।

उनके स्टुडियो में ही उनके चित्र देखना और यदि सम्भव हो तो एकाध रेखाचित्र प्राप्त करना अलताई से मेरे परिचय का अत्यन्त आनन्ददायक परिणाम हो सकेगा।

अगले दिन दोपहर के बाद मैं एक चौड़े दर्रे में पहुँचा। उसके ढलवान पर, बबूलों की एक झुरमुट के नीचे मैंने कुछ नये-नये बने मकान देखे जिनकी दीवारें चमकदार हल्की पीली लकड़ी की थीं। कायंचा के स्कूल मास्टर ने जैसा बताया था, यह ठीक वैसा ही था और मैंने सीधे कलाकार के मकान की ओर घोड़ा दौड़ा दिया।

मुझे उम्मीद थी की एक ढीला-ढाला बूढ़ा दिखाई पड़ेगा, इसलिये जब बरामदे पर एक फुर्तीला, दुबला और दाढ़ी-मूँछ घुटा हुआ आदमी दिखाई पड़ा जिसका हर अंग-संचालन फुर्तीला और सधा हुआ था तो मैं आश्चर्यित हुआ। जब मैंने उसके पीले-से मंगोल चेहरे को गौर से देखा, तब कहीं उसके छोटे कटे बालों और कड़ी मूँछों में पतली सफ़ेद धारियाँ मुझे दिखीं। उसके ऊँचे जबड़ों और उभरे ललाट के नीचे उसके पिचके गालों में गहरी झुर्रियों की भरमार थी।

उसने शिष्टता के साथ मेरा स्वागत किया, किन्तु साफ़ ही उसमें उत्साह का अभाव था। मैं कुछ आत्म-सचेतन-सा उसके पीछे-पीछे मकान के अन्दर चला।

चोरोसोव ने ज़रूर महसूस किया होगा कि अलताई के प्रति मेरा अनुराग सच्चा है और उसका व्यवहार मित्रतपूर्ण हो गया।

अलताई के सबसे सुन्दर स्थानों का उसका संक्षेप में वर्णन मेरे दिमाग़ में गहराई तक जड़ जमा चुका है—उस आदमी की निरीक्षण-शक्ति ऐसी प्रबल थी।

उसके मकान का आधा हिस्सा स्टुडियो ने ले लिया था। बड़ा कमरा जिसमें भित्ति-पत्र नहीं और ऊँची-ऊँची खिड़कियाँ। अनेक रेखाचित्रों और छोटे-छोटे अंकित चित्रों में एक ऐसा था जिसकी सुन्दरता और आकर्षण अलग ही था। चोरोसोव ने मुझे बताया कि 'देनी दर' या "पहाड़ी भूतों की झील" नामक उसका एक बड़ा चित्र साइबेरिया के एक संग्रहालय में प्रदर्शित हो रहा है, उसकी यह छोटी नकल उसके अपने लिये है। मैं इस चित्र का विस्तारपूर्वक वर्णन करूँगा क्योंकि इस कहानी में वह चित्र एक महत्वपूर्ण पार्ट अदा करता है।

उस चित्र के समृद्ध रंग डूबते सूर्य के प्रकाश में सजीव से लगते थे। चित्र के मध्य में स्थित चिकनी नीलाभ भूरी झील शान्त, निस्तब्ध निद्रा में पड़ी थी। सामने समतल किनारे पर पत्थरों के बीच में देवदार का गिरा हुआ एक बड़ा पेड़ दिखाई देता था। वहाँ हरी-हरी घास और चमकती बर्फ एक दूसरी से मिली-जुली बिखरी थी। देवदार की जड़ के पास ढेर-सी हल्की नीली बर्फ पड़ी थी। बर्फ के छोटे-छोटे ढेरों और बड़े-बड़े भूरे पत्थरों की हरी-सी या नीली भूरी-सी छाया झील की सतह पर पड़ रही थी। दो छोटे-छोटे, हवा में टूटे देवदार अपनी रोयेंदार डालें इस तरह उठाये हुए थे, मानो भगवान् से प्रार्थना

कर रहे हों। पृष्ठभूमि में ऊबड़-खाबड़ पहाड़ अपने सीधे खड़े तुषारावृत ढलवानों को पानी में सीधे उतार रहे थे। उन ढलवानों में पत्थर के बैंगनी या हल्के-पीले उभार थे। चित्र के मध्य-भाग में एक हिमनदी का पिछले साल का नीला तुषार झील के पानी तक पहुँच रहा था। बायीं ओर तीन सिरोंवाला हीरक स्तम्भ आसमान को चूम रहा था। लगता था कि उसकी चोटी पर एक झंडा फहरा रहा है—गुलाबी बादलों का एक सिलसिला। हिमनदी की उपत्यका के बायीं ओर एक ऊपर फटा-फटा-सा पहाड़ था, वह भी पाले के लबादे से ढका हुआ था। सिर्फ़ कहीं कहीं हल्की-पीली धारियाँ थीं जो उसके टीलों को प्रकट करती थीं। और उसका चौड़ा आधार पत्थरों की विशाल सीढ़ियों के रूप में झील के सबसे दूर के कोने में उतर रहा था।

कातून पर्वतमाला के पास पहुँचने पर जिसने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया था, इस चित्र में भी तटस्थता, ठण्डक और जगमगाती सुन्दरता का वही वातावरण था।

जिन लोगों ने उसका नाम देनी दर—पहाड़ी भूतों की झील दिया था, उनकी प्रत्युत्पन्नमति की प्रशंसा करता हुआ मैं बहुत देर तक अलताई की उस हूबहू सूरत को देखता खड़ा रहा।

"आपको यह झील कहाँ मिली?" मैंने अन्त में पूछा। "यह क्या सचमुच है?"

"हाँ, और मुझे ज़रूर स्वीकार करना चाहिये कि असल में यह कहीं अधिक सुन्दर है। फिर भी मैं गर्व कर सकता हूँ कि

मैंने इसकी आत्मा को प्रकट किया है," चोरोसोव ने जवाब दिया। "वहाँ पहुँचना आसान नहीं था। खैर, वहाँ जाया जा सकता है···लेकिन आप वहाँ क्यों जाना चाहते हैं?"

"इसलिये कि वह इतनी सुन्दर है। उसे देखने के लिये मैं अपनी जान जोखिम में डाल सकता हूँ।"

चोरोसोव ने मुझे गौर से देखा। "खूब कहा 'जान जोखिम में डालना।' शायद इस झील के बारे में ओइरोत कहानी आप नहीं जानते हैं।"

"उन्होंने इसे जैसा काव्यमय नाम दिया है, उस हिसाब से कहानी ज़रूर दिलचस्प होगी।'

चोरोसोव ने अपनी आँखें अपने चित्र पर टिका दीं। "इसमें क्या आप कोई विचित्र बात देखते हैं?"

"जी हाँ, यहाँ इस बाँये कोने में, उस फटे सिरवाले पहाड़ के पास," मैंने जवाब दिया। "माफ़ कीजियेगा, लेकिन यहाँ के रंग मुझे ज़्यादा लगते हैं।"

"और भी नज़दीक से देखिये।"

मैंने देखा, और चित्रकार की कला की ऐसी खूबी थी कि मैं जितना देखता रहा, उस चित्र में उतनी ही नई-नई चीज़ें दीखती रहीं मानो अतल गर्त से निकल रही हों। उस फटे सिर वाले पहाड़ की जड़ में अब मैंने कुछ अस्पष्ट-सा उद्भासित भाप का हरा-सा सफ़ेद बादल देखा। चमकते तुषार के पानी पर पड़ते प्रतिबिम्ब को काटते हुए उसके प्रतिबिम्ब छाया की लम्बी-लम्बी

धारियाँ उत्पन्न कर रहे थे जो किसी कारण से लाल थीं। चट्टानों की दरारों में और भी मोटी, खून-सी लाल-लाल छायायें थीं। और जहाँ पर्वतमाला की सफ़ेद दीवारों को सूरज की किरणें चीर रही थीं, वहीं बर्फ और पत्थरों से ऊपर धुएँ या भाप के नीलाभ हरे स्तम्भ खड़े थे, जो बहुत कुछ विशाल मानव-मूर्तियों से लगते थे। वे पूरे भूदृश्य को एक भयानक और अलौकिक पहलू दे रहे थे।

उन स्तम्भों की ओर संकेत करते हुए मैंने कहा, "मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि ये क्या हैं।"

"आप कोशिश भी न करें," सूखी हँसी के साथ चोरोसोव ने कहा। "आप प्रकृति को प्यार करते हैं, लेकिन उसका विश्वास नहीं करते।"

"पर आप चट्टानों में इस कई तरह की लाल-लाल रोशनी की, नीले-हरे स्तम्भों की, और इन चमकदार बादलों की क्या कैफ़ियत देते हैं?"

"बहुत आसानी से—ये पहाड़ी भूत हैं।

मैं उसकी ओर घूमा किन्तु उसके गम्भीर चेहरे पर मुस्कराहट का लेश भी नहीं देख सका।

"नहीं, मैं मज़ाक नहीं कर रहा", उसने उसी स्वर में कहा। "क्या आप समझते हैं कि इस झील का यह नाम केवल इसके अलौकिक सौंदर्य के कारण ही पड़ा? अपने सौंदर्य के अलावा यह झील बदनाम भी है। यह चित्र अंकित करने में मेरी जान

जाने लगी थी। मैं वहाँ १६०६ में गया था और १६१३ तक बीमार रहा।"

मैंने उस झील के बारे में प्रचलित किम्वदन्ती सुनाने का कलाकार से अनुरोध किया। हम खुरदरे पीले-नीले मङ्गोलियन कंबल से ढके, कोने में पड़े एक बड़े सोफ़े पर बैठ गये जहाँ से हम 'देनी-दर' देख सकते थे।

चोरोसोव ने शुरू किया, "इस झील की सुन्दरता ने बहुत दिनों से लोगों को आकृष्ट किया है किन्तु जो इसके किनारे पहुँचे, किसी अलौकिक शक्ति ने अकसर उनकी हत्या कर डाली। मैंने भी इसका हत्यारा असर महसूस किया,--लेकिन वह दूसरी कहानी है। इस झील के बारे में यह आश्चर्यजनक बात है कि गर्मियों के गर्म दिनों में ही इसकी सुन्दरता सर्वाधिक रहती है और ठीक उसी समय इसकी संहार-शक्ति भी सर्वाधिक रहती है। लोगों ने ज्योंही चट्टानों में वह ख़ून-सी लाल रोशनी और नाचते हुए पीले-हरे भूत देखे कि वे विचित्र अनुभूतियों से भर गये। लगा कि पास की तुषारावृत चोटियाँ अपने पूरे पाशविक बोझ से उन्हें दवा रही हैं और उनकी आँखों के सामने रोशनी बुरी तरह टिमटिमाने लगी है। उन्हें बहकाकर गोल, सिरफटे पहाड़ की ओर ले जाया गया जहाँ उन्होंने नीले-हरे पहाड़ी भूतों को चमकदार हरे-से बादल के चारों ओर नाचते देखा। लेकिन ज्योंही वे वहाँ पहुँचे कि सब कुछ ग़ायब हो गया, रह गईं सिर्फ़ उदास, नङ्गी, संतरी जैसी दरारें। कठिनाई से साँस लेते

और अपने पाँव घसीटते, सहसा असहाय और अत्यन्त दुखी होकर वे अभागे उस संहारक झील से रेंगते हुए दूर जाने लगे। मगर उन्हें रास्ते में मरना ही बदा था। सिर्फ़ कुछ थोड़े से सबसे मज़बूत शिकारी अकथनीय कष्ट झेलकर पास के 'युर्तास' तक पहुँच सके। उनमें से कुछ लोग पीछे मर गये, बाकी बरसों बीमार रहे और सदा के लिये अपनी शक्ति और साहस से वंचित हो गये।

"प्राचीनकाल से ही देनी-दर झील की बदनामी दूर-दूर तक फैली हुई है और बहुत कम लोगों ने इसके पास जाने की हिम्मत की है। इसी तरह चिड़ियाँ और जानवर भी इससे दूर रहते हैं, और इसके बायां ओर, जहाँ भूत जमा होते हैं, घास भी नहीं उगती।

"मैं जब बच्चा था, तभी मैंने यह कहानी सुनी थी और पहाड़ी भूतों के उस राज्य में पहुँचने के लिये बराबर कसकता रहता था। बीस बरस पहले मैं अकेला वहाँ गया और झील के किनारे दो दिन बिताये। पहले दिन मैंने असाधारण कुछ भी नहीं देखा और अपने रेखाचित्र पर काफ़ी देर तक काम करता रहा। घने बादल लगातार आकाश को छिपा और रोशनी के प्रभाव को बदल रहे थे और मैं पहाड़ी वातावरण की पारदर्शिता को नहीं पकड़ पाता था। इसलिये मैंने दूसरे दिन रहने का निश्चय किया और उसके किनारे से क़रीब एक मील दूर छोटे से जङ्गल में रात बिताई। शाम तक मैं कुछ बीमार-सा महसूस

करने लगा, मेरे मुँह में एक विचित्र जलन थी, जिससे मुझे लगातार थूकना पड़ता था। मैं आमतौर से ऊँचाई को मजे में बर्दाश्त कर लेता हूँ और मुझे आश्चर्य हो रहा था कि तनूभूत वायु (rarifed air) का मुझ पर वैसा विचित्र असर पड़ रहा था।

"अगले दिन की सुबह शानदार थी जिससे पता चलता था कि मौसम अच्छा रहेगा। सरदर्द लिये मैं अपने को घसीट-कर झील तक ले गया मगर जल्दी ही अपने काम में खो गया। जब मैंने अपना रेखाचित्र समाप्त किया तो धूप बहुत कड़ी थी—पीछे मैंने उसी का उपयोग अपने अंकन के आधार के तौर पर किया—और झील को आखिरी बार देखने के लिये मैंने अपने अंकन-पट्ट (easel) को दूर धकेल दिया।

"मेरे हाथ काँप रहे थे और मैं बहुत थका और बीमार महसूस कर रहा था। और उसी समय मैंने झील के भूतों को देखा। पानी की पारदर्शी सतह पर नीचे झुके बादल की छाया तैर रही थी। उस पर तिरछी पड़ती हुई धूप क्षण भर छिप जाने के बाद और ज्यादा तेज़ लग रही थी। धूप और छाँह की ढलती सीमा पर मैंने भयानक नीलाभ-हरे रङ्ग के कई भूतों जैसे स्तम्भ देखे। वे लबादों से ढकी विशाल मानव-मूर्तियों जैसे दिखते थे। पहले वे स्थिर खड़े रहे, तब तेज़ी से चल पड़े और हवा में लोप हो गये। मैं उन्हें घूरता रहा और डर के मारे मुझे काठ मार गया।

"वह मूक दृश्य कई मिनट तक रहा। तब खून-सी लाल रोशनी चट्टानों में चमकने और टिमटिमाने लगी। उनके और अस्पष्ट छायाओं के ऊपर कुकुरमुत्ते के आकार का एक बादल चढ़ गया जिससे हरी-सी धीमी चमक निकल रही थी।

"लगा कि उस समय मेरी शक्ति लौट आयी, मेरी दृष्टि साफ़ और तीक्ष्ण हो गयी। लगा कि दूर की चट्टानें मेरे पास आ गयीं जिससे मैं उनके सीधे ढलवानों को विस्तारपूर्वक देख सकता था। मैंने अपनी कूँची उठाई और एक अमानुषिक कार्य-शक्ति के साथ रंग घोले और अपने रेखाचित्र में उस असाधारण घटना को उतार लेने की कोशिश करने लगा।

"झील की ओर से मन्द-मन्द हवा चलने लगी और पल भर में ही बादल और नीले-भूरे भूत ग़ायब हो गये। सिर्फ़ लाल-रोशनी ही चट्टानो में अशुभ के लक्षण की भाँति टिमटिमाती रही और उसके टूटे-फूटे प्रतिबिम्ब झील की सतह पर नाचते रहे। मेरी उत्तेजना दूर हो गयी किन्तु बीमार होने की अनुभूति तेज़ी से बढ़ती गयी; लगता था कि अंकन-पट्ट और कूँचियों को पकड़े मेरी उँगलियों से मेरे प्राण जैसे निकले चले जा रहे हों। तुरन्त उस जगह से चले जाने की अदम्य इच्छा के साथ अशुभ का पूर्वाभास मेरे मन पर छा गया। मैंने अपना रंग का डिब्बा बन्द किया और अपने सामान इकट्ठे कर लिये। एक भयावना बोझ मेरी छाती और सिर को दबाने लगा।

"हवा तेज़ होती गई जिससे झील का पारदर्शी हल्का-नीला

आईना चूर-चूर हो गया। बादलों ने पहाड़ों की चोटियों को ढक लिया और मेरे आसपास की दुनिया के स्पष्ट रंग धुँधले होते गये। झील की आकर्षक निर्मल सुन्दरता उदास गम्भीरता के रूप में परिणत हो गयी, जिस लाल रोशनी में भूत नाचते थे, वह बुझ गयी और सिर्फ़ अँधेरी दरारें और तुषार के धब्बे रह गये।

"जब मैंने झील की ओर से मुँह मोड़ा तो तकलीफ़ से चलनेवाली मेरी साँस मेरे सीने में कष्ट के साथ सिसकार उठी। मैं दुःस्वप्न में अभिभूत की भाँति लड़खड़ाता हुआ उस ओर बढ़ चला जहाँ मेरे पथप्रदर्शक मेरा इन्तज़ार कर रहे थे—उन्होंने देनी-दर के पास जाने से इनकार कर दिया था। पहाड़ मेरे सामने आन्दोलित हो उठे, बेकाबू कर देनेवाली मतली ने मेरा रहा-सहा बल भी छीन लिया। बार-बार मैं गिर पड़ता था और बेत-रह हरारत के कारण काफ़ी देर तक पड़ा रहता था। मुझे याद नहीं कि कैसे मैं अपने पथप्रदर्शकों के पास तक पहुँचने है समर्थ हुआ, लेकिन यह कोई महत्व की बात नहीं। महत्वपूर्ण बात यह है कि अपने रेखा-चित्रों की पेटी अपनी पीठ पर लिये मैं उनके पास पहुँच गया।

"मेरे पथप्रदर्शकों ने दूर से ही मेरी हालत देखी। मुझे उठा-कर वे अपने तम्बू में ले गये और मेरी बिस्तर की गठरी पर सिर रखकर लिटा दिया।

"तुम्हारा काम तमाम हो गया, चोरोसोव," मुख्य पथप्रदर्शक ने उत्तेजनाहीन स्वर में मुझसे कहा।

"मैं मरा नहीं, जैसा कि आप देख ही रहे हैं, मगर बहुत दिनों तक बीमार रहा। मैं बेचैन और उदास रहने लगा जिससे मेरा जीना और काम करना दूभर हो गया। सिर्फ़ एक वर्ष के बाद ही मैंने अपना वड़ 'देनी-दर' अंकित किया और फिर जब मैं अपने पाँव पर खड़ा हो गया तो यह धीरे-धीरे तैयार किया। आप देख रहे हैं कि देनी-दर झील और उसके पहाड़ी भूतों के बारे में सत्य का पता लगाने के लिये मैं भारी कीमत दे चुका हूँ।"

चोरोसोव चुप हो गया। जिस बड़ी खिड़की में कई शीशे लगे थे, उससे मैं बाहर अँधेरी उपत्यका को एकटक देखता रहा। उस कहानी से मैं बहुत प्रभावित हुआ था। मेरे पास ऐसा कोई कारण न था जिससे मैं चोरोसोव की कहानी की सच्चाई पर सन्देह करता, किन्तु साथ ही उस चित्र में जिस विचित्र घटना को उतारा गया था, उसकी कैफ़ियत भी मैं नहीं दे पाता था।

हमलोग खाने के कमरे में गये। मेज़ के ऊपर लटकती किरासन की तेज़ बत्ती ने उस विचित्र कहानी से उत्पन्न रहस्य-मयता की छाया को धीरे-धीरे दूर कर दिया। एक तरह से अपने को रोकने पर भी मैं चोरोसोव से पूछ ही तो बैठा, "तो अगर मैं उस इलाके में लौटूँ तो किस तरह पहाड़ी भूतों की झील ढूँढ़ निकालूँ?"

"अहा! और एक शिकार होनेवाला है!" चोरोसोव मुस्कुराया। "ख़ैर, आप यह तो नहीं कह सकेंगे कि मैंने आपको चेतावनी नहीं दी। तो, लिख लीजिये।"

मैंने अपनी थैली से नोटबुक और पेन्सिल निकाली।

"कातून पर्वतमाला के पूर्वी छोर पर चुआ और कातून के बीच के तुषारक्षेत्र में एक गहरे दर्रे में वह है। आप आरगुत के किनारे-किनारे उस नदी के मुहाने से उसकी दाहिनी सहायक नदी यूनीउर तक २५ मील जाइये। उसे ढूँढ़ने में आपको कठिनाई न होगी क्योंकि इस जगह आरगुत नदी तेज़ी से मोड़ लेती है और सहायक नदी का मुहाना एक चौड़ी समतल ऊँची ज़मीन पर है। वहाँ से आप आरगुत के बायें किनारे-किनारे ४ मील जाइये जब दाहिनी ओर आपको एक छोटा-सा उद्गम मिलेगा जिसे आप चाहें तो सोता कह सकते हैं। उसकी घाटी बहुत ऊँची है और कातून पर्वतमाला को बहुत दूर तक काटती है। उस घाटी को पकड़ कर आगे बढ़िये। वह एक सूखी घाटी है जहाँ बड़े-बड़े खूब फैले बबूल के पेड़ हैं। वहाँ नदी-प्रपातों और एक छोटे-से जल-प्रपात के ऊपर चढ़ जाइये और उस घाटी को पकड़कर दाहिनी ओर जाइये। वहाँ उस घाटी की ज़मीन समतल और चौड़ी है और वहीं पाँच झीलों का एक ताँता है जो एक दूसरी से एक मील से ज़्यादा दूर नहीं हैं। पाँचवीं झील वहाँ है जहाँ जाकर वह घाटी पहाड़ की दीवार से टकराती है। वही झील देनी-दर है।

"बस इतना ही। सिर्फ़ ख़याल रखिये कि सही दर्रा मिले क्योंकि वहाँ घाटियों और झीलों की भरमार है। हाँ, मुझे रास्ते का एक अच्छा निशान अभी तुरन्त याद पड़ गया। उद्गम

ह मुहाने पर जहाँ आपको आगुत से मुड़ना है वहाँ एक छोटा-सा दलदल है जिसके किनारे पर एक बहुत ऊँचा सूखा बबूल है। उसमें डाली एक भी नहीं है और उसकी चोटी 'V' के आकार की है। अगर वह अब भी वहाँ मौजूद हो तो रास्ता ढूँढ़ने में वह आपकी मदद करेगा।"

मैंने चोरोसोव की हिदायतें लिख लीं मगर उस समय मुझे बिलकुल खयाल नहीं था कि वे हिदायतें कितनी महत्वपूर्ण सिद्ध होंगी।

दूसरे दिन सुबह मैंने फिर चोरोसोव के चित्रों को देखा मगर ऐसा कुछ भी नहीं मिला जिसकी तुलना देनी-दर से हो। तुषार-मंडित पर्वतों के दो रेखाचित्र मैंने खरीद लिये और बबूलों का कलम से अंकित एक रेखाचित्र मुझे भेंट किया गया जिसमें मेरे इन प्रिय वृक्षों को उनकी खूबी की गहरी जानकारी के साथ अंकित किया गया था।

जब मैं विदा लेने लगा तो चोरोसोव ने मुझ से कहा, "मैं देख रहा हूँ कि देनी-दर आपको कितना पसन्द है लेकिन मैं इसे अपने से अलग नहीं कर सकता। मैं आपको एक छोटा रेखाचित्र दूँगा जो मैंने उस झील के पास बनाया था। मगर वह वहाँ ज़रा रुके, "मै वह आपको अपने वसीयतनामा में दूँगा। उससे भी अलग होना मै बर्दाश्त नहीं कर सकता। मगर चिन्ता मत कीजिए, इसमें बहुत देर नहीं लगेगी। वह आपको लोग भेज देंगे," कलाकार ने यह बात पूर्ण अनाशक्ति के संकोच के भाव से कही।

मैंने उनके दीर्घ-जीवन की कामना की और फिर मिलने की आशा प्रकटकर घोड़े पर चल पड़ा। मगर नियति ने हमें सदा के लिए अलग कर दिया।

फिर लौटकर अलताई आने में मुझे बहुत समय लग गया। चार वर्षों के कठोर परिश्रम ने मुझे कुछ दिनों के लिये कार्य-कर्ताओं से अलग कर दिया। तैगा में काम करनेवालों की पेशे की बीमारी भयानक गठिया मुझे छै महीनों तक बिस्तर पकड़ाये रही। और उसके बाद मुझे हृद्रोग परेशान करने लगा।

इस अनिवार्य निकम्मेपन से ऊबकर मैं दक्षिण के एक स्वास्थ्य-निवास से कुहरा भरे मगर अपने प्रिय लेनिनग्राद भाग आया। मुख्य भूगर्भीय प्रशासन ने मुझे मध्य एशिया में सफीदकान में पारे के संचय का निरीक्षण करने के लिये भेजा। मुझे आशा थी कि धूप से जगमग खुश्क तुर्किस्तान में मैं अपने शरीर से गठिया को झाड़ फेंकूँगा और तब उत्तर के बीहड़ बियाबान में लौटूँगा जिसने सदा के लिये मेरे मन को मोह लिया था। लगता था कि मैं ऐसा प्रेमी हूँ जिसकी यही एकमात्र कामना है। बड़ी कठिनाई के बाद ही मैं साइबेरिया के प्रति अपने अन्तर्निहित लोभ को दबा सका।

वसन्त की एक गर्म सन्ध्या को जब मैं अपने घर में माइ-क्रोस्कोप पर काम कर रहा था तो डाकिया मुझे एक पार्सल दे गया जिससे मुझे खुशी से ज्यादा अफ़सोस ही हुआ। देवदार के

चिकने तख़्तों की एक छोटी-सी पेटी में देनी-दर का रेखाचित्र पड़ा था। कलाकार चोरोसोव की मृत्यु हो चुकी थी।

ज्योंही मेरी दृष्टि पहाड़ी भूतों की झील पर पड़ी कि मेरे अन्दर स्मृतियों की बाढ़ आ गयी। दूर, दुर्गम देनी दर की सुन्दरता ने मुझे बेचैन उदासी से भर दिया। मैंने फिर माइ-क्रोस्कोप के पास जाकर इस भावना को झाड़ फेंकने की कोशिश की। उसके मंच पर मैंने सफ़ेदकान पारे का एक नया, पिसा हुआ टुकड़ा रखा और बहुत दिनों के अभ्यास से प्राप्त दक्षता के साथ ट्यूबुस (Tubus) को नीचा किया, माइक्रोमीटर से फ़ोकस को ठीक किया और उसे पारे के ओर के एक-एक करके स्फटिकीभवन (Crystalization) पर डाले रहा। वह नमूना क़रीब विशुद्ध पारे की पतली चिकनी प्लेट था—और अब तक मुझे उसके रूप-निर्णय में बिलकुल सफलता नहीं मिली थी क्योंकि उसके रङ्ग की सूक्ष्म आभायें बिजली की रोशनी में दिखाई नहीं पड़ती थीं। मैंने सिलवरमैन के तिर्यक प्रकाश के लिये अपारदर्शक प्रकाशक को बदल दिया और एक 'डे-लाइट' बल्ब जलाया, हमारे देश का बना जो औज़ार क्षुद्र विश्व में सूरज की जगह लेने के लिये अच्छा है।

चूँकि पहाड़ी भूतों की झील तब भी मेरी मन की आँखों के सामने थी, इसलिये जब मैंने नीलाभ पृष्ठभूमि में ख़ून-सी लाल रोशनी माइक्रोस्कोप में देखी—ठीक वैसी ही जैसी उस चित्र में देख कर मैं उतना ज़्यादा प्रभावित हुआ था—तो मुझे

आश्चर्य भी नहीं हुआ। लेकिन पल भर के बाद ही मैं समझ गया कि चित्र नहीं पारे के ओर के भीतरी प्रतिबिम्ब देख रहा हूँ। मैंने मंच को ज़रा घुमाया और खून जैसी लाल रोशनी टिमटिमाने लगी, बुझने या गहरे रक्ताभ भूरे रङ्ग में मिल जाने लगी जब कि इस खनिज की सतह का अधिकांश ठण्डे इस्पात की तरह चमकता रहा। मेरे दिमाग़ में एक विचार रूप लेने लगा और उसकी उत्तेजना से काँपते हुए मैंने डे-लाइट की चौड़ी रोशनी चोरोसोव के रेखाचित्र पर डाली और नुकीले पहाड़ों की जड़ में चट्टानों के बीच रंग की वे आभायें ही देखीं जिन्हें मैंने तुरन्त माइक्रोस्कोप में देखी थीं।

जल्दी से मैंने अपनी रंगसूची उठायी और गुर (formulae) साबित हो गया···लेकिन उसका वर्णन करने की ज़रूरत नहीं है। आप जानते हैं कि खनिजशास्त्र ने सब तरह की सम्भव आभाओं और द्युतियों की रंगसूची बनायी है जिसमें क़रीब सात सौ रंग हैं; हर आभा का अपना अलग परिचय है और उन आभाओं के जोड़ से एक खास खनिज गुर के मुताबिक साबित होता है। संक्षेप में गुर ने साबित कर दिया कि पहाड़ी भूतों के राज्य के चित्र में चोरोसोव ने जिन रंगों का व्यवहार किया था, वे रंगसूची के अनुसार विभिन्न प्रकार से उद्भासित तथा विभिन्न कोणों से देखने पर तथा विज्ञान में जिसे प्रकाश-तरंगों का व्याघात कहते हैं, उन प्रकाश-तरंगों की पेचीदा क्रिया-प्रक्रिया की हर हालत में बिलकुल मेल खाता था।

मैंने देनी-दर के रहस्य का पता लगा लिया था। लेकिन मुझे अपने आप पर बेतरह झुँझलाहट थी कि यह काम मैंने अलताई में क्यों नहीं किया।

मैंने टेलीफ़ोन से टैक्सी बुलाई और जल्दी ही उस बाड़ तक पहुँच गया जिसके पीछे रसायन प्रयोगशाला की ऊँची-ऊँची खिड़कियाँ चमक रही थीं। सौभाग्य से मुझे अपने एक पुराने मित्र मिल गये जो रसायनशास्त्री और धातुशास्त्री थे।

"आओ भई, साईबेरिया के भालू!" उन्होंने मेरा स्वागत किया। यहाँ "तुम्हारा आना कैसे हुआ? क्या फिर तुरंत कोई विश्लेषण करना है?"

"नहीं, दिमित्री मिखाइलोविच। मुझे कुछ सूचना चाहिये। पारे के तत्व क्या हैं?"

"अहा, पारा तो ऐसा धातु है कि उसके बारे में मोटी किताब लिखी जा सकती है। तो मैं कहाँ से शुरू करूँ, कहो!"

"अच्छा, वह ३७० डिग्री सेन्टीग्रेड में उबलता है, लेकिन किस ताप में भाप बनकर उड़ने लगता है?"

"मेरे प्यारे इञ्जिनीयर, कड़ाके के पाले के अलावा वह हर ताप में उड़ता है।"

"तो वह उड़नेवाला धातु है?"

"हाँ, उसका आपेक्षिक गुरुत्व देखते हुए बेतरह उड़नेवाला है। याद रखो, २० डिग्री सेन्टीग्रेड में पारेवाली हवा के एक घन मीटर में ०·१५ ग्राम और १०० डिग्री सेन्टीग्रेड में २·५ ग्राम तक।"

"और एक सवाल है : क्या पारे का धुआँ अपने आप चमकता रहता है, और, अगर ऐसा है तो उसका रङ्ग कैसा रहता है ?"

"नहीं, वह अपने आप नहीं चमकता, किन्तु जहाँ बहुत घनीभूत रहता है, वहाँ गतिशील रोशनी में वह नीला-हरा रंग देता है। जब तनूभूत वायु में वह बिजली के बहाव में डाला जाता है, तो हरा-सा सफ़ेद रंग देता है।"

"अब सब साफ़ हो गया। तुम्हें धन्यवाद, बहुत धन्यवाद !"

पाँच मिनट के बाद मैंने अपने डाक्टर की दरवाज़े की घंटी बजाई। मेरी आवाज़ सुनकर वह उपकारी वृद्ध जल्दी से दौड़कर हाल में आ गये।

"क्या हो गया ? क्या फिर आपको अपना हृदय धोखा दे रहा है !"

"नहीं, वह तो बिलकुल ठीक है। मैं आपसे सिर्फ़ एक बात पूछने के लिये आ गया। पारे के धुएँ की विषक्रिया के प्रधान लक्षण क्या-क्या हैं ?"

"हूँ, पारे की विषक्रिया—बहुत ज़्यादा थूक होना, उल्टी होना, लेकिन धुएँ के के बारे में तो मुझे देखना पड़ेगा। अन्दर आ जाइये।"

"जी नहीं, मैं तो सिर्फ़ पलभर ठहर सकता हूँ। कृपया जल्दी कीजिये।"

वृद्ध अपने अध्ययनकक्ष में लौट गये और हाथ में एक खुली किताब लिये तुरन्त वापस आये। "यह लीजिये, पारे का

धुआँ···रक्तचाप कम हो जाता है, ज़बर्दस्त मानसिक उत्तेजना रहती है, साँस बहुत तेज़ और रुक-रुक कर चलती है, और अन्त में हृदय की गति रुक जाने से मौत हो जाती है।"

"बहुत खूब!" मैं अनजाने ही चिल्लाया।

"क्या बहुत खूब? पारे की विषक्रिया से मौत?"

डाक्टर की हैरानी पर मैं बच्चे की तरह हँसा और लपकता हुआ सीढ़ियों से नीचे उतरा। अब मैं जान गया था कि मेरा अनुमान बिलकुल सही था।

जब मैं घर लौटा तो मुख्य भूगर्भीय प्रशासन के प्रधान को बुलाया और उनसे कहा कि अपने काम की भलाई इसी में है कि मैं तुरन्त अलताई चल दूँ। मैंने उनसे अनुरोध किया कि क्रासुलिन को मेरे साथ जाने दें—क्रासुलिन स्नातकोत्तर विद्यार्थी था और मुझे भरोसा था कि उसका तगड़ा शरीर और बढ़िया दिमाग़ मेरी बिगड़ी हुई हालत पर पलड़ें ठीक रखेगा।

अन्त में मई के बीच में उस झील तक पहुँचना संभव हो सका। क्रासुलिन और तैगा के दो पुराने आदमियों को अपने साथ लेकर मैं चुया की बड़ी सड़क के किनारे के इन्या नामक गाँव से झील की ओर चल पड़ा। स्वर्गीय कलाकार ने रास्ते का जो ब्यौरा दिया था, उसे मैंने याद कर लिया था और अपनी बग़ल की जेब में मैंने वह पुरानी बेतरह फटी नोट-बुक रख ली थी जिसमें मैंने चोरोसोव की हिदायतें अक्षरशः लिख ली थीं।

जब एक शाम को मेरे उस छोटे से दल ने उपत्यका के मुहाने के पास एक सूखी जगह पर अपना तम्बू गाड़ा जिसके सामने एक सूखा बबूल था जो 'V' के आकार का लगता था तो मैंने बढ़ती हुई उत्तेजना के साथ समझा कि कल मेरे अनुमानों की अन्तिम परीक्षा होगी। कल्पना के आधार पर बौद्धिक अनुमान लगाना क्या सही तरीका है या मैंने ओईरोत कलाकार के पहाड़ी भूतों से अधिक अवास्तव कोई कल्पना कर डाली ?

कासुलिन को मेरी उत्तेजना का पता चल गया और वह उस छोटी-सी ढिबरी के पास आया जहाँ से मैं दो भुजावाले बबूल को देख रहा था और मेरी बग़ल में बैठ गया।

"व्लादीमीर येवगेनेयेविच," उसने धीरे से मुझे याद दिलाया, "आपने वायदा किया था कि पहाड़ों के बीच पहुँचने पर आप अपने इस अभियान का उद्देश्य मुझे बतायेंगे।"

"मैं आशा करता हूँ कि कल ही पारे का एका बड़ा संचय मिल जायगा, शायद अंशतः अपने आदिकालीन रूप में। तुम जानते हो कि पारा असाधारणतः छितरा और बहुत कम घने रूप में मिलता है। दुनिया भर में पारे की एकमात्र बड़ी खान......"

"स्पेन में अलमादेन में है," कासुलिन ने बतला दिया।

"हाँ, कई सदियों से अलमादेन आधी दुनिया को पारा देता आया है क्योंकि वहाँ कभी विशुद्ध पारे की एक छोटी-सी झील

मिल गई थी। मुझे पक्का विश्वास है कि यहाँ की कुछ चट्टानें पूरी की पूरी विशुद्ध पारे की बनी हैं, बशर्ते कि, यानी……"

"लेकिन व्लादीमीर येवगेनेयेविच, अगर हमें ऐसा कोई उद्गम मिल जाय तो हम दुनिया भर में पारे की अर्थ-व्यवस्था में क्रांति कर देंगे।"

"बिलकुल ठीक कह रहे हो, मेरे भाई! इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग और चिकित्सा-विज्ञान में पारा अत्यन्त महत्वपूर्ण धातु है। लेकिन अब हमें ज़रूर सो जाना चाहिये, भोर होने से पहले ही हमें उठ जाना पड़ेगा। लगता है कि कल बादल रहेगा और हमें ठीक वही चाहिये।"

"ऐसा क्यों?"

"क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मुझपर या तुम पर ज़हर का असर हो। पारे का धुआँ ऐसा नहीं कि परवाह न की जाय। इसी वजह से तो पारे के इस संचय का सदियों से पता नहीं लग सका है। कल हम देनी-दर के पहाड़ी भूतों का सामना करेंगे।"

एक गुलाबी धुन्ध पहाड़ों की चोटी पर छाता जा रहा था। वह उपत्यका अँधेरी हो गयी। तुषार से ढकी पहाड़ों की ऊँची चोटियाँ ही सिर्फ़ सूरज की रोशनी में चमक रही थीं। मगर हम अब सूरज को नहीं देख पाते थे। फिर पहाड़ों पर चढ़ती हुई धूमिल सन्ध्या में वे भी ग़ायब हो गयीं। कुहरा भरे आसमान में उदास तारे टिमटिमा रहे थे। कुछ देर तक मैं

पड़ाव की धुनी के पास बैठा रहा, लेकिन अन्त में मेरी उत्तेजना शान्त हुई और मैं अन्दर गया।

किसी कारण से अगला दिन मेरी स्मृति में कई असम्बद्ध चित्रों की एक शृंखला के रूप में है।

तीसरी और चौथी झीलों के बीच की उपत्यका की चौड़ी और बिलकुल बराबर ज़मीन मुझे साफ़-साफ़ याद है। वह ऐसी नम ज़मीन थी जिस पर हरी काई का गलीचा बिछा था और पेड़ एक न था और दोनों किनारे ऊँचे-ऊँचे देवदारों की पाँतें थीं। उन पेड़ों में एक तरफ़ एक टहनी तक नहीं थी और दूसरी तरफ़ बड़ी-बड़ी डालें थीं जो सब पहाड़ी भूतों की झील की ओर इशारा कर रही थीं जैसे ऊँचे खम्भों पर भयावने झंडे हों। झुके और उदास बादल देवदारों के ऊपर तिर रहे थे मानों जल्दी से उस रहस्यमय झील तक पहुँचना चाहते हों।

चौथी झील छोटी और गोल थी। छोटी-छोटी भूरी लहरों से भरे उसके नीलाभ-भूरे पानी से नुकीले पत्थरों की एक पाँत उभरी हुई थी। हम उन पत्थरों पर से दूसरी ओर को गुज़रे, बौने देवदारों की घनी झुरमुट से निकले और दस मिनट के बाद मैं पहाड़ी भूतों के झील के किनारे पर खड़ा था। उसके पानी पर और पर्वतमाला की तुषारावृत चोटियों पर एक विषादमय धूमिल रंग छाया था। लेकिन मैं पहाड़ी भूतों के मन्दिर को तुरन्त पहचान गया जिसने कुछ वर्ष पहले चोरोसोव की स्टुडियों में मुझे मोह लिया था।

नुकीले पहाड़ की जड़ में इस्पात के जैसे रंग के टीलों पर पहुँचना बहुत कठिन काम साबित हुआ। लेकिन जब हमारे भू-गर्भीय हथौड़े ने ज़ोर से झनझनाते हुए पारे का पहला भारी टुकड़ा तोड़ लिया तो हम सारी कठिनाई भूल गये। आगे चल-कर वे टीले ढालू गलियारे से छोटी निम्नभूमि में उतर गये जिस पर एक हल्का-सा धुआँ मँड़रा रहा था। वह निम्नभूमि गर्म कीचड़-पानी से भरी थी। उसके चारों ओर ओर से गर्म फौआरे छूट रहे थे और निम्नभूमि की दीवार को एक धुन्ध से ढके जा रहे थे।

मैंने कासुलिन से कहा कि सिर्फ़ देखकर अन्दाज़ लगाओ कि ओरवाला स्तर कितना बड़ा है और मज़दूरों के साथ उस धुन्ध से गुज़रता हुआ पहाड़ में पहुँचा।

"यह क्या है, सरदार?" मज़दूरों में से एक ने यकायक पूछा!

मैंने मुड़कर देखा—चट्टानों से आधी छिपी और उसकी नतो-दर सतह (concave surface) एक भयावनी पारदर्शी चमक से जगमगाती हुई—पारे की एक झील ही तो थी। मेरा स्वप्न साकार हो चुका था। अवर्णनीय उत्तेजना के साथ मैं उस झील की संकोचनशील सतह पर झुक गया और उसके पकड़ में न आनेवाले, फिसलते पानी में अपने हाथ डुबो दिये। वहाँ हज़ारों टन पारा था—अपने देश को हमारी देन। मेरे बुलाने पर कासु-लिन दौड़ आया और गद्गद होकर मूर्तिवत् चुपचाप खड़ा रहा।

लेकिन मुझे अपने आवेग को रोकना और अपने साथियों को जल्दी करने के लिये कहना पड़ा। तभी मैं अपने सिर में भारीपन और मुँह में जलन महसूस करने लगा था—जो पारे की विषक्रिया के भयानक लक्षण थे। अपने कैमरा से मैंने झील के चित्र उतारे, मज़दूरों में से एक ने हमारी पानी की बोतलों को छोटी झील की पारे से भर लिया, क़ासुलिन और अन्य मज़दूरों ने झील और ओरवाले स्तर की फुर्ती से नाप ले ली। लगा कि सारा काम बिजली की रफ़्तार से हो गया, फिर भी वापसी सफ़र हमने बहुत धीरे-धीरे किया; हम बेचैन होने लगे और आतंक के बढ़ते हुए भाव को ज़बर्दस्ती दबाना पड़ा। हम बाँये किनारे से लड़खड़ाते हुए गुजर रहे थे, तब बादल अलग हो गये और हमें हीरक-शृंग की एक झाँकी मिली। सूरज की तरछी किरणों ने बहुत दूर के दर्रे से अपना रास्ता बनाया और यकायक चमकदार पारदर्शी रोशनी से झील की वह उपत्यका जाग उठी। मुड़ते ही मैंने उस जगह के ऊपर नीलाभ-हरे भूतों को नाचते देखा जहाँ से हम तुरन्त आये थे। सौभाग्य से वह किनारा ज़्यादा बराबर होता गया और जल्दी ही हम अपने घोड़ों के पास पहुँच गये। "जान बचाने के लिये घोड़ों को ज़ोर से दौड़ाओ, साथियो," अपने घोड़े को घुमाता हुआ मैं चीख उठा।

शाम तक हम उपत्यका की दूसरी झील तक पहुँच गये। लगता था कि अपनी फैली हुई डालियों से देवदार के पेड़ हमें रोकना चाहते थे। उस रात को हमने बहुत अच्छा नहीं

महसूस किया, लेकिन हमारा स्वास्थ्य बिगड़ा नहीं, जैसा कि पीछे देखा गया।

इससे ज़्यादा कुछ नहीं है। जादू की उस झील ने सोवियत यूनियन को अपने अनेक उद्योगों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिये काफ़ी पारा दिया है और दे रही है।

और मैं बराबर अपनी स्मृति में सत्यसंधानी के और पर्वत की आत्मा के निर्भय अन्वेषक के प्रति कृतज्ञता का भाव रखूँगा।

ओगलोई-खोरखोई

मंगोलीय जन-गणतांत्रिक सरकार के अनुरोध से मैंने मंगोलिया की दक्षिण सीमा के बराबर भूमि-सर्वे का संचालन किया था। दो गर्मियों में वहाँ काम करने के बाद मेरे लिये मंगोलिया और चीन की सीमा के दक्षिण-पश्चिम कोण पर दो या तीन ज्योतिर्वैज्ञानिक विन्दु स्थापित कर देना ही बाकी था। उस जलहीन, करीब अगम्य बालुकामय प्रदेश में यह काम करना आसान नहीं था। ऊँटों का एक बड़ा काफ़िला तैयार करने में बहुत समय लगेगा, और इसके अलावा, यात्रा का यह प्राचीन तरीका मुझे असह्यरूप से मन्दगामी लगता था क्योंकि मुझे मोटर-गाड़ी से तेज़ दौड़ने की आदत थी। मेरी डेढ़ टनवाली 'गाजा' गाड़ी तब तक विश्वस्तता के साथ मेरी सेवा कर चुकी थी, किन्तु उस भीषण बालुकामय प्रदेश की उस से यात्रा करना पागलपन होता। मगर दूसरी कोई उपयुक्त सवारी नहीं मिल रही थी।

जब हम मंगोलीय विज्ञान समिति के प्रतिनिधि के साथ इस समस्या पर माथापच्ची कर रहे थे, तभी एक बड़ा सोवियत वैज्ञानिक अभियात्री दल यूलान-बतोर में आ पहुँचा। उसकी सारे हर्बे-हथियारों से मज़े में लैस चमचमाती लारियों ने और रेगिस्तान की यात्रा के लिये उनमें लगे सुपर बैलून टायरों ने यूलान-बतोर में एक सनसनी पैदा कर दी। मेरा ड्राइवर ग्रिशा बहुत कम उम्र का और बड़ा चंचल नौजवान और मेकानिक था किन्तु वह कई बार अभियात्री दल के गराज में हो आया था जहाँ उसने उन आश्चर्य-जनक टायरों को डाह के साथ तिरछी नज़र से देखा था। उसके सुझाव से और विज्ञान समिति की सहायता प्राप्त करके मैं अपनी लारी के लिये नये "जूते" लाने में समर्थ हुआ। यह "जूते" ग्रिशा का ही शब्द है।

ये "जूते" असल में बिलकुल छोटे चक्के थे—ब्रेक-ड्रमों से भी छोटे—जिनमें हमने बड़े-बड़े गुब्बारेवाले टायर फिट कर दिये जिनकी गोटियाँ बड़ी और उभरी हुई थीं। मैं ड्राइवर के साथ बैठता जहाँ 'लाग-बुक' के जाँच करने पर मालूम हुआ कि वे सुपर-बैलून टायर आश्चर्यजनकरूप से कार्यदक्ष हैं। जहाँ बालू सबसे ढीली और सबसे गहरी थी, ऐसे स्थानों में भी हमारी लारी जैसी आसानी के साथ दौड़ी, उससे मैं दंग रह गया। मुझे हर प्रकार के बीहड़ स्थानों में मोटर पर चलने का यथेष्ट अनुभव है। उधर ग्रिशा ने कसम खाई कि इन गुब्बारों

पर वह हमें बिना कहीं रुके, काले गोबी रेगिस्तान के पूर्व से पश्चिम तक आर-पार ले जा सकता है।

अभियात्री दल के मोटर मेकनिकों ने हमें सुपर-बैलूनों के अतिरिक्त कई उपदेश-निर्देश दिये और हमारे प्रति शुभकामना प्रकट की।

उसके बाद ही हमारे चक्कों पर चलनेवाले मकान ने यूलान-बतोर से विदा ली और धूल के धुन्ध में त्सेत्सरलिग को रवाना हुआ। चूँकि हम अकसर मोटर पर यात्रा करते थे, इसलिये लोगों तथा सामानों को यथास्थान रखने का हमने पक्का नियम लिये एक छोटी-सी मुड़नेवाली मेज़ की विशेष व्यवस्था थी। एक छोटे-से जहाज़ी कुतुबनुमा के ज़रिये मैं दिशा तथा गतिद्योतक से दूरत्व लिखता जाता था। हमारी लारी के पीछे के हिस्से में 'वृक्षहीन मैदानों के जहाज़' तिरपाल से ढके हमारे सुपर बैलून पड़े थे और हमारे पानी की टंकी तथा पेट्रोल के अतिरिक्त पीपे खड़खड़ा रहे थे। वहीं अतिरिक्त पुर्ज़ों और ब्यूबों से भरी दो पेटियाँ भी खड़ी थीं। उनपर हमारा बेतार-चालक और गणितज्ञ अर्थात् मेरा सहायक, तथा चतुर बूढ़ा मङ्गोल दारखन जो हमारा पथप्रदर्शक और दो भाषिया था जिसने बड़ी उथल-पुथल भरी लम्बी ज़िन्दगी बिताई थी, बैठे थे। वह ड्राइवर के पास वाली पेटी पर बैठा था जिससे वह बग़लवाली खिड़की से झाँक कर मिशा को राह दिखला सके। मेरा हमनाम और उत्साही शिकारी, बेतार-चालक मिशा दूरबीन और रायफल से लैस होकर

दूसरी पेटी पर बैठा था। पैमायशी दूरबीन तथा सर्वत्र व्यवहृत ब्राएडट यंत्र का भार संभालना मिशा का काम था। लारी का बचा हुआ हिस्सा हमारे गोल बँधे बिस्तरों और तम्बू, रसोई के बर्तनों, भोजन सामग्री तथा यात्रा के अन्य सामानों से खचाखच भरा था।

हमारा रास्ता ओरोक नोर झील और वहाँ गणतंत्र के सब से दक्षिण छोर पर—ट्रांस-अलताई गोबी रेगिस्तान को—झील से क़रीब २०० मील दक्षिण को जाता था। हमारी लारी ने खंगाई पहाड़ों को पार किया और मोटर के चौड़े राजपथ पर स्थित ताजा-गोल नामक गाँव पहुँच गई, जहाँ एक बड़े गराज में हमने लारी की आखिरी बार ठीक से देखभाल की, पेट्रोल के पीपों को भर लिया और ट्रांस-अलताई गोबी की मरुभूमि से निर्णायक लड़ाई लड़ने के लिये अपने को इस प्रकार हर्बे-हथियारों से लैस कर लिया। वह मरुभूमि ऐसी थी कि अभी तक किसी ने वहाँ की यात्रा नहीं की थी। ऐसी व्यवस्था भी की गयी जिससे लौटने के समय हमें ओरोक-नोर में पेट्रोल मिल सके।

सारा काम इतनी आसानी से होता रहा कि उससे ज़्यादा कोई चाह नहीं सकता। ओरोक-नोर जाने में हमें कुछ बालू के रास्तों से गुज़रना पड़ा, लेकिन अपने जादू के सुपर-बैलून टायरों की सहायता से हम बिना दुर्घटना के ही उसके पार निकल गये और तीसरे दिन शाम को इखे पर्वत के कुछ-कुछ लाल, बराबर ढालू भागों की झाँकी मिली। गोधूलि की शीतलता में मानो खुशियाँ मनाती हुई हमारी लारी हमें लिये बालू के टीलों को

पार करती हुई प्रसन्नता के साथ हुँकारी भरने लगी। मैंने रात की ठंडक से फ़ायदा उठाने का निर्णय किया और अपनी लारी के हेड लाइटों की उछलती हुई तेज़ रोशनी के पीछे-पीछे हम क़रीब उषाकाल तक आगे बढ़ते रहे, जब एक छोटी-सी मिट्टी की पहाड़ी के बीच से हमने ओरोक-नोर झील के तटों पर छोटे-छोटे पेड़-पौधों की झाड़ियों का गाढ़े रंग का फ़ीता देखा। मिशा और पथप्रदर्शक—ये दकोनों यात्रा के अन्तिम भाग में ऊँघ रहे थे—उतर पड़े। उन्होंने लारी को खड़ी करने की जगह जल्दी ही खोज ली, जलाने के लिये कुछ लकड़ी इकट्ठी की, और शीघ्र ही हमारा यह छोटा-सा जत्था चाय पीता और भविष्य की योजना पर बातें करता हुआ, लारी की बग़ल में नमदे पर बैठा था। अब हमारा रास्ता अपरिचित स्थानों से गुज़रता था, मैं उसका नक्शा बनाना; एक ज्योतिर्वैज्ञानिक बिन्दु स्थापित करना तथा व्लादीमिरेत्सेव के पर्यवेक्षणों की जाँच करना चाहता था जिसके बारे में मुझे सन्देह था। ड्राइवर फिर लारी पर जाने का आग्रह कर रहा था, मिशा हमलोगों के लिये कोई शिकार मार लाना चाहता था और बूढ़ा दारखन स्थानीय अरात लोगों से अपने रास्ते के बारे में सब कुछ जान लेना चाहता था। मैंने जब एक दिन रुकने की घोषणा की तो उन्होंने एक स्वर से उसका समर्थन किया।

लारी की छाया कहाँ अधिक देर तक ठहरेगी, पहले इसका हिसाब लगाकर हम सब लोग अपने चौड़े कम्बल पर लेट गये।

नरकटों में नम हवा मृदु मन्द बह रही थी और गर्म इञ्जिन से आनेवाले पेट्रोल, रबड़ तथा तेल की मिश्रित गन्ध में एक अपरिचित बूटी का गन्ध आकर मिल रही थी। पीठ के बल लेटना, थके पाँवों को फैलाना और भूरे होते हुए आकाश की तरफ़ देखते रहना बड़ा आनन्ददायक लगा। मैं तुरन्त सो गया, मगर मेरी बग़ल में ग्रिशा की बराबर चलती हुई साँस की आवाज़ सुनने के पहले नहीं। पथप्रदर्शक और मिशा देर तक आपस में फुसफुसाते रहे।

गर्मी ने मुझे जगाया। लारी की छाया के अधिकांश को सूरज निगल चुका था और मेरे पाँव जला रहा था। ड्राइवर गुनगुनाकर कुछ गा रहा था और सामने के चर्क्खों की मरम्मत कर रहा था। मिशा और पथप्रदर्शक का कोई पता न था। मैं उठा, झील में तैरा, और अपने लिये तयार की गयी एक प्याला चाय पीने के बाद लारी के काम में ग्रिशा की मदद की।

दूर में बन्दूक छूटने की आवाज़ ने घोषणा की कि मिशा भी अपना समय बर्बाद नहीं कर रहा था। शाम तक हमने लारी का काम समाप्त कर लिया। मिशा कई बतख ले आया था, जिनमें से दो सुन्दर चिड़ियाँ किसी ऐसे नस्ल की थीं जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था। ड्राइवर तुरन्त शोरबा बनाने लगा और मिशा ने मध्यरात्रि का समय-संकेत सुनने के लिये एरियल निकाला तथा रेडियो को ठीक-ठाक किया। मैं अपने पर्यवेक्षण का स्थान चुनने तथा ज्योतिर्वैज्ञानिक बिन्दु स्थापित करने के

लिये पड़ाव के चारों ओर घूमने लगा। जब मैं लौट कर लारी तक आया, तब तक भोजन तैयार हो चुका था। पथप्रदर्शक अभी तुरन्त लौटा था और मिशा तथा ड्राइवर से बातें कर रहा था। मुझे जब उसने देखा तो बूढ़ा चुप हो गया।

खुली, व्यंगात्मक मुस्कान के साथ मिशा ने कहा, "मिखाइल इलिच, यह दारखिन हमलोगों को डराने की कोशिश कर रहा है। मेरे तो इसने रोंगटे खड़े कर दि थे। कसम खाता हूँ कि कल हमलोग अपने को शैतान की माँद में पायेंगे।"

"क्या बात है दारखिन?" तिरपाल पर रखी कड़ाही के पास बैठते हुए मैंने पूछा।

बूढ़े मंगोल ने ड्राइवर पर एक क्रुद्ध दृष्टि डाली और झुँझलाहट के साथ बातूनी बेवकूफ़ नौजवानों के बारे में कुछ कहा।

"मीसा हँसता और खतरा नहीं देखता।"

उसके इस वार का नौजवानों ने जिस तरह खुशी के ठहाके के साथ स्वागत किया, उससे बूढ़ा मंगोल नाराज़ हो गया। मैं उसे शान्त करने में समर्थ हुआ और अगले दिन की यात्रा के सम्बन्ध में उससे सवाल करने लगा। मैंने देखा कि उसे स्थानीय मंगोलों से विस्तृत समाचार मिल गये थे। एक सूखे तिनके से बालू पर पतली रेखायें खींचकर उसने उन पहाड़ों के नक्शे बनाये जो इस भू-भाग में मंगोलीय अलताई के अंश थे। हमारा रास्ता दक्षिण को इखे-बोगदो के पश्चिम की चौड़ी उपत्यका से गुज़रता हुआ, बालुकामय समतल भूमि पर काफ़िलों के गुजरने के

रास्ते से रसागान-तोलोगोई कुण्ड तक जाता था, जो स्थानीय अधि-वासियों के अनुसार ३० मील की दूरी पर था। उस कुण्ड से क़रीब १५० मील तक साधारणतः एक अच्छी सड़क खारी मिट्टी पर मोइन-बोगदो पर्वतमाला तक जाती थी। उन पहाड़ों पर से खतरनाक बालू का एक चौड़ा रास्ता गुज़रता था जो उत्तर से दक्षिण तक कम से कम २५ मील तक फैला था जिसे दोलोन-खाली गोबी रेगिस्तान कहते हैं, और उसके बाद से बिलकुल चीन की सीमा तक जुंगारा गोबी की बालू फैली थी। दारखिन ने कहा कि बालू के उन इलाकों में कहीं एक बूंद भी पानी नहीं, आदमी का नामोनिशान नहीं। मंगोल इन जगहों को खतरनाक और घातक समझते थे। दोलोन-खाली गोबी के पश्चिम कोण को भी इतना ही बुरा माना जाता था। मैंने उस बूढ़े को आश्वासन देने की पूरी कोशिश की कि हमारी जैसी ऐसी तेज़ और निर्भरयोग्य लारी के रहते—वह तो खुद यह देख रहा है—हमें बालू से डरने की कोई वजह नहीं, चाहे वह कितनी भी भयानक क्यों न हो। और हम वहाँ देर तक ठहरना भी तो नहीं चाहते। मैं तो सिर्फ़ तारे देख लूँगा और जल्दी से उसे लौटा लाऊँगा। दारखिन ने सिर हिलाया और कुछ भी न बोला। फिर भी उसने हमारे साथ जाने से इन्कार नहीं किया।

रात शान्ति से बीत गयी। उषाकाल के पहले ही दारखिन ने मुझे जगाया और मैं नींद से लड़ता हुआ बड़ी कोशिश से उठ बैठा। लारी प्रातःकाल की निस्तब्धता में गर्जन और

प्रतिध्वनि उत्पन्न कर रही थी जिससे सोती चिड़ियाँ जाग पड़ी थीं। ठण्डी ताज़ा हवा ने मुझे थरथरा दिया। मगर ड्राइवर के केबिन में मैं शीघ्र ही गर्म हो गया और बग़ल की खिड़की को नीचे उतार दिया। लारी रुक-रुककर आगे बढ़ रही थी। हमारे चारों ओर के दृश्य अत्यन्त उदास किस्म के थे और मैं शीघ्र ही ऊँघने लगा। एक बाँह को मोड़कर खिड़की पर रखकर और उसके सहारे सिर रखने से आप एक अच्छी खासी झपकी ले सकते हैं। जब ज़ोर से सर टकराने से मैं जागता तो अपने कुतुबनुमा को देखता, दिशा इत्यादि लिख लेता और फिर ऊँघने लगता। जब तक मैंने अच्छी नींद न ले ली, तब तक यही क्रम चलता रहा। ड्राइवर ने लारी रोकी। मैंने सिगरेट सुलगाई और अपने आलस्य को एकबारगी ही भगा दिया।

अब हमलोग पहाड़ों के बिलकुल किनारे थे। आराम करने के लिये हम लोग लारी से उतर पड़े। सूर्य निर्दयता के साथ आग बरसा रहा था। टायर इतने गर्म हो गये थे कि आप उसके विशेष रबड़ को छू नहीं सकते थे। ग्रिशा हमारी उस छोटी बहादुर लारी की हालत की जाँच करने में सदा की भाँति तुरन्त जुट गया। दारखिन सीधे खड़े कुछ-कुछ लाल ढलवानों को देखने लगा जिनकी गोल पत्थरों की लम्बी पूँछें स्तेप में दूर तक फैली थीं। सूर्य की किरणें पर्वत-पृष्ठों के ठीक समानान्तर पड़ रही थीं और भूरे तथा लाल करारों की हर दरार, प्रत्येक उप-त्यका और हर निकास गहरी नीली छायाओं से भर गयी थी

जो अद्भुत आकार धारण किये हुए थी। रंगों के उस हुड़दंग को देखता हुआ मैं सोच रहा था कि अन्त में मंगोलीय कम्बलों के लाल और नीले नक्शों का आधार मुझे मिल गया।

दारखिन ने काफ़ी दूर पश्चिम में एक विस्तृत उपत्यका संकेत से मुझे दिखलायी जो पर्वतमाला के ठीक बीच से गयी थी। जब हम लोग लारी पर बैठ गये तो ग्रिशा ने इंजिन को चालू कर दिया जो अब तक ठण्डा हो चुका था और गाड़ी दाहिनी ओर चलाई। गाड़ी की बोनेट पर इतनी भयानक धूप पड़ रही थी कि इंजिन बेतरह गर्म हो गया और छोटी से छोटी पहाड़ी पर भी हमें मज़बूर होकर सबसे नीचे के गीयर पर चलना पड़ता था। मोटर के क़रीब लगातार शोर ने ग्रिशा का जोश ठंडा कर दिया था और मैंने बार-बार उसे अपनी तरफ़ उलाहना भरी दृष्टि डालते देखा। लेकिन मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि मुझे आशा थी कि शीघ्र ही पानी मिलेगा, इसलिये अपने पास का पीने का बढ़िया पानी बर्बाद न किया जाय। मेरी यह आशा गलत नहीं साबित हुई: बाँयी ओर हमने एक सीधा खड़ा पर्वत-पृष्ठ देखा जिसके किनारे घास उगी थी। यही पर्वत का वह सँकरा मार्ग था जो हमारे रास्ते की अगली मंजिल था। वहाँ से सुरक्षितरूप में उतरने में हमें सिर्फ़ कुछ मिनट लगे और आनन्द से मुस्कुराते हुए ग्रिशा ने लारी रोकी। ताज़ा घास, उस स्थान का रूप, यह सब कुछ बता रहा था कि पास ही कहीं झरना है। सीधी खड़ी चट्टानें गहरी छाया डाल रही

थीं, उसका नीला-सा लबादा हमें मरुभूमि के क्रूर सम्राट सूर्य से बचा रहा था। हमने कुछ देर रुकने और चाय पीने का फैसला किया।

ज्यों ही गर्मी कम होने लगी कि रात की यात्रा के लिये शक्ति संग्रह करने की इच्छा से हम सब सो गये। मैं बहुत देर तक सोता रहा और जागते ही ग्रिशा का चिल्लाना सुना, "मिखाइल इलिच, देखिये, जल्दी! मुझे डर था कि आप यह दृश्य देखने से चूक जायेंगे। मैं जब जागा और यह देखा तो आप मुझे फूँककर गिरा सकते थे। लगता था कि हमारे चारों ओर की हर चीज़ में आग लगी हुई है।"

और, सचमुच चारों ओर की दुनिया एक भीषण दुस्स्वप्न की दुनिया-सी दिखाई पड़ती थी। पर्वत के पीछे खड़े ढालू भाग डूबते हुए सूरज की आग से धधक रहे थे। गहरे नीले रङ्ग की एक भयावनी छाया उपत्यका के निम्न भाग पर छायी हुई थी और उसके ऊपर लाल लपटों की काफ़ी ऊँची ठोस दीवार खड़ी थी और चट्टान में मौसम से उत्पन्न दरारों में नीले रङ्ग की अजीब खाइयाँ दीख रही थीं। उन खाइयों में आप झरोखे और अटारियाँ, मेहराब और सीढ़ियाँ देख सकते थे जो सब तेज़ी से जल रही थीं मानों परिस्तान के किसी शहर में आग लगी हो। सीधे सामने उपत्यका की दीवारें एक दूसरी से मिलती थीं, बाँयीं दीवार धधक रही थी, दाहिनी नीली-काली थी। यह ऐसा परम आश्चर्यजनक दृश्य था कि हम लोग त्रस्त निस्तब्ध खड़े थे।

"क्यों !" ग्रिशा ने ही सबसे पहले यह मोह भंग किया। "यूलान-बतोर में यह अजीब बात बताने की ज़रा कोशिश तो करना! अजी, लड़कियाँ तुम्हारे साथ घूमने जाना छोड़ देंगी और कहेंगी कि तुमने गुलाबी हाथी देखना शुरू कर दिया है। लगता है कि आखिर दारखिन जो कुछ कहता है, उसमें कुछ कुछ सचाई भी हो सकती है।"

मङ्गोल ने ग्रिशा की बात पर बिलकुल ही ध्यान नहीं दिया। पर्वत के ज्वलंत सङ्कीर्ण मार्ग पर एकटक दृष्टि गड़ाये वह नमदे पर निस्पन्द बैठा था।

वे रङ्ग धीरे-धीरे अपनी वह आग खोकर नीले होते जा रहे थे। एक ताज़ा ठण्डी हवा कहीं से तिरती आ रही थी। रवाना होने का समय हो गया था। हमने धूमपान किया, हर किसी ने एक-एक डिब्बा जमाया दूध पी लिया, एक बार लारी की केबिन की छत ने आकाश को मेरी आँखों से ओझल कर दिया और लारी के रेडियेटर तथा विंग के नीचे सड़क पीछे को फिसलने लगी। मैं अंडे की शक्ल की गर्दन और घिरे हुए कण्डक्टरवाली हेडलाईट को एकटक सामने देखते और कूबड़ पर काँपते देख सकता था।

अँधेरा होने के ठीक पहले हमलोग बोर-खिसुती के कुण्ड तक पहुँच गये। वह कड़वे पानी का एक झरना निकला जो चारों ओर से गोल-गोल पत्थरों से सुरक्षित था। सन्ध्या के बढ़ते हुए धुँधलके में सामने कुछ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ प्रकट हुईं जिनके नाम दारखिन नहीं जानता था।

हमारी हेडलाइटों की दोनो ओर से तिरछी होकर पड़नेवाली रोशनी फिर हमारे आगे-आगे चल रही थी और उसके ऊपर से नीचे पड़नेवाले प्रकाश में हर गढ़ा, हर उभार बड़ा दिखता था। चारों ओर अँधेरा हमारे जितना निकट आता गया, दुनिया से अलग रहने की भावना उतनी ही अधिक जाग्रत होने लगी। सामने की पहाड़ियों का ऊबड़-खाबड़ काला ढेर लगातार अधिक ऊँचा होने लगा। मैंने गाड़ी रोकना तथा उषाकाल तक विश्राम करना तय किया क्योंकि अँधेरे में आगे गाड़ी चलाना खतरनाक था, पहाड़ियों में खड्ड भी रहते हैं।

जब गोहन-बोगदो पर्वतमाला की गोल चोटियों की रूपरेखा रक्तिम आकाश पर स्पष्ट खिंच गयी, तब हम फिर चल पड़े। दर्रे को हमने बिना किसी दिक्कत के ही पार किया—उस इलाके में पहाड़ियाँ बहुत कम ऊँची थी—और अपनी गाड़ी में सुपर-बैलून टायर लगा देने के लिये हम उस विस्तृत उपत्यका के अंतिम छोर पर रुके। हमारे सामने दीलोन-खाली-गोबी का उदास, कुछ-कुछ लाल-भूरा गलीचा बिछा था। काफ़ी दूर पर धुँध के पर्दे भीतर से हमें एक पार्वत्य-भूमि की झाँकी मिल रही थी। हमारे अभियान का मुख्य लक्ष्य उन पर्वतों का नाम प्राचीनकाल में कौहसी-कारा था। जुँगारा-गोबी की दो बालुकामय समतल भूमियों को विभक्त करनेवाली इस अनुच्च पर्वतमाला पर मैं एक ज्योतिर्वैज्ञानिक बिन्दु स्थापित करना चाहता था। अगर वहाँ हमें पानी मिला तो अपने बैलून टायरों की सहायता से हम जुँगारा-गोबी

के बीच से चीनी सीमा की ओर और भी आगे बढ़ेंगे और अपने पर्यवेक्षणों की जाँच करेंगे। हर हालत में हमें जल्दी करना था। जिस इलाके से हमारा पथ-प्रदर्शक परिचित नहीं था, वहाँ पानी मिलने की संभावना कम ही थी, और इंधन बरबाद करने के डर से हम अपने रास्ते से इधर-उधर नहीं जा सकते थे।

इसीलिये गर्मी के धुन्ध का अब तक मरुभूमि पर विचित्र कम्पन प्रारंभ हो जाने पर भी हमने यात्रा शुरू कर दी। बालुका के प्रस्तरीभूत, श्वासरोधक सागर की असंख्य पील-पीली लहरें हमारी तरफ़ दौड़ती आ रही थीं, उनके पीछे कभी-कभी सूर्य के प्रकाश से उद्भासित लाल या भूरी लहरें आती थीं। कुछ बालू के टीलों की चोटियों पर खुश्क और सख्त घास के पत्ते लहराते थे। जीवन की ये चिनगारियाँ मृत भूमि के निरानन्द दृश्यों के बीच और भी अधिक दयनीय दिखती थीं।

हर जगह महीन-महीन बालू घुस गयी थी, सीट के काले आच्छादन पर, विण्ड-स्क्रीन पर, मेरी नोट-बुक पर, मेरे कुतुबनुमा के शीशे पर बालू की एक परत जम गयी थी। बालू हमारे दाँतों पर किटकिटा रही थी, हमारे सूजे चेहरों को छील रही थी, हमारे हाथों की चमड़ी को खरोंच रही थी और लारी के अन्दर की हर चीज़ उससे ढक गयी थी। गाड़ी जब भी रुकती, मैं उतर जाता और बालू के सबसे ऊँचे टीले की चोटी पर चढ़कर अपनी दूरबीन से देखने की कोशिश करता कि उस भयंकर बालू का

अन्त कहाँ होता है। लेकिन हल्के-पीले धुन्ध के अन्दर से कुछ भी नहीं देखा जा सकता था, लगता था कि उस रेगिस्तान का कहीं ओर-छोर नहीं। एक तरफ़ को झुकी खड़ी जिसके खुले दरवाज़े पंखों की तरह झूल रहे थे, उस लारी को देखते हुए मैं अपनी बढ़ती हुई बेचैनी को दबाने की कोशिश करने लगा। और अगर हमारी यह लारी बिगड़ जाय तो दरअसल हमारे ये शानदार सुपर-बैलून टायर हमारे किस काम आयेंगे? और अगर लारी सचमुच बिगड़ जाय और नुकसान यहाँ मरम्मत करने लायक न हो तो इस रेगिस्तान से हमारे कभी निकल सकने की सम्भावना नहीं के बराबर थी। इस बालू में कूदकर तथा जो लोग मेरा विश्वास करते हैं, उनकी ज़िन्दगी को खतरे में डाल-कर क्या मैंने बहुत बड़े दुःसाहस का काम किया है? दोलोन-खाली के रेगिस्तान में ऐसे ही विचार बार-बार मेरे दिमाग़ में उमड़ रहे थे। किन्तु मैंने अपनी लारी पर भरोसा किया। दार-खिन का रुख भी आश्वासनजनक था; उसका बुद्ध जैसा मुखड़ा स्थिर और गम्भीर था। उधर हमारे साथ के नौजवान संभावित ख़तरों का ख़याल भी नहीं कर रहे थे।

सबसे ज्यादा परेशान करनेवाली बात यह थी कि पाँच घन्टे चलते रहने पर भी हमने सामने कोई पहाड़ियाँ नहीं देखीं। चालीसवें मील के बाद से बालू की लहरें स्पष्टरूप से चौरस और मरुभूमि ऊँची होने लगी। करीब और तीन मील आगे चलकर हम मिट्टी के एक कम ऊँचे ढालू टीले पर पहुँचे

और ग्रिशा ने लारी रोक दी। अब मुझे मालूम हुआ कि हम-लोग पहाड़ियों को क्यों नहीं देख रहे थे। दोलोन-खाली की बालू ने एक बहुत बड़े समतल गढ़े को भर दिया था, जिसके तल से दूर की पहाड़ियों को देखना स्वभावतः असम्भव था। किन्तु ज्योंही हम उस गढ़े के किनारे पर पहुँचे कि हमने अपने को एक ऊँची, चौरस ज़मीन पर पाया जिसपर छोटे-छोटे पत्थर बिखरे थे। पहाड़ियाँ हमारे ठीक सामने, करीब दस मील दक्षिण दिखाई पड़ीं। जहाँ तक दृष्टि जाती थी वहाँ चमकदार पत्थर के टुकड़े धरती को ढके हुए थे जिनका रंग गहरा बादामी और कहीं-कहीं काला-सा था। उस काली नंगी समतल भूमि पर ऐसा कुछ नहीं था जिसे देखकर आँखें खुश होतीं लेकिन एक सख्त और बराबर सड़क पर पहुँचना ही हमारे लिये बहुत बड़ी बात थी। यहाँ तक कि कभी न घबरानेवाले दारखिन ने भी अपनी विरल दाढ़ी पर हाथ फेरा और आनन्द से मुस्कुराया।

अपने सुपर-बैलून हमने उतार दिये। बालू के बीच से हमारी गाड़ी जिस तरह रेंगती हुई आई थी, उसके बाद जिस रफ़्तार से हम पहाड़ियों तक पहुँचे, वह जादू-सी लगती थी। पानी ढूँढ़ निकालने में हमें कुछ समय लगा। जब हमने पहाड़ियों को पार किया और एक झरना ढूँढ़ निकाला, तब सूरज डूब रहा था। यह झरना एक छोटे किन्तु गहरे दर्रे में था जो एक बड़ी घाटी से सम्बद्ध था। अब हमारी पानी की समस्या का समाधान हो गया। चाय की प्रतीक्षा किये बिना ही मैं और

मिशा पास की पहाड़ी पर चढ़ गये जिससे अँधेरा होने के पहले ही हम ज्योतिर्वैज्ञानिक बिन्दु के लिये जगह चुन सकें।

यहाँ की पहाड़ियाँ ऊँची नहीं थीं, उनकी नङ्गी चोटियाँ एक हज़ार फ़ुट से ज्यादा ऊँचाई तक नहीं पहुँची थीं। पहाड़ियों का ऊपरी हिस्सा अर्धचन्द्राकार था, उनके शृङ्ग दक्षिण की ओर जुँगारा-गोबी की बालू की दिशा में जाते थे और उसका अधिक करारेदार उन्नतोदर सिरा उत्तर दिशा की तरफ़ घूमा था। उसके शृङ्ग मरुभूमि की सरल रेखा से जुड़े थे। यह मालभूमि नीचे के बालुकामय सागर की लहरों जैसी बालू के टीलों तक सहसा उतर गयी थी। मालभूमि समतल थी जिस पर बड़ी-बड़ी तार जैसी पतली घास उगी थी। उसके चारों ओर के अर्धचन्द्र का सिरा हवा की मार से बरबाद शंकु (conic) के आकार की पहाड़ियों जैसा था, जिसकी चोटियाँ उदास, तेज़ और दंतुल थीं। दक्षिण, पूर्व और उत्तर की ओर दिगन्त तक फैली बंजर ज़मीन के दृश्य ने मेरे हृदय में एकान्त की एक दुखदायी भावना उत्पन्न कर दी। सिर्फ़ पश्चिम में काफ़ी दूर किसी पहाड़ की चोटियों की धुँधली रूपरेखा मुझे दिखाई पड़ी, किन्तु वह वैसी बेरङ्ग और सुनसान थी, जैसा कि यह, जिसपर से मैं उन्हें देख रहा था।

अर्धचन्द्र के भीतर की मालभूमि पर्यवेक्षण करने की दृष्टि से आदर्श स्थान थी और हम वहाँ अपना वायरलेस ट्रान्समिटर तथा औज़ार ले गये। ड्राइवर और दारखिन भी उस मालभूमि

पर चढ़ आये और अपने साथ हमारे बिस्तर और भोजन भी लेते आये। बहुत नीचे खड़ी अपनी लारी हम देख सकते थे जो एक भूरे कीड़े-सी दिखाई पड़ती थी। कभी-कभी हवा की करीब सुनाई न पड़नेवाली फुसफुसाहट से भङ्ग होनेवाली पहाड़ की पूर्ण निस्तब्धता ने हम सब लोगों को विचारशील मुद्रा में ला दिया। मेरे साथी कम्बल पर लेट गये। केवल अकेला मिशा अलग बैठा कुछ ड्राई बैटरियों के छोरों को धीरे-धीरे जोड़ रहा था। मैं मालभूमि के छोर तक गया और बहुत देर तक नीचे के रेगिस्तान को देखता रहा। जहां-तहाँ थोड़े से नाग-दौने के रुपहले पेड़ उगे थे, ऊबड़-खाबड़ टीले उनके चारों ओर ऊँचे-ऊँचे दिखते थे। सुनसान रेगिस्तान अस्तगामी सूर्य की रक्तिम आभा तक फैला हुआ था और मेरे पीछे भाले के सदृश दन्तुल चट्टानें खूँखार और उदास दीखती थीं। सर्वदा आक्रमणरत मरु-भूमि की नामविहीन बालू के टीलों से धीरे-धीरे घिरता हुआ यह अर्धविनष्ट पार्वत्य द्वीप एक सीमाहीन उदासी को, मौत की नाउम्मीद उदासी की साँस ले रहा था। उस भयानक उदासी को देखते हुए मेरे मन में मध्य एशिया के चेहरे का जो चित्र उभरा, वह यह था; एक विशाल प्राचीन देश जो इतना थक चुका था कि जीवित रहने की शक्ति नहीं थी और उस महादेश के एक छोर से दूसरे तक गर्म, जलहीन मरुभूमि फैलती जा रही थी। जीवन के विरुद्ध आदिकालीन महाजागतिक (cosmic) शक्तियों के संग्राम की यह समाप्ति थी और केवल पहाड़ी चट्टानें

का अचल पदार्थ ही अब तक विनाश के विरुद्ध निस्तब्ध संग्राम करता जा रहा था।

उस स्थान का दम घोंटनेवाला वातावरण सहसा आनन्दमय संगीत की ध्वनि से चकनाचूर हो गया। यह इतना आकस्मिक और पार्थक्य इतना अधिक था कि चारों ओर की दुनिया ढहती-सी लगी और तुरन्त ही मैं यह नहीं समझ सका कि वायरलेस आपरेटर ने अपने यन्त्र को चालू कर दिया है। हमारे अन्य साथी भी प्रोत्साहित हुए, बातें करना शुरू कर दिया और ब्यालू तथा चाय पान में व्यस्त हो गये। संगीत से उत्पन्न अनुभूति से बहुत प्रसन्न ग्रिशा बहुत देर तक मरुभूमि के इन अभियात्रियों को बहुत दूरी पर धड़कते मानव जीवन के उष्ण नाड़ी-संचालन से सम्बन्धित करनेवाले अदृश्य तारों को बाँधे रहा।

वह रात सदा की भाँति स्वच्छ थी। वह ऊँची मालभूमि ठण्डी होती जा रही थी। पर्यवेक्षण को रोकने के लिये गर्म हवा का धुन्ध नहीं था। मेरा ध्यान अब इतनी दूर के तथा ऐसे विशाल अंचल में केन्द्रित था कि उसके सामने पृथ्वी पर के सारे दृश्य केवल एक भागती छाया से थे—मैं अपनी दूरबीन से अब तारे देख रहा था। मैंने एक चमकदार तारे को आड़ी-तिरछी रेखाओं के जाल में फँसाया और पाली को देखा। वह तारा वर्नियर पैमाने के द्वार पर रुपहली रोशनी में चमक रहा था। पैमाने के कटाव खड़े और पड़े वृत्तों के चक्षुगोलकों के

भीतर से धीरे-धीरे गुजर गये, जब कि मैं अपने इयर-फोनों में समय-संकेत की कर्कश ध्वनि सुन रहा था।

यथासम्भव ठीक-ठीक करने की इच्छा से मैंने अपने पर्यवेक्षण को दो बार दुहराया। उस ईश्वरवर्जित स्थान में किसी के आने तथा मेरे पर्यवेक्षण की जाँच करने में बहुत-बहुत समय लगेगा और पृथ्वी के मानचित्रकारों को बाध्य होकर मेरे ज्योतिर्वैज्ञानिक बिन्दु पर निर्भर करना पड़ेगा जिसका अब से धरती के गोलक की सतह पर एक निश्चित स्थान रहेगा। कल सवेरे जहाँ मेरे आदमी पीतल का पात लगा लोहे का खूँटा ठोकेंगे और उसे सीमेन्ट कर देंगे, उस जगह को चिह्नित करने के लिये एक छोटी-सी कील छोड़कर मैंने बल्ब बुझा दिया और सो गया। उसके चारों ओर पत्थरों का ढेर लगाकर एक ऊँचा स्तूप बना दिया जायेगा, जिससे इस वियावान में यह ज्योतिर्वैज्ञानिक बिन्दु दूर से ही दिखाई पड़ सकेगा। मुझे सन्तोष था कि मैंने अपना काम अच्छी तरह किया है और यह अनुभव किये बिना नहीं रह सका कि समय का सर्वथा उचित उपयोग ही हुआ है।

तारों के नीचे छाया में उस मालभूमि पर शुद्ध ताज़ा हवा में मैं खूब सोया और पौ फटने के साथ जागा। भोर की हवा काफ़ी ठण्ढी थी। मेरे मित्र पहले ही उठ चुके थे और लोहे का खूँटा गाड़ रहे थे। मैंने अँगड़ाई ली और तय किया कि उठने के पहले धूमपान किया जाय और अगले रास्ते के बारे में सोच लिया जाय। अगर जुँगारा-गोबी की बालू हमारी लारी

के लिये बहुत मुश्किल साबित हो तो रेगिस्तान में नाममात्र की सीमा-रेखा के पीछे दीवानों की तरह दौड़ने का खतरा मैं नहीं मोल लूँगा। लेकिन ओरोक-नोर की हरियाली की तरफ़ लौटने के पहले मैंने रेगिस्तान में कुछ दूर और आगे बढ़ना तय किया जिससे देख सकूँ कि वहाँ का रेगिस्तान कैसा है। मैं जहाँ लेटा था, वहाँ से एक कम ऊँचाईवाली जगह देख पाता था। मैं वहाँ जाऊँगा और दक्षिण को चीन की सीमा को जाते हुए रेगिस्तान का दूरबीन से सर्वे करूँगा।

दारखिन सदा की भाँति बिल्ली की तरह दबे पाँव मेरे पास आया। उसने जब देखा कि मैं जाग रहा हूँ तो मेरी बग़ल में बैठ गया और धीरे से बोला, "क्या सोचता? जुँगारा-गोबी पार जायेगा?"

"नहीं, मैंने इसके खिलाफ़ फैसला किया है," मैंने उससे कहा। इस आश्वासन ने बूढ़े की आँखों में तुरन्त चमक ला दी। "हमलोग सिर्फ़ वहाँ उस पहाड़ी तक जायेंगे," मैंने अपने को कुहनी के बल उठाया और दूर उस ऊँचाई की तरफ़ इशारा किया।

"काहे का वास्ते?" आश्चर्यित मङ्गोल ने पूछा। "अच्छा नहीं जाना, ख़राब जगह को। अच्छा लौट जाना।"

चूँकि बूढ़ा पथप्रदर्शक अपनी बड़बड़ाहट बन्द करे, इसलिये मैं जल्दी से उठ गया। जब हम अपने सुपर-बैलून पर रेगिस्तान के अन्दर चल पड़े, तब तक सूरज ने बालू को गर्म नहीं किया

था। ड्राइवर धीरे-धीरे खुशी का एक गीत गा रहा था, लेकिन इञ्जिन की गड़गड़ाहट में वह डूबता जा रहा था। सदा की भाँति लारी के हिलने-डुलने से मुझे नींद आ रही थी, किन्तु अर्ध-जाग्रत रहने पर भी मैंने जुँगारा-गोबी का विचित्र रङ्ग देख ही लिया। धूप में अब तक गर्मी आ गयी थी और सूरज बालू की ढालू पहाड़ियों को बैंगनी रंग में रंग रहा था। छाया ग़ायब होती जा रही थी और जहाँ रोशनी ज्यादा तेज़ थी, वहाँ बालू ज्यादा लाल दीखती थी। इस विचित्र मृगतृष्णा से वह रेगिस्तान और भी अधिक निर्जीव और सुनसान लग रहा था।

मैं ज़रूर कुछ मिनटों तक सोया रहा हूँगा, क्योंकि जब मैं जागा तो इञ्जिन बन्द था। लारी बालू के एक टीले की चोटी पर खड़ी थी, उसका अगला हिस्सा ढहते हुए ढलाव की ओर था जहाँ से अब भी बालू छोटी-छोटी धारा के रूप में गिर रही थी। मैंने केबिन के दरवाज़े को धकेलकर खोला और बाहर आकर पावदान पर खड़ा चारों ओर देखने लगा।

सामने और दोनों बग़ल में बालू के इतने बड़े-बड़े टीले थे जिनके अस्तित्व की मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी! हवा और सूरज के खेल के भुलावे में पड़कर मैंने इन्हें पहाड़ियाँ समझा था। कैसी अजीब ग़लती हुई थी! सिर्फ़ कुछ मिनट पहले मैं कसम खा सकता था कि सामने मुझे पहाड़ियाँ साफ़-साफ़ दीख रही हैं। मेरे पाँव बालू में धँसे जा रहे थे,

फिर भी मैं बालू के एक टीले पर चढ़ गया और रेगिस्तान के दक्षिण भूभाग को देखने लगा। वह मंगोल भी मेरे पास पहुँच गया जिसकी काली आँखें चालाकी से चमक रही थीं! दक्षिण की ओर बढ़ना बेकार है—इतना साफ़ था। वहाँ हमने पहाड़ियों या पहाड़ों का कोई चिह्न नहीं देखा। दारखिन ने ज़ोर देकर कहा कि मंगोलों ने उसे बताया था कि यह रेगिस्तान सीधे चीन की सीमा तक चला गया है।

मैंने लौटना तय किया। मेरे इस निर्णय से मेरे मित्र बहुत खुश थे, यह मैंने देख लिया। रेगिस्तान में जैसी मृत्यु-की-सी चुप्पी छाई हुई थी, उसने उनके उत्साह पर भी पानी फेर दिया था। इञ्जिन के प्रतिध्वनित गीत की फिर मरुभूमि की निस्तब्धता पर तूती बोलने लगी। लारी घूमी और अपने हेडलाईटों को उत्तर दिशा में किये वह ढलवे से नीचे उतरी।

मैंने अपनी नोट-बुक और कलम रख दी, कुतुबनुमा को ढका और फिर एक झपकी लेने को तैयार हो गया।

"मिखाइल इलिच, अगर हम गैस को तेज़ कर दें तो हम बेशक ओरोक-नोर या कम से कम उन जलते पहाड़ों तक पहुँच जायँ।" अपनी चमकदार हँसी में अपने सुन्दर दाँत दिखलाते हुए ग्रिशा ने कहा।

हमारे सर के ऊपर एक ज़ोर दस्तक पड़ी तो हम दोनों उछल पड़े। वायरलेस आपरेटर केबिन की छत पर थपकियाँ मार रहा था। वह खिड़की पर झुका और इंजिन के शोर के बीच

हमें अपना कहना सुनाने की कोशिश कर रहा था। अपने दाहिने हाथ से वह इशारा कर रहा था।

"क्या बात है वहाँ?" ड्राइवर ने झुँझलाकर कहा। सहसा उसने बड़ी तेज़ी से ब्रेक लगाया और चिल्लाया, "जल्दी देखिये! क्या है वह?"

वायरलेस आपरेटर गाड़ी से कूद पड़ा था और उसके कारण क्षण भर मेरी दृष्टि आड़ में पड़ गयी थी। राइफल हाथ में लिये वह बालू के एक बड़े टीले के ढलवे की तरफ़ दौड़ा। दो बड़े टीलों के बीच में मैं एक छोटा समतल टीला देख रहा था। उसे पकड़कर कोई जीव रेंग रहा था। दूरी तो कम ही थी, फिर भी मैं और ड्राइवर तुरन्त नहीं समझ पाये कि वह क्या है। वह बड़े खिंचाव के साथ झटके से चल रहा था, कभी तो मुड़कर करीब दोहरा हो जाता और कभी तुरन्त अपने को बिलकुल सीधा करके आगे बढ़ता। उसके दोनों सिरे एक से थे और हम कह नहीं सकते थे कि सिर कहाँ है और पूँछ कहाँ। कभी-कभी झटका रुक जाता था और जीव ढलवें से बिलकुल लुढ़कने लगता था।

"हे भगवान्, क्या है यह···? दिखता तो है 'सासेज' जैसा!" ग्रिशा मेरे कान में फुसफुसाया, उसे डर था कि कहीं उसकी आवाज़ से घबराकर वह रहस्यमय जीव भाग न जाय।

सचमुच सासेज ही। उस जीव के न तो पाँव थे, न सिर; न आँखें। यह संभव है कि दूर से हम उसकी आँखें नहीं देख पा रहे हों। हाँ, वह सचमुच बहुत बड़ा, करीब एक गज़ लंबा

सासेज-सा ही लग रहा था। उसके दोनों सिरे एक-से भोथर थे और हम कह नहीं सकते थे कि कहाँ सिर है और कहाँ पूँछ। भूरी बालू पर रेंगती हुई उस विशाल मोटे कीड़े की गतिविधि में कुछ वीभत्स और साथ ही दयनीय असहाय भाव था। मैं कोई प्राणिवैज्ञानिक नहीं, मगर उस समय मैं तुरन्त समझ गया कि यह जीव एक अपरिचित तथा अवर्गीकृत प्राणी है। मंगोलिया में अपने अभियानों के दौरान में मेरी हर तरह के जानवरों से भेंट हुई थी, मगर मैंने ऐसा कुछ कभी नहीं सुना था जो मुझे इस मुलाकात के लिये तैयार करता।

"कैसा बदसूरत जानवर है?" ग्रिशा ने आश्चर्य से कहा। "खैर, मैं इसे पकड़ने जाता हूँ, मगर पहले दस्ताना पहन लेना चाहिये।" अपने चमड़े के दस्ताने लेकर वह केबिन से कूद पड़ा।

"रुको! ठहरो!" वह वायरलेस आपरेटर के प्रति चिल्लाया जो बालू के एक बड़े टीले पर से निशाना लगा रहा था।

"ज़िन्दा पकड़ लो इसे। देखो न, यह मुश्किल से रेंग सकता है।"

"ठीक है। अहा, वह देखो, इसका जोड़ा!"

उसी प्रकार का एक दूसरा लेकिन और भी बड़ा सासेज ढलवी बालू से लुढ़कता चला आ रहा था। उसी क्षण लारी के पिछले हिस्से से दारखिन ने खून सुखानेवाली चीख निकाली। साफ़ था कि वह बूढ़ा सोया था और अब शोर से जाग गया था। वह मंगोल चिल्लाकर जो कुछ कह रहा था, वह "ओ-ओई, ओ-ओई" जैसा सुनाई पड़ रहा था।

ड्राइवर पहले ही पहाड़ी की चोटी पर वायरलेस आपरेटर के पास पहुँच चुका था और अब वे दोनों दौड़ते हुए नीचे उतर रहे थे। दूसरे क्षण ही मैं भी केबिन से बाहर आ गया और शिकार पकड़ने में शरीक होने के लिये चलने को ही था कि वह मंगोल लारी से उछल पड़ा और मुझे भालू के जैसे आलिंगन में जकड़कर पकड़ लिया। उसका साधारणतः भावहीन रहने-वाला चेहरा आतंक से ऐंठा हुआ था।

"लड़कों को लौटने बोलो। जल्दी! वहाँ मौत!" वह चिल्लाया, और फिर चीखा, "ओ-ओई, ओ-ओई।"

पथप्रदर्शक के इस विचित्र व्यवहार से मैं उतना डरा नहीं, जितना पसोपेश में पड़ा। मैंने चिल्लाकर ड्राइवर और मिशा से लौट आने को कहा। लेकिन वे उस कीड़े की तरफ़ दौड़ते ही रहे, मेरे पुकारने पर या तो उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया या सुना ही नहीं। मैं उनकी ओर एक क़दम बढ़ा, मगर दारखिन ने मुझे पीछे खींच लिया। मैंने अपने को उससे छुड़ाकर जाना चाहा और मेरी आँखें बराबर उन जानवरों पर टिकी रहीं।

अब मेरे दोनों सहायक उन जानवरों के पास पहुँच गये। वायरलेस आपरेटर आगे था। सहसा दोनों कीड़ों ने कुण्डली बना ली और साथ ही उनका रंग गहरा होने लगा, पीला-भूरा बैंगनी-नीले में बदल गया, दोनों सिरों का रंग बिलकुल नीला हो गया। यकायक, किसी तरह से चेतावनी दिये बिना ही वायर-लेस आपरेटर लुढ़क गया, चुपचाप वह बालू पर मुँह के बल

गिरा और निस्पन्द पड़ा रहा। उसकी ओर दौड़कर जाते हुए ड्राइवर की मैंने चीख सुनी। वायरलेस आपरेटर कीड़ों से करीब पाँच क़दम के फ़ासले पर पड़ा था। दूसरे क्षण ही ग्रिशा भी ऐंठ गया और करवट गिरा। उसका शरीर उलट गया और ढलवे से लुढ़ककर आँखों से ओझल हो गया।

मैंने अपने को पथप्रदर्शक की पकड़ से झटके के साथ छुड़ा लिया और टीलों की ओर दौड़ पड़ा, लेकिन दारखिन ने जवान की तरह दौड़ते हुए मुझे पकड़ लिया, मेरे पैरों पर कूद पड़ा और उन्हें अपनी फौलादी पञ्जों में जकड़ लिया। नर्म बालू पर हम दोनों एक साथ लुढ़कने लगे। मैं उस मंगोल से उठा-पटक करने लगा और अन्त में मैं इतना क्रोधित हो गया कि अपनी पिस्तौल निकाली और उस पर निशाना साधा। जब सेफ्टी कैच हटाने की आवाज़ हुई तभी हमारे पथप्रदर्शक ने मुझे छोड़ा। वह घुटने टेककर बैठ गया और अपने दोनों हाथ मेरी तरफ़ बढ़ा दिये। "मौत! मौत!" वह गला फाड़कर चीखा।

मैं पिस्तौल पकड़े उस पहाड़ी की चोटी की तरफ़ झपटकर दौड़ा। वे रहस्यमय कीड़े गायब हो चुके थे। मेरे साथियों के शरीर बालू पर निस्पन्द पड़े थे, जिस बालू पर उन घृण्य जानवरों के चलने की लकीर बन गयी थी। वह मंगोल मेरे पीछे-पीछे दौड़ा आ रहा था। ज्योंही उसने देखा कि कीड़े जा चुके हैं तो वह ज़मीन पर पड़े उन दोनों के पास गया।

जब मैं उन लड़कों के शरीर पर झुका और उनके अन्दर

जीवन का कोई लक्षण नहीं ढूँढ़ पाया तो असह्य पीड़ा से मेरा कलेजा फटने लगा। ग्रिशा इस तरह पड़ा था कि उसका एक हाथ एक तरफ़ लटक रहा था, चेहरे पर शान्ति थी और आँखें अधखुली थीं। आकस्मिक और भीषण पीड़ा की ऐंठन से ग्रिशा का मुख विकृत हो गया था। दोनों का चेहरा नीला हो गया था मानो उनका गला घोंट दिया गया हो।

हमारी सारी कोशिशें—मालिश, कृत्रिम श्वास-क्रिया और दार-खिन के द्वारा उनका खून निकालने का प्रयास—बेकार रहीं। उनके प्राण-पखेरू उड़ चुके थे। इस मृत्यु से हमें काठ मार गया। काफ़ी दिनों से एक साथ जीवन बिताते हुए हम अन्तरंग मित्र हो गये थे, भाई-भाई ही समझिये। मेरा दुःख तो अपने इस अपराध के कारण और भी बढ़ा-चढ़ा था कि उन जानवरों के पीछे उनका दीवानों की तरह दौड़ना रोकने के लिये मैंने कुछ भी नहीं किया था। सर्वथा किंकर्तव्य-विमूढ़ और विचारशून्य होकर मैं चुपचाप खड़ा था और इस आशा से व्यर्थ ही चारों तरफ़ देख रहा था कि वे शैतान कीड़े फिर दिखाई पड़ें और मैं गोलियों से उन्हें छलनी बना डालूँ। बूढ़ा पथप्रदर्शक बालू पर धम से बैठ गया था। वह चुपचाप रोये जा रहा था और तब सहसा मैं समझ पाया कि इसी आदमी ने मेरी जान बख़्शी है।

हम लाशों को उठाकर लारी के पिछले हिस्से में ले गये। उस भीषण बैंगनी-सी बालू के अन्दर उन्हें छोड़ जाने के विचार को भी हम बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। शायद हमारे

मन में तब भी कहीं यह आशा बनी थी कि सचमुच मृत्यु नहीं हुई है और हमारे साथी एक अज्ञात शक्ति के प्रहार से बेसुध हैं और वे फिर होश में आ जायेंगे। मेरे और पथ-प्रदर्शक के बीच एक शब्द का भी आदान-प्रदान नहीं हुआ। जब तक मैंने मिशा की जगह पर बैठकर इंजिन को चालू नहीं किया, तब तक उसकी चिन्तित आँखें मेरा अनुसरण करती रहीं। उस जगह को मैंने आखिरी बार एक निगाह देखा जहाँ मैंने अपने दल के आधे आदमियों को खोया था। रेगिस्तान के दूसरे हिस्सों से उसमें ज़रा भी फ़र्क नहीं था। आध घन्टे पहले मैं कितना शान्त और निश्चिन्त था और अब मैं कितना अकेला-अकेला-सा महसूस कर रहा था। मैंने गाड़ी आगे बढ़ाई और पहले गियर में चलते हुए इंजिन की मातमी आवाज़ मेरे दिल को नोचने लगी। मेरी बग़ल में बैठा हुआ दारखिन बहुत ध्यान से मुझे देख रहा था और जब उसने देख लिया कि मैं गाड़ी चला सकता हूँ तो काफ़ी निश्चिन्त हुआ।

रात भर के लिये हमने डेरा डाला और ज्योतिर्वैज्ञानिक बिन्दु के पास पत्थरों के एक बड़े ढेर के नीचे अपने साथियों को दफ़नाया। उनके 'पुनर्जीवन' की हमारी अन्तिम आशा पर पानी फेरता हुआ विनाश उनके शरीर पर अपनी उंगलियाँ चलाने लग गया था।

उन उदास पहाड़ियों पर वह सुनसान रात याद करना आज भी मुझे बुरा लगता है। उस भयानक जुंगारा-गोबी से मैं

जितना अधिक दूर पहुँचता गया, उतना ही अधिक शान्त होता गया। दोलोन-खाली-गोबी को पार करना किसी अनुभवहीन ड्राइवर के लिये बहुत बड़ा काम था और तब कुछ समय तक मेरा मन उस भीषण दुर्भाग्य से हट गया था!

अगली बार हम जलती चट्टानों पर रुके और वहाँ मैंने उस मंगोल से झगड़ा मिटा लिया। वह बहुत प्रभावित हुआ। वह मुस्कुराया और बोला, "मैं चिल्लाता 'मौत'!—तुम आगे दौड़ता। तब मैं तुमको पकड़ता—सरदार मरता, सब मरता। और तुम हमको गोली मारने माँगता।"

"मैं उन लोगों को बचाने के लिये दौड़ रहा था," मैंने कहा। "मैं अपने बारे में नहीं सोच रहा था।"

अपने पथ-प्रदर्शक से और अन्य बुजुर्ग मंगोलों से उस भीषण घटना की मुझे सिर्फ़ यही व्याख्या मिली की मंगोलिया की एक बहुत प्राचीनकाल की कथा के अनुसार रेगिस्तान के अगम्य तथा प्राणी-हीन भाग में एक जानवर रहता है जिसे ओलगोई-खोरखोई कहते हैं। तब कहीं मैं समझ पाया कि दारखिन के 'ओ-ओई, ओ-ओई' चिल्लाने का क्या मतलब था। ओलगोई-खोरखोई कभी किसी अभियात्री की पकड़ में नहीं आ सका था, इसका एक कारण यह था कि वह जलहीन बालुकामय भूमि पर रहता है और दूसरा यह कि मंगोल उससे बेहद डरते हैं। और मैं तो अपने अनुभव से ही जानता था कि यह डरना कितना स्वाभाविक है क्योंकि वह जानवर दूर रहते ही जान ले लेता है

और आदमी तुरन्त मर जाता है। ओलगोई-खोरखोई में क्या रहस्यमय शक्ति है, इस बारे में मैं निश्चितरूप से कुछ भी नहीं कह सकता। शायद वह अत्यन्त शक्तिशाली विद्युत-प्रवाह है या कोई विष है जो कीड़ा फेंक सकता है। शायद।

विज्ञान को अभी ओलगोई-खोरखोई के बारे में अपना फैसला सुनाना है। और यह काम तब होगा, जब किसी अधिक भाग्य-शाली अभियात्री को रेगिस्तान में वह दिखाई पड़ जाये।

श्वेत-शृङ्ग

फीके, उमस भरे आकाश में एक गीध सर चकरानेवाली ऊँचाई पर, अपने फैले पङ्खों को बहुत कम चलाता हुआ अनायास उड़ रहा था।

वह चिड़िया कभी-कभी तो ऐसी ऊँचाई तक निकल जाती थी कि जगमग गगनमण्डल में वह सिर्फ़ एक छोटे धब्बे-सी दिखाई पड़ती थी और सैकड़ों फ़ुट नीचे उतर आती थी। उसोल्तसेव ने इसे ईर्ष्या के साथ देखा।

उसोल्तसेव को याद आया कि अपनी तीक्ष्ण दृष्टि के लिये गीध विख्यात है और सोचा कि वह शायद मुर्दा ढूँढ़ रहा है। अपने को रोकने पर भी वह काँप उठा। जिस घातक विपत्ति से वह अभी तुरन्त बच निकला है, उसे भूल जाना आसान नहीं। उसका मन तो शान्त हो चुका था, किन्तु उसके शरीर की प्रत्येक स्नायु और पेशी तब भी काँप रही थी।

हाँ, वह शिकारी चिड़िया इसी पल उसकी चकनाचूर लाश पर बैठी और अपनी क्रूर, टेढ़ी चोंच से उसके लोथड़े को नोचती होती।

ढहती हुई नंगी शिला से गिरे शिलाखण्डों से भरी वह उपत्यका भट्ठी की भाँति गर्म थी। उस उपत्यका में पानी नहीं, पेड़-पौधे नहीं, घास भी नहीं—नीचे तेज़, बारीक पिसे पत्थर और ऊपर ज्वलन्त सूर्य से झुलसी दरारदार पत्थर की खड़ी चट्टान के अलावा कुछ भी नहीं।

उसोल्तसेव गोल पत्थर पर से थका-सा उठा और अपने घुटनों की कमज़ोरी को कोसता चरमराते पत्थरों पर गुजरता बढ़ चला। अन्त में उसने अपने घोड़े को एक लटकती शिला की छाया में देखा। अखरोट के रंग के उस काशगढ़ी घोड़े ने अपने मालिक को देखते ही कान सटाये और धीरे से हिनहिनाया। उसोल्तसेव ने उसकी लगाम खोली और उस पर सवार होने के पहले काशगढ़ी की गर्दन को प्यार से थपथपाया।

उस घुड़सवार के सामने उपत्यका शीघ्र ही उन्मुक्त हो गयी। मीलों चौड़ा, छोटी-छोटी पहाड़ियों का वह विस्तृत प्रदेश सहसा असीम स्तेप में पहुँचता था जिस पर धूल और हवा की लहराती धाराओं का पर्दा पड़ा था। दिगन्त की धुँधली रेखा से बहुत दूर उस पार इली की उपत्यका थी। यह बड़ी खरधार नदी अपना बादामी रंग का पानी चीन से लाती थी और इसके किनारों पर जंगली जैतून तथा सुन्दर स्फटिक खण्ड थे। किन्तु

यहाँ पत्थरों के अभिशप्त राज्य में एक बूँद भी पानी नहीं था।

गर्म खुश्क हवा स्तेप की पतली घास को सरसरा रही थी। उसोल्तसेव ने अपने घोड़े को रोका, जीन पर घूमकर बैठ गया और पहाड़ों की उस मटमैली भूरी दीवार को देखा जो छोटी-छोटी घाटियों से ऊबड़-खाबड़ हो गयी थी और घाटियों ने जिन्हें तोड़कर असमान खड़ी चट्टान बना दिया था। उसने सबसे अलग, बीच में सबसे ऊँची खड़ी उस विशाल सीधी बड़ी चोटी को भी देखा जो एक विशाल सींग-सी लगती थी। उसका टूटा-फूटा ऊबड़-खाबड़ उदर-प्रदेश स्तेप की फुसफुसानेवाली हवा की ओर मुड़ा था और उसकी चोटी पर एक जगमग सफ़ेद दाग़ चमक रहा था। खण्डित और वक्र, पत्थरों के स्याह ढेर से अलग वह बिलकुल सीधा खड़ा था।

उसोल्तसेव जब उस अगम्य पर्वत को देखने लगा तो उसके गालों पर लज्जा की लालिमा आ गयी: अन्तिम पल के उस डर से जिसने उसे पीछे हटने को बाध्य किया था। एक साहसी भूगर्भशास्त्री तथा तियेन शान के निर्भय यात्री के रूप में उसने अपनी इज़्ज़त को मिट्टी में मिला दिया था। भाग्य अच्छा था कि उसकी यह पराजय देखनेवाला वहाँ कोई न था, कोई सहायक भी नहीं था। उसोल्तसेव ने अपराधी की भाँति चारों तरफ़ देखा, किन्तु वह ऊसर रेगिस्तान सदा की भाँति सुनसान ही था। सिर्फ़ मतवाली हवा घास के समुद्र को लहरा रही थी,

पूर्व दिशा में स्तेप का द्वार बन्द करता हुआ एक बेंगनी रंग का धुँधलका पर्वतमाला पर काँप रहा था।

घोड़ा उतावली से ज़मीन पर पाँव पटक रहा था।

"हाँ जी, अखरोटी, अब घर जाने का समय हो गया," भूगर्भशास्त्री ने धीमे से कहा।

आज्ञा पालन करते हुए काशगढ़ी ने अपनी गर्दन टेढ़ी की और अपनी छोटी-छोटी टापों से पथरीली ज़मीन को बजाता हुआ वह उछलकर आगे बढ़ चला। इस कठिन घुड़सवारी ने भू-गर्भशास्त्री की स्नायुओं को शान्त किया।

दूर से ही उसोल्तसेव की नज़र खेमे पर पड़ी। रुपहले जंगली जैतून के झुरमुट की ऐंठे तार जैसी डालों की अविश्वसनीय छाया में, एक छोटे सोते के किनारे दो तम्बू सटे खड़े थे। खेमे की धूनी से धुएँ का क़रीब एक अदृश्य स्तम्भ ऊपर उठ रहा था। कुछ दूरी पर, एक मोटे एल्म पेड़ के नीचे एक और तम्बू खड़ा था, पहले दोनों से बड़ा और ऊँचा। उस पर नज़र पड़ते ही उसोल्तसेव भारी दिल से दूसरी तरफ़ मुड़ गया।

"लड़के क्या लौट चुके हैं, अरुसलान?"

एक बूढ़ा उईगर मज़दूर जो एक बड़ी कड़ाही में पीलाव को चला रहा था, दौड़कर उसोल्तसेव के पास आ गया।

"नहीं, मगर वो जल्दी आयेगा," उसने कहा।

"अखरोटी का साज़ मैं खुद उतारूँगा। तुम जाओ, देखो

कि तुम्हारा पोलाव जल न जाय। मैं खाना नहीं चाहता, बड़ी गर्मी है।"

उईगर की काली छोटी-छोटी आँखों ने उसोल्तसेव को गौर से देखा, "आप फिर आक-मियूँगुज गया था?"

"नहीं," उसोल्तसेव ने जवाब दिया और उसके गाल लाल हो गये। उईगर भाषा में आक-मियूँगुज का अर्थ है सफ़ेद सींग (श्वेत-शृङ्ग)। "मैं उसके चारों ओर की पहाड़ियों को एक बार देखने गया था।"

"बुज़ुर्ग लोग कहता है, आक-मियूँगुज पर चील भी नहीं बैठने सकता। तलवार बराबर तेज़ है," उईगर ने आगे कहा।

इस इशारे की न परवाह करके उसोल्तसेव घोड़े से उतरा, कपड़े उतार दिये और नंगे पाँव नदी पर चला गया। तेज़ पत्थरों के चारों ओर चकराता वह ठण्डा, स्वच्छ जल दूर से लगता था मानो सफ़ेद मखमल की अस्तव्यस्त लम्बी चादर हो। उपत्यका की श्मशान-सी चुप्पी और खुश्क हवा का विलाप सुनने के बाद नदी का आनन्दपूर्ण कलकल सुनना अच्छा लगाता था।

नदी में डुबकी लगाकर ताज़ा होने के बाद उसोल्तसेव एक छाते की छाया में लेट गया, सिगरेट सुलगाई और अपने निरानन्द विचारों में अपने आप को डूब जाने दिया।

पराजय की भावना उसके सदुपार्जित विश्राम को विषैला बना रही थी: उसका आत्म-विश्वास बुरी तरह डाँवाडोल हो गया था।

श्वेत-शृङ्ग की अगम्यता की ख्याति के विचार से अपने को आश्वासन देने का उसने व्यर्थ प्रयास किया। तब उसके विचार उस लड़की की ओर गये जो अपने अनजाने ही बहुत दिनों से उसोल्तसेव की सुख-दुख की सतत सङ्गिनी बन गयी थी।

उस दिन सवेरे की उसकी असफलता ने उसकी इच्छा-शक्ति को खण्डित कर दिया था: अपने आपसे पक्का वायदा किये रहने के बावजूद, वह उठा और धीरे-धीरे एल्म के नीचे के तंबू की ओर चल पड़ा।

लम्बे अरसे तक बिछुड़े रहने के बाद भाग्य ने उन्हें फिर एक जगह ला दिया था। लड़की उस ज़िले में खनिज पदार्थों का पता लगानेवाले एक दल की नायिका थी जहाँ उसे एक सर्वे दल के साथ भेजा गया था। अब क़रीब दो सप्ताह से अधिक समय से उनके तम्बू एक दूसरे के अगल-बग़ल खड़े थे, फिर भी वह उससे उतनी ही दूर और उतनी ही अलग थी जितनी कि श्वेत-शृंग। पहली अस्वीकृति के बाद से वह उससे मिलने से बचने की पूरी कोशिश करता, अपने को केवल शिष्टाचार तक सीमित रखता आया था। और अब वह उसके तम्बू में जा रहा था···एक और पराजय, दुर्बलता का एक और प्रदर्शन। एक कम एक ज़्यादा—अब इस सब की क्या परवाह!

एक हृष्ट-पुष्ट युवती तम्बू के पास एक गठरी पर बैठी थी और गोल चश्मों के भीतर से अपने क़सीदे के काम देख रही थी। उसोल्तसेव के आने पर उसने दोस्ताना ढंग से सिर हिलाया।

"क्या वेरा तम्बू के अन्दर है?" भूगर्भशास्त्री ने पूछा।

"जी हाँ, और सदा की तरह पढ़ रही है।"

"अन्दर आ जाओ, ओलेग!" तम्बू के अन्दर से एक आवाज़ आई। "मैंने तुम्हारी आहट पहचान ली।"

"मेरी आहट में ऐसी विशेषता क्या है?" तम्बू का पर्दा पीछे हटाते हुए उसोल्तसेव ने कहा।

"तुम्हारी आहट भी तुम्हारी भाँति ही उदास है।"

उस युवक के चेहरे पर असन्तोष की लाली छा गयी, लेकिन वह इस फबती को पी गया और जिन्हें वह उतनी अच्छी तरह जानता था, उन नाचती हुई सुनहली चिनगारियोंवाली पूरी भावहीन आँखों से आँखें चार करने के लिये उसने अपने को बाध्य किया।

"क्या कोई काम तो नहीं बिगड़ गया?"

"अजी नहीं, कुछ भी नहीं!" उसोल्तसेव ने जल्दी से जवाब दिया। "तुम जल्दी ही जा रही हो, इसलिये मैंने सोचा कि अलविदा कहने के लिये चलना चाहिये।"

"हाँ। मैंने कुछ भी न करते हुए एक आनन्दपूर्ण दिन बिताया है। शायद मेरी कोई चिट्ठी आयी हो, यह देखने के लिये मैंने लड़कियों को पोदगोर्नी भेज दिया। यहाँ मेरा काम समाप्त हो चुका है। एक सप्ताह पहले ही मेरे बोर्ड ने मुझे सूचना दे दी है कि भविष्य के काम की योजना बदल चुकी है। जल्दी ही हमें एक नया इलाका दिया जायेगा, इसलिये हम अब तक अपने सामान भी बाँध चुके हैं। यह एक आश्चर्यजनक किताब

है जो मुझे डाक से मिली है। जब से मिली है, तब से पढ़ रही हूँ। और परसों मैं नई जगहों की तरफ़ चल दूँगी—शायद केगेन को। अफसोस की बात है कि यहाँ हमें टिन-पत्थर के कुछ केलास (crystals of cassiterite) के अलावा और कुछ भी नहीं मिल सका।

"हाँ, बड़े-बड़े सञ्चय ढहती हुई चोटियों से नष्ट हो गये हैं।"

"अब सिर्फ़ एक ही कट्टर पुराना सूरमा बाकी है—श्वेत-शृङ्ग!" वेरा ने एक आह के साथ कहा। "लेकिन तुम कहते हो कि वह अगम्य है। जानते हो, मैं सोच रही थी कि अच्छा होता कि तुम एक बड़ी तोप माँग लेते जिससे शृङ्ग का एक अंश गोला मार कर गिराया जाता और देख लिया जाता कि किन चीज़ों से बना है," परिहास के स्वर में उसने कहना समाप्त किया।

उसोल्तसेव ने वह पुस्तक उठाई जिसे लड़की ने सूट-केस पर रख दी थी। "अहा, 'एवरेस्ट पर चढ़ाई'। तो यही वह किताब है, जिसे तुम दिन भर पढ़ रही हो।"

"एक मार्के की पुस्तक! इसके पन्ने हिमालय की चोटियों को प्रतिबिम्बित करते-से लगते हैं। मैं सोचती हूँ कि इसकी सबसे अधिक रोमाञ्चकारी बात एवरेस्ट पर वास्तविक चढ़ाई नहीं है, बल्कि प्रत्येक पुरुष ने धीरे-धीरे आत्मिक बल में जो वृद्धि की वही है। जानते हो, यह मानव के अपने बल से अधिक आगे बढ़ने के संघर्ष करने के समान है।"

"मैं समझता हूँ, तुम क्या कह रही हो, यह मैं जानता हूँ," उसोल्तसेव ने कहा। "आखिर, इस बार वे चोटी पर चढ़ने में असफल रहे, रहे न?"

वेरा की दृष्टि गंभीर हो गयी। "हाँ, तुम मुझसे कहने जा रहे हो कि वे हार गये। यह तो उन्होंने खुद स्वीकार किया है: "हमारी ओर से कोई सफ़ाई नहीं पेश की जा सकती," उन्होंने कहा। "एक आशाप्रद संग्राम में हम पछाड़े गये, पर्वत की ऊँचाई और तनुभूत वायु से पराजित हो गये," उसोल्तसेव से पुस्तक लेकर वह पढ़ने लगी, लेकिन अपने सामने एक बहुत बड़ा, अपरिमितरूप से कठिन काम रखना, भले ही वह आपकी शक्ति के परे हो, और उसमें अपना तन-मन लगा देना क्या एक आसान बात है? ओह, एवरेस्ट को, उस धोखेबाज, संहारक पर्वत को मैं कितना स्पष्ट देख सकती हूँ! वहाँ हवा का ऐसा भयानक वेग है कि चोटी पर हिमकण तक नहीं ठहर सकते। और चारों ओर भयङ्कर करारें। हिमवाह और हिमानी-सम्पात चीखते हुए नीचे जाते हैं...लेकिन ये लोग तत्परता के साथ ऊँचा, और भी ऊँचा चढ़ते जाते हैं...काश, हम ऐसे ही कठिन काम का भार अकसर ले पाते!"

उसोल्तसेव ने यह उद्गार चुपचाप सुन लिया। लड़की जब रुकी और साँस लेने लगी तो उसने कहा, "अजी, ऐसे अभियान करने लायक बहुत कम लोग हैं, और एवरेस्ट तो सिर्फ़ एक ही है।"

"यह सच नहीं है, और यह तुम जानते हो। हममें से हर कोई अपने लिये एक एवरेस्ट ढूँढ़ सकता है। क्या तुम हमारे अपने जीवन से उदाहरण चाहते हो? और फिर युद्ध—उसने क्या ऐसे वीर उत्पन्न नहीं किये जिन्होंने अपनी शक्ति से अधिक किया?"

"एवरेस्ट तो एक वास्तव वस्तु है," उसोल्तसेव अड़ गया। "जब कि अपना काल्पनिक एवरेस्ट ढूँढ़ने में किसी का ग़लती कर जाना आसान है।"

"बहुत खूब, ओलेग," वेरा व्यङ्ग से चिल्लाई। "सचमुच बहुत खूब! यहाँ तुम अपने एवरेस्ट पर चढ़ने का संघर्ष करते हो, जब कि हाय राम! वह मिट्टी का ढेर निकला जिसे चूहे ने जमा किया है!—हमारे चारों ओर ये हैं न, इन्हीं का जैसा। कैसा मज़ाक है!"

"इन्हीं का जैसा...?" उसोल्तसेव ने चौंककर दुहराया।

बिजली की चमक की भाँति उसे तुरन्त याद पड़ा कि वह खुद एक ढालू चट्टान पर अवसन्न पड़ा था और ऊपर से उसके चारों ओर पत्थर के टुकड़ों की बौछार चल रही थी। यह जानते हुए कि उसका ज़रा हिलना-डुलना तक ३५० फुट नीचे भयानक मृत्यु के मुँह में उसे धकेल देगा, वह अपने प्यारे प्राण बचाने के लिये उस चट्टान से और भी ज़्यादा चिपक गया था। इस आतंक का मुकाबिला करते हुए जब वह वहाँ पड़ा था, तब एक-एक पल कैसी यंत्रणादायक मन्द गति से धीरे-धीरे बीता

था! साहस बटोरकर वह करवट होकर सटा रहा था और अन्तिम पल में उसने अपनी उँगलियाँ एक दरार में घुसेड़ दी थी...

बिलकुल अकेले उसने निश्चित मृत्यु से प्रचण्ड संग्राम किया था।

उसोल्तसेव ने अपनी भौंहों पर से पसीना पोंछ डाला, मुड़ा और चुपचाप वहाँ से चल दिया।

चार मस्तक एक नक्शे पर झुके थे जिसे एक पत्थर से दबा कर रखा गया था। कार्यकर्त्ता दल के प्रधान ने नोचे हुए नह से नक्शे पर एक रेखा खींची।

"आज हमलोग तलपीठ (plane-table) के उत्तर-पूर्व छोर पर पहुँच गये थे। यहाँ उपत्यका है, ओलेग सेदायेविच। वहाँ और भी एक भ्रंस है जिसके दोनों बग़ल में प्राचीन ऊबड़-खावड़ चट्टानें हैं—स्पष्ट है कि वह रूपान्तर श्रृंखला के हमारे छोटे टापू का अन्त है।"

अन्धकार से आछन्न होते हुए आकाश की ओर चिन्तित भाव से देखता हुआ वह नमूनों की छोटी-छोटी थैलियाँ खोलने लगा।

उसोल्तसेव नक्शे का अध्ययन कर रहा था, जिसका प्रत्येक छोटा-छोटा अंश वह कंठस्थ जानता था। लहरदार पड़ी रेखाओं तथा गठन रेखाओं, तीरों तथा खनिज वस्तुओं के रंगीन चिह्नों की सहायता से वह अध्ययन कर रहा था। बिलकुल हाल ही में—भूगर्भशास्त्री की दृष्टि में दस लाख वर्ष की क्या बिसात—निम्न मालभूमि फट गयी थी और उन विशाल दरारों के रास्ते

पृथ्वी की पपड़ी के बहुत बड़े अंश या तो ऊपर उभर आये या धँस गये। उत्तर में जहाँ अब चौड़े स्तेप के बीचोबीच इली नदी बहती है, एक बड़ा अवनमन बना। उनके तम्बुओं से दक्षिण चट्टानों का एक विशाल बाँध-सा खड़ा था। उसके ऊपर-वाले पत्थर के पुश्ते धूप, हवा और वर्षा की क्रियाओं से अब नष्टभ्रष्ट हो चुके हैं और पहाड़ियों के ऊबड़-खाबड़ ढेर बन गये हैं। ऊपरी भाग फैली मिट्टी और बालू के रूप में बदल गये और एक निम्न अवनमन में पड़े हैं। किन्तु नीचे के थाक में पलिज भूमि में उन खनिज पदार्थों को बने रहना चाहिये जो अन्यत्र पहाड़ियों पर ग़ायब हो चुके हैं, क्योंकि उसकी सतह का क्षय नहीं हुआ है।

अगर हम पलिज स्तर तक सिर्फ़ एक नल घुसेड़ सकते, उसोल्तसेव के विचार दौड़ चले। यह स्तर क़रीब एक सौ फ़ुट से ज़्यादा मोटा नहीं है। किन्तु यह काम हम तब तक शुरू नहीं कर सकते, जब तक थोड़ा बहुत यह समझ न लें कि पर्वत के ऊपर के अंश में क्या पाने की आशा की जा सकती है। केवल श्वेत शृंग ही गुप्त रहस्य का ज्ञाता है: नीचे से आप उसकी अगम्य चोटी पर इस ऊपर के अंश का एक क्षुद्र टापू ही देख सकते हैं। रूपान्तरित चट्टान और इस रहस्यमय सफ़ेद चोटी के बीच की सीमा स्पष्ट प्रतीयमान है, वह भ्रंस की ओर झुका है जिसका मतलब है कि सफ़ेद चट्टान, वह चाहे जो कुछ भी हो, अवनमित इलाके में सुरक्षित रखी है। किन्तु श्वेत शृंग

तो जादू की पहाड़ी है : क्योंकि उस पहाड़ी के नीचे की चट्टानों पर उनकी तमाम छानबीन के बावजूद उन्हें चट्टान का ऐसा एक टुकड़ा नहीं मिला जिसका श्वेत शृंग से ज़रा भी मेल हो। वह निश्चय ही हैरिक शाश्वत चट्टान से बना होगा। और क्या वेरा ने उससे नहीं कहा था कि आक-सुयुँगुज के पदप्रान्त के पास उन्हें टिन-पत्थर के दो बड़े-बड़े केलास मिले थे?

उसोल्तसेव का दृढ़ विश्वास था कि ज़मीन के अन्दर काफ़ी नीचे गड़े खनिज पदार्थों के खजाने की चाबी श्वेत शृंग की चोटी पर पड़ी है। और पहुँचने की कोशिश करने का मूल्य वह क़रीब अपने प्राणों से चुकाने लगा था। टिन! एक भूगर्भशास्त्री के नाते वह भली भाँति जानता था कि उसके देश को इस चीज़ की कितनी बुरी तरह ज़रूरत थी। और इसलिये उसने अपनी खोज जारी रखने के लिये अपने को मजबूर समझा।

उसके सहायक पहले ही सो चुके थे। रात की ताज़ा ठंडी हवा झुलसी धरती का आलिंगन कर रही थी। अँधेरी पहाड़ियों पर चाँदनी हरित जलप्रपात की भाँति झर रही थी। उसोल्त-सेव तम्बुओं के पास ही लेट गया और अपने तपे हुए चेहरे को हवा के रुख़ की ओर घुमाया, मगर नींद नहीं आने को थी।

उस शृंग पर चढ़ने की अपनी कोशिश बार बार उसे याद आने लगी। वह मौत के मुँह से बाल-बाल बच आया था, किन्तु जानता था कि फिर उन्हीं ख़तरों का सामना करेगा।

फिर अभी, पौ फटते ही क्यों नहीं? उसने सहसा अपने

आपसे पूछा। पहले, चाँदनी के रहते-रहते ही वह जाकर टाँकियाँ ले लेगा।

वह उठा और बिना कोई आहट किये औज़ारों की पेटी की ओर चला और सावधानी के साथ टाँकियाँ लेने लगा।

एल्म की ओर से गाने की एक मृदु गुंजन उसके कानों में पड़ी। उसोल्तसेव ने सिर उठाया, गानेवाली वेरा थी: "भीषण संकट प्रबल पराक्रम मेरा प्यार तुम्हें दे देगा, मेरे राजकुमार!" वेरा गाती रही और उसका गीत चाँदनी से उद्भासित स्तेप में धीरे-धीरे फैल गया।

उसोल्तसेव खड़ा हो गया और लौटकर अपने बिस्तर पर चला गया। नहीं, उसने सोचा, उसके चले जाने तक मैं प्रतीक्षा करूँगा। अगर मुझे कुछ हो जाये तो वह सोच सकती है कि उसके लिये ही मैंने यह खतरा उठाया। और फिर एवरेस्ट के सम्बन्ध में वे बातें! एवरेस्ट? ऐसी की तैसी—ऊँचाई तो एक हज़ार फुट ही।

"हमलोग आज कहाँ जायेंगे, ओलेग सेर्गियेविच?" कार्यकर्ता दल के प्रधान ने उसोल्तसेव से पूछा।

"कहीं नहीं, हमलोग तलपीठ के छोर तक पहुँच चुके हैं। मैं आपको दो दिन देता हूँ जिसमें सर्वे के तथ्यों तथा एकत्रित सामग्री को व्यवस्थित कर लें। परसों किरगिज-साई जाइये और एक गाड़ी ले आइये।"

"तो हमलोग सरहद के पास तक जाने वाले हैं?"

"हाँ, ताकिर-अचिनोखो तक।"

"यह अच्छी खबर है। वहाँ की पहाड़ियाँ ऊँची हैं और वहाँ काफ़ी छायादार पेड़ों की झुरमुट है। इस तवे से निकलकर जाने में मुझे बड़ी खुशी होगी। आज तो आप आराम करेंगे न?"

"नहीं, मैं सोचता हूँ कि प्रधान भ्रंस के इलाके में जाकर घूम आऊँ।"

"आक-सुयँगुज के पास?"

"नहीं, और भी आगे।"

"हाँ, आपसे कहना तो मैं बिलकुल भूल ही गया था...जब मैं आक-ताम में था तो एक सीमारक्षक ने मुझे बताया कि पहाड़ पर चढ़नेवालों का एक दल श्वेत-शृङ्ग पर चढ़ने आया था। अल्मा-आता से विशेषज्ञों का एक आयोग भी आया था।"

"फिर?" बहुत ध्यान से सुनते हुए उसोल्तसेव ने आगे सुनना चाहा।

"उन्होंने घोषणा कर दी कि श्वेत-शृङ्ग सर्वथा अगम्य है।"

धूल का एक धुन्ध काशगढ़ी का पीछा करता रहा। उसोल्तसेव को लगा कि उसका अपराजेय शत्रु विशाल साँड़ है जिसका बहुत बड़ा सीना स्तेप पर उभरा हुआ है और अपने चारों ओर की चकनाचूर पत्थर की लहरों के बीच से वह उठने की कोशिश

कर रहा है। हवा उसके पैरों की ओर कँटीली सूखी डंठलों को लुढ़का रही थी। बहुत पहले यहाँ एक भ्रंस था और उसके दोनों ओर खड़े दो विशाल पर्वत एक दूसरे से कँधे रगड़ते थे। उस रगड़ के निशान आज भी मौजूद थे—श्वेत-शृङ्ग का सीना रगड़ खाकर बिलकुल चमकदार चिकना हो गया था!

अत्यन्त ध्यान से देखने पर भी उसोल्तसेव को पहाड़ के इस किनारे ऐसी एक भी जगह नहीं मिली जहाँ कोई आदमी १५० फुट से ऊपर चढ़ सकता। पूर्व का ढालू अंश एक उठा हुआ भाग था जो ऊपर की ओर पतला होता हुआ उस्तरे की धार की भाँति तेज़ हो गया था। हाँ, दक्षिण-पूर्व का अंश सबसे अधिक आशाजनक था। वहाँ उसके पड़ोसियों से श्वेत-शृंग को अलग करनेवाली उपत्यका की ज़मीन से उस पहाड़ की ऊँचाई की एक तिहाई तक चढ़ जाने का उसने अनुमान लगाया। दो तिहाई बच गई जिसका एक-एक क़दम अगम्य प्रतीत होता था।

उसोल्तसेव ने अपने सिर को काफ़ी पीछे की तरफ झुकाया और चोटी को ध्यान से देखने लगा। अगर उसके पास सिर्फ़ टेढ़ी कीलें, रस्सियाँ और अन्यान्य विशेष औज़ार रहते, अगर उसके साथ अनुभवी साथी रहते...मगर इस प्रकार के मनमोदक खाने की ज़रूरत ही क्या थी जब कि पहाड़ पर चढ़नेवालों ने ही अपने को पराजित घोषित कर दिया था!

घोड़े पर सवार वह धीरे-धीरे उस पहाड़ के चारों ओर चक्कर लगाता, उस पथरीली उपत्यका के प्रवेशद्वार की ओर चला।

एवरेस्ट तथा हिमालय के अगम्य शृंग—धरती की सबसे ऊँची चोटियाँ। उनमें एक शक्तिशाली रूमानी आकर्षण है, उसोल्तसेव ने सोचा। अगर वह केवल दुस्साहिक कार्य ही करना चाहता तो उसे बहुत दूर नहीं जाना पड़ता; खान तेंगरी की चमकदार नीली चोटी, सरीजास की हीरे जैसी भुजायें बहुत दूर नहीं थीं-हिमानी का मुकुट धारण किये भयानक पहाड़ों की; स्वच्छ वायु (crystalline air) की निर्मल आलोक की (virgin light) रूमानी दुनिया। यह सब आपको वीरता की मुद्रा में ले जाते हैं।

यहाँ के पहाड़ कम ऊँचे, उदास और ढहते हुए थे, आकाश गर्मी से फीके लाल रंग का हो गया था, हवा धूल से भरी और एक गर्म धुन्ध में काँपती थी। लेकिन नहीं—अतिशयोक्ति की ज़रूरत नहीं। इस गर्म तेज़ हवा के देश की अपनी अलग एक सुन्दरता थी, इन प्राचीन अर्धनष्ट पहाड़ियों का एक विचित्र विषण्ण लालित्य था। दिगन्त पर नीचे झूलते हुए फीके अनाकर्षक बादल भी इस उदास मरु एशिया की, नंगी चट्टानों और अतल नील आकाश के इस देश की छाप लिये हुए थे।

अब उसकी आँखें पहाड़ पर चढ़ने की अपनी कोशिश फिर देखने लगीं। वहाँ वह प्राचीन चट्टान (pegmatite vein) जो बहुत कुछ नोंचे हुए रक्ताक्त माँस की भाँति थी शैलों के काले ढेर को पार कर रही थी। अभ्रक से चमकती उस चट्टान से ऊपर चढ़ता हुआ वह दूसरी जोड़ पर पहुँचा था जो उस तरफ़ को ढालू थी। बस, सिर्फ़ इतनी दूर तक ही वह जा

सकता था। उसने कोशिश करना छोड़ दिया हो, ऐसी बात नहीं। कीड़े की भाँति रेंगते हुए उसने उस सीधी चढ़ाईवाले ढलवों पर चढ़ने की कोशिश की थी। उस ढलवे पर पत्थर के टुकड़ की भरमार थी जो ज़रा छूते ही नीचे को लुढ़कते थे। यही वह जगह थी जहाँ वह मृत्यु के अत्यन्त निकट पहुँच गया था।

उसोल्तसेव घोड़े से उतरा और पहाड़ के चारों ओर और भी दूर तक गया। नहीं, कोई फ़ायदा नहीं, इस सीधी खड़ी दीवार पर कोई आदमी एक फ़ुट भी नहीं चढ़ सकता। अगर वह उत्तर-पूर्व के उठे हुए भाग पर पहुँच सके तो उठे हुए भाग और चोटी के बीच में चढ़ना आसान होगा। किन्तु उस उठे हुए भाग पर कौन-सी शक्ति उसे रख सकेगी? शृङ्ग के ऊपर कोई नहीं था जो रस्सी से उसे ऊपर खींच लेता।

उस काल्पनिक रस्सी का स्थान वह देखने लगा और सहसा चोटी की काली चट्टान की बनी जड़ जहाँ से भयङ्कर श्वेत-शृङ्ग को अलग करती थी उसके पास एक समतल थाक देखा। वह थाक चोटी की ओर ढालू हो गया था और नीचे से क़रीब अदृश्य ही था।

"आश्चर्य है कि पहले इस पर मेरी नज़र नहीं पड़ सकी," उसोल्तसेव ने सोचा। "मगर इससे फ़ायदा ही क्या हो सकता है, यह इतना ही ऊँचा है जितना कि स्वयम् वह शृङ्ग।"

"कैसी ठण्डी शाम है!" चाय की प्रतीक्षा में कम्बल पर आराम से बैठे हुए कार्यकर्ता दल के प्रधान ने कहा।

"आधा चाँद में बराबर ऐसा होता है," अरसलान ने समझाया। "इसके बाद हुआँ से ज़ोर हवा छोड़ेगा," उइगर ने इली की ओर हाथ से इशारा किया—"कभी इस वक्त बड़ा जाड़ा होता है।"

"यह भी अच्छी बात है: चलने के पहले हमलोग थोड़ा आराम कर लेंगे, क्यों ओलेग सेर्गियेविच?"

उसोल्तसेव ने चुपचाप सिर हिला दिया।

"सरदार मजादार आदमी होता है," उइगर ने कहा और हँस दिया, यद्यपि उसकी आँखें गंभीर ही रहीं। "हम जानता है—सरदार मुहब्बत करता। वो आक-सुयुँगुज से मुहब्बत करता। जल्दी अचिनोखो को रुखसत होवेगा। औरत को मुहब्बत करना चंगा होता है—उसको साथ लेने सकता है। आक-सुयुँगुज को साथ नहीं लेने सकता।"

नौजवान लोग तो हँस ही पड़े, यहाँ तक कि उसोल्तसेव भी मुस्कान को नहीं दबा सका।

अपने इस छोटे से सफल मज़ाक से उत्साहित होकर अरसलान ने आगे कहा, "हम उईगर लोग एक पुराना किस्सा जानता है कि एक वीर कैसे आक-सुयुँगुज पर चढ़ गया रहा।"

"तो तुम अब तक इसे छिपाये हुए क्यों हो, अरसलान? आगे बढ़ो, हम भी किस्सा सुन लें!" उसोल्तसेव ने आज्ञा दी।

"अच्छा! चाय बनायेगा, फिर किस्सा कहेगा।"

उस बूढ़े उईगर ने चाय की केतली कम्बल पर रख दी तथा शीशियाँ और मीठी रोटी निकाली ; तब वह पालथी मारकर बैठ गया और चाय की चुश्की लेते हुए कहानी कहना शुरू कर दिया।

उस उईगर की टूटी-फुटी रूसी के बावजूद, उसोल्तसेव बड़े चाव से उसकी बातें सुनता रहा। उसकी अपनी कल्पना ने उस कहानी में सुन्दर चमकदार रङ्ग भर दिये और इसमें भी संदेह नहीं कि यह प्राचीन कथा भी अपने मौलिक रूप में उतनी ही रूमानी थी जितनी कि उस इलाके की जनता स्वयम्।

उस उईगर के इस आग्रह से कि जो कहानी वह सुना रहा था, उसकी घटनायें क़रीब सिर्फ़ तीन सौ वर्ष पहले हुई थीं, उसो-ल्तसेव और भी अधिक आश्चर्यचकित हुआ। कहानी उसके अपने विचारों से इतनी अच्छी तरह मेल खाती थी कि जब सब लोग सो गये, तब उसोल्तसेव तारों से रौशन आसमान की ओर देखता और अरसलान की हर घटना का अपने दिमाग़ में नाप-तौल करता पड़ा रहा।

बूढ़े उईगर अरसलान ने जो कहानी सुनाई, वह यों है :

एक समय यह देश एक वीर और शक्तिशाली खान का राज्य था। उसकी खानाबदोश प्रजा मवेशी के अनगिनत झुंडों की मालिक थी और अपने पड़ोसियों पर धावा बोलकर उनकी जायदाद बराबर बढ़ाती रहती थी।

एक बार खान ने एक लम्बी कूच में एक बड़ी फ़ौज साथ ली और तालास पहुँचा। सादिर-कुरगान की प्राचीन चहारदीवारियों के निकट ही घुमक्कड़ डाकू क़बीले के एक दल से खान का मुकाबिला हुआ। घमासान लड़ाई शुरू हुई। डाकू पछाड़े और तितर-बितर कर दिये गये।

लूट का बहुत-सा माल खान को मिला। किन्तु एक क़ैदी औरत की, पराजित डाकुओं के सरदार की एक रखेल की अपूर्व सुन्दरता देखकर वह जितना प्रसन्न हुआ, उतना और किसी वस्तु से नहीं हो सका। इस देश की स्त्रियों के सौंदर्य से सर्वथा भिन्न उसकी सुन्दरता ने समस्त पुरुषों के हृदय को मंत्रमुग्ध कर दिया।

उसका पिता कोकंद के शक्तिशाली शासन का वज़ीर था और उस दूर देश से जब वह आ रही थी तो फरग़ाना उपत्यका में उसे पकड़कर डाकू ले भागे थे।

खान उस बन्दिनी को अपने पावत्य देश में ले गया और यहाँ, प्राचीनकाल से प्रचलित रीति के अनुसार वह खान तथा उसके दो बड़े बेटों की प्यारी रखेल बन गयी।

दो वर्ष बीत गये। खान ने जब कारकारा की फूलों से भरी उपत्यका में खेमा डाला तो पहाड़ों पर पहले से ही बर्फ़ जमने लग गयी थी। वह समतल भूमि रोज़ अधिक से अधिक तम्बुओं से भरने लगी क्योंकि खान जो भोज दे रहा था उसमें शरीक होने के लिये पड़ोस के मित्र क़बीलों के मेहमान आने लग गये थे।

और तब एक कद्दावर योद्धा आया जिसका चेहरा उदास था। वह बिलकुल अकेला आया था, और घोड़े पर नहीं, बल्कि एक बहुत बड़े सफ़ेद ऊँट पर जिसके रोयें छोटे और रेशम जैसे मुलायम थे। उस अजनबी का चेहरा काले कपड़े के नक़ाब से ढका था। सिर पर धातु का चमकदार चिपटा मुकुट था और बख्तरदार चौड़ा चोगा क़रीब उसके घुटनों तक पहुँचता था जो नंगे मगर काले चमड़े टुकड़ों की जाली से बँधा था। हथियार के तौर पर उसके पास एक तलवार, दो छुरे, एक गोल ढाल और लम्बी मूठवाला लड़ाई का कुल्हाड़ा थे।

उस वीर ने माँग की कि उसे तुरन्त खान के सामने हाज़िर किया जाय। अपने हथियार उसने खान के सफ़ेद ग़लीचे पर रख दिये, नक़ाब को नीचे सरका लिया और बड़े अदब के साथ खान को सलाम किया।

उसका मुख उस पुरुष का मुख था जिसने कठोर और गौरव-मण्डित जीवनयापन किया था, एक योद्धा और मानव के नेता का, उस वीर का जिसके सम्मान में कभी बट्टा नहीं लगा था।

खान ने उस अपरिचित वीर को अनजाने ही प्रशंसा की दृष्टि से देखा।

"हे पराक्रमी खान!" वह वीर बोला, "मैं तुम्हारे पास दूर देश से आया हूँ जहाँ गर्म लोहित सागर के तटों पर ज्वलन्त सूर्य की अग्नि भूत बालुका को जलाती है। मेरी यह तलाश

बड़ी लम्बी और बड़ी परेशान करनेवाली रही है। दो वर्षों में कोकंद से इस्सिक-कुल की निर्मल झील तक पहाड़ों और वादियों का चक्कर लगा रहा हूँ, जब अफवाहों की बातें मुझे तुम्हारे पास ले आयी हैं। मुझे बताओ कि तुम्हारे पास क्या अब भी वह युवती है जिसे तुम सिईदूकश कहते हो और जिसे तुम तालास के डाकुओं से छीन लाये थे?"

खान ने स्वीकृति की मुद्रा में अपना सिर एक तरफ़ झुकाया और वह वीर आगे कहता गया :

"यह युवती, हे खान! मेरी मँगेतर है, और मैं शपथ ले चुका हूँ कि स्वर्ग या मर्त्य की कोई शक्ति मुझे उससे अलग नहीं रख सकती। तीन वर्षों तक मैं भारत की सीमाओं पर और तार की भयंकर मरुभूमि में लड़ रहा था; जब मैं लौटा तो मुझे मालूम हुआ कि मेरे घरवालों ने मुझे मरा समझकर उसे उसके पिता के पास लौटा दिया। तब से मैं एक लम्बी और खतर-नाक राह पर चलता रहा हूँ, बहुत-सी लड़ाइयाँ लड़ चुका हूँ, भूख और प्यास से कष्ट पा चुका हूँ, जितने मैं याद रख सकता हूँ, उनसे कहीं अधिक विचित्र राज्यों से गुजर चुका हूँ; और अब मैं यहाँ तुम्हारे सामने हूँ।

"मेरी जवानी बीत चुकी है, लेकिन मेरा स्नेह सदा की भाँति असीम है। हे खान, मुझे बताओ कि क्या मैंने अपने को उसके योग्य नहीं साबित कर दिया है? हे महान, पराक्रमी राजाधिराज, उसे मेरी बाँहों में लौटा दो क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह मेरे

प्रति विश्वस्त रही है और सदा विश्वास करती आयी है कि मैं आऊँगा।"

खान के भयंकर मुख पर एक मुस्कान खेल गयी। जवाब में वह यों बोला :

"हे सच्चे वीर, एक अतिथि के रूप में हम तुम्हारा स्वागत करते हैं। हमारे भोज में तुम हमारी बग़ल में बैठे रहो, यह हमारे लिये खुशी की बात है, और जब भोज समाप्त हो जायेगा तो हम तुम्हें अपने अन्तःपुर ले जायेंगे और तब अल्लाह की जैसी मरज़ी।"

उस सच्चे वीर ने खान का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

आनन्द का बधावा और भी ज़ोर से बजने लगा तो खान ने अपने गवैयों को बुलाया। गवैयों ने पहाड़ी बाज़ से सम्बन्धित खान का प्रिय गीत गाया और तब खान और उसके बेटों की प्यारी रखेल सिईदुरूश की प्रशंसा के गीत गाये।

खान बीच-बीच में उस सच्चे वीर के चेहरे पर नज़र डालता जाता था और देख रहा था कि उस सच्चे वीर का चेहरा गम्भीर होता जा रहा था। जिस पर वहाँ के लोगों को गर्व था, ऐसे बूढ़े गवैये ने जब अपने मालिकों के प्रति सिईदुरूश के महान् और प्रबल प्रेम का गीत गाया तो वह अजनबी वीर उछल पड़ा और चिल्लाकर बूढ़े गवैये से कहा, "चुप रह बूढ़ा झूठा! तू उस पर कलंक लगाने का साहस कैसे करता है जिसके पाँव पर तू लोटने लायक भी नहीं?"

एकत्रित अतिथियों के बीच क्रोध की गुंजन उठी। अधिक उम्रवाले वीरों ने अपमानित गवैये का पक्ष लिया, नौजवानों का खून उस अजनबी वीर के अहंकारपूर्ण व्यवहार से खौलने लगा। दो वीर उस अपरिचित योद्धा पर टूट पड़े, किन्तु अपनी बलवान बाहु के एक झटके से ही उसने उन्हें एक बग़ल ढकेल दिया।

खान के भोज में तलवारें चमकने लगीं। वह अपरिचित वीर बहुत ज़ोर से उछलकर अपने हथियारों के पास पहुँचा और अपना लम्बा लड़ाई का कुल्हाड़ा और ढाल उठा ली। दीवार की ओर पीठ किये वह खड़ा था और इस तरह अपने ऊपर वार करनेवालों का मुकाबिला कर रहा था। वे उससे टकराकर उसी तरह टूक-टूक होने लगे जिस तरह अचल चट्टान से टकराकर लहरें टूक-टूक होती हैं; मगर वे बार-बार आते ही रहे।

पहले एक, फिर तीन, तब पाँच आदमी खून से सने फ़र्श पर लोट गये, मगर सच्चे वीर का बाल भी बाँका नहीं हुआ था। दाहिने और बाँये वार करते और खान के श्रेष्ठ वीरों को काटते उसका मार भी बिजली की भाँति तेजी से बढ़ रही थी। उसका चेहरा लगातार अधिक भीषण-दर्शन और उसके कुल्हाड़े का वार प्रचण्ड से प्रचण्डतम होता गया।

तब खान ने उसके आक्रमणकारियों को क्रुद्ध स्वर में बुलाकर हटा दिया। और तब उस अजनबी वीर ने अपने लड़ाई के कुल्हाड़े को झुका लिया और निस्पन्द खड़ा रहा—खून से सनी एक भीषण मूर्ति।

"जिसकी ढिठाई ने इतना खून बहाया है, वह क्या चाहता है?" खान ने उस सच्चे वीर से पूछा।

"सत्य!" सच्चे वीर ने उत्तर दिया।

"सत्य?" तो तुम्हें वह मिलेगा। जो कभी एक शब्द भी झूठ नहीं बोला है, उससे तुम सुन लो कि गवैये ने जितने शब्द कहे उनमें प्रत्येक शब्द सत्य है।

तब उस सच्चे वीर ने अपना लड़ाई का कुल्हाड़ा और ढाल पटक दी और उसका चेहरा वेदना से वृद्ध-सा और फुर्तीला हो गया।

"क्या तुम अब भी चाहते हो कि हम उसे तुम्हें लौटा दें?" खान ने उससे पूछा।

उस सच्चे वीर की आँखें चमक उठीं और वह उसी तरह तन गया जिस तरह निर्मम प्रहार के बाद अरबी तलवार तन जाती है।

"हाँ, हे खान!" यह था उस सच्चे वीर का बेधड़क जवाब।

खान के होंठ एक तात्पर्यपूर्ण मुस्कान से विकसित हो गये।

"ऐसा ही हो, हम उसे तुम्हें लौटा देंगे, मगर उसके लिये तुम्हें एक बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

"मुझे तुम्हारी आज्ञा की प्रतीक्षा है, हे खान," उस सच्चे वीर ने निर्भयता से कहा।

खान ने पल भर सोचा। तब वह अतिथियों की ओर मुखातिब होकर बोला।

"हमलोग वृष वर्ष में हैं। आक-मुयुँगुज के पास ही जो प्राचीन मन्दिर है, उसके द्वार पर लिखे दैवी शब्द क्या आपको याद हैं? जो कोई वृष वर्ष में अपनी तलवार इस प्रस्तर वृष के शृंग पर रख देगा वह तब से हज़ार वर्ष तक अपने वंशजों के द्वारा स्मरण किया जाता रहेगा। इस प्रयास में बहुत से वीर मिट चुके हैं, किन्तु आक-मुयुँगुज पर एक भी तलवार नहीं है।"

तब खान ने सच्चे वीर की तरफ़ मुखातिब होकर ये शब्द कहे :

"हे परम वीर, यही कीमत है जो हम तुमको चुकाने की आज्ञा देते हैं। तुम आक-मुयुगुँज की चोटी पर चढ़ो और मेरी सोने की तलवार सबसे ऊँचाई पर रख दो, तो हम अपनी औरत तुम्हें दे देंगे।"

उपस्थित लोगों पर आनन्द और भय छा गया। अपनी इस आज्ञा से खान ने सच्चे वीर को मृत्युदण्ड सुना दिया था। लेकिन वह सच्चा वीर डर जानता ही नहीं था। उसका विषण्ण मुखमंडल एक गर्व भरी मुस्कान से उद्भासित हो गया।

"हे खान, मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन करूँगा। हे राजा और प्रजागण, आपलोग सिर्फ़ यह जान लीजिए कि मेरे ऊपर चाहे जो बीते, मैं जिस औरत को चाहता हूँ, उसके लिये नहीं, सिईदूलश के लिये नहीं होगा। मैं अपने गौरवमय देश की प्रतिष्ठा की रक्षा करूँगा जिस पर इसने धब्बा लगाया है, और

अपनी आँखों के सामने इसके गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करूँगा। अपने इस गौरवमय तथा पवित्र कार्य में सर्वशक्तिमान स्रष्टा मेरा साथ देगा।"

खान की आज्ञा से उसके शस्त्रवाहक उसकी विख्यात सोने की तलवार ले आये। उसकी म्यान पर भेड़िये की चर्बी पुती थी और जो कपड़े में लिपटी थी जिस पर अलकतरा जमा था।

उस सच्चे वीर के साथ एक बहुत बड़ी भीड़ आक-मुयूँगुज तक गयी। आक-मुयूँगुज तक एक दिन का रास्ता था और उस भयङ्कर पहाड़ के प्रान्त में एक चौड़ी भूमि पर जब खान और उसके दल के लोग थके घोड़ों से उतरे, तब तक शाम हो चुकी थी।

तब खान ने उस सच्चे वीर को सवेरे तक आराम करने की आज्ञा दी और खान के योद्धाओं के पहरे में वह वीर तुरंत गहरी नींद में सो गया।

सबेरा हुआ तो धुँधलका छाया रहा। हवा ज़ोर से चल रही थी। लगता था कि देवताओं को यह साहसपूर्ण कार्य पसन्द नहीं था। हवा कराहती और सिसकारी देती हुई आक-मुयूँगुज की खड़ी चट्टानों को बुहार रही थी।

उस सच्चे वीर ने अपना जिरहबख्तर और क़रीब सारे कपड़े उतार दिये, पीठ पर खान की तलवार बाँध ली और अपना लहराता अरबी चोगा पहन लिया।

और उस सच्चे वीर ने वह काम कर दिखाया जो आक-

मुयुँगुज के अस्तित्वकाल से अन्य कोई पुरुष नहीं कर सका था : शृङ्ग की चोटी शर उसने तलवार रख दी और जीवित नीचे उतर आया। खान के सामने खड़े होते ही गिरकर ज़मीन पर लोटने लगा, उसका सारा बदन छिल गया था और ख़ून बह रहा था।

वचन के पक्के खान ने सिईदुरूश को बुलवाया। जिससे उसने विश्वासघात किया था, अपने उस प्रेमी को देखकर वह सिटपिटाई। किन्तु उस सच्चे वीर ने उसे अपनी तरफ़ खींच लिया, उसके सुन्दर मुखमण्डल पर से पर्दा हटाया और उस पर अपनी जलती आँखें गड़ा दीं। और तब बिजली की तेज़ी से उसने एक छुरा निकाला जिसे उसने कमर में छिपा रखा था, और अपनी दुलहिन के सीने में भोंक दिया।

क्रोध और व्यथा से चीखते हुए खान के दोनों बड़े लड़के उस सच्चे वीर की तरफ़ झपटे, किन्तु वज्र-गर्जन के स्वर में खान ने उन्हें रोक दिया।

"आदमी जितनी दे सकता है, उससे कहीं बड़ी कीमत यह इसके लिये दे चुका है। यह इसकी है। इसे शान्ति से चले जाने दो। इसके हथियार और ऊँट लौटा दो।"

उस सच्चे वीर ने अदब के साथ खान को सर झुकाया। उसके कुछ बाद ही उसका सफ़ेद ऊँट केतमेन की छोटी-छोटी पहाड़ियों में ग़ायब हो गया।

काशगढ़ी कभी एक तरफ़ तो कभी दूसरी तरफ़ झुक जाता

था, चट्टान पर उसके पाँव फिसल रहे थे। निर्मम हवा से ज़र्दे बादल आसमान में भाग-दौड़ मचाये हुए थे। घनघटा से घिरे आकाश के नीचे पहाड़ उदास और भयानक दीखते थे।

उसोल्तसेव कूद पड़ा, घोड़े को थपथपाया और उसके ऊपर के कोमल होंठ पर उसे चूम लिया। तब उसने घोड़े के सिर को धकेला और गर्दन पर ज़ोर से चाँटा मारा। घोड़ा उछलकर एक बग़ल हो गया और अपनी गर्दन टेढ़ी करके अपने मालिक की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखने लगा।

"बेटा अखरोटी, जाकर चरो" उसोल्तसेव ने कठोरता से कहा, प्रबल उत्तेजना उसका कण्ठरोध करने लग गयी थी।

उसने अपने जूते झटका देकर उतार दिये। उसके पाँव शीघ्र ही छिल जायेंगे, लेकिन वह जानता था कि अगर वह यह काम कर सकेगा तो नंगे पाँव ही संभव होगा। टाँकियों का थैला उसने अपने गले में बाँध लिया और धीरे-धीरे उस लाल, अति प्राचीन चट्टान की ओर बढ़ चला।

समय और अपने आसपास की दुनिया का अब उसके लिये कोई अस्तित्व नहीं था। उसकी सम्पूर्ण शारीरिक और मानसिक शक्ति ऐसी घनीभूत अवस्था में आ गयी थी, जिस अवस्था में कोई दुर्बल व्यक्ति बच नहीं सकता और सबल व्यक्तियों को जिसका कभी-कभी ही अनुभव होता है।

कई घंटे बीत गये। प्रचण्ड परिश्रम से काँपता हुआ उसोल्तसेव रुका और पहाड़ के सीधे खड़े पत्थर के सीने में अपने

को चिपका दिया। पहली बार वह जहाँ रुक गया था, इस बार उससे काफ़ी ऊँचा चढ़ चुका था। वहाँ पर मुख्य स्तर से महीन दानेदार टिन-पत्थर की दो शाखायें निकलकर एक ऊपर को और दूसरी बाँयी ओर को गयी थी जिसका ऊपर का कड़ा सिरा शैलों से करीब एक इंच बाहर निकला हुआ था। उसोल्तसेव इसकी सहायता से पहाड़ की पश्चिम दिशा में पहुँचने की आशा करता था जहाँ चढ़ाई इस तरह बिलकुल सीधी नहीं लग रही थी। टिन-पत्थर के, पतली शाखा के ऊपर, शैलों में कई टाँकियाँ घुसेड़ने और उनपर अपने शरीर का भार रखने की वह इच्छा करता था।

और उसी समय जब कि वह करीब ५०० फुट की ऊँचाई पर पहाड़ की दीवार से चिपका हुआ था, उस भूगर्भशास्त्री को दिल दहलानेवाला यह ज्ञान हुआ कि वह अपना दाहिना या बाँया कोई हाथ हटा नहीं सकता। अत्यन्त विचलित भाव से उसने महसूस किया कि उसकी अवस्था अत्यन्त निराशापूर्ण है। उभरे हुए अंश को पार करने तथा दूसरे भाग पर क़दम रखने के लिये उसे अपनी पकड़ को बदलना पड़ा था, लेकिन दोनों हाथ फँसे रहने से वह टाँकी नहीं ठोंक सकता था।

पहाड़ की दीवार से अपने सारे शरीर को चिपकाये हुए उसोल्तसेव ऊपर लटकते शैल-शिखर को एकटक देखने लगा। उसने अपने को मृत्यु और पराजय के द्वार पर देखा। दूसरे क्षण ही यह विचार उसके दिमाग़ में बिजली की तरह कौंध गया। वह

सच्चा वीर इस विपत्ति से कैसे बचा था? हव···हाँ वह भी एक तेज़ हवावाले दिन में ऊपर चढ़ा था···

उभरे हुए अंश पर अपने शरीर को फैलाकर उसोल्तसेव एक तरफ़ हो गया, चिकने पत्थर को अपनी उगलियों से पकड़ा और पीछे की तरफ़ अपने को धकेला। जैसे ही उसने पत्थर पकड़ा कि उसके पेट की पेशियों में एक भीषण यन्त्रणा का अनुभव हुआ। उसी समय उभरे हुए अंश की तरफ़ से आती हुई हवा के एक झोंके ने उसोल्तसेव को कोमल भाव से किन्तु दृढ़ता के साथ दीवार की ओर धकेल दिया।

अब वह थाक पर खड़ा था। उभरे अंश के ऊपर यहाँ हवा काफ़ी तेज़ थी; उसका लगातार दबाव उसे आगे बढ़ने में सहायता कर रही थी। उसने देखा कि यद्यपि थाक ऊपर को ढालू था, तथापि वह आगे बढ़ सकता था।

उसोल्तसेव ने महसूस किया कि उसके थके शरीर में एक नवीन बल का तीव्र वेग से सञ्चार हो रहा है। लगा कि वह सच्चा वीर उसकी बग़ल में खड़ा है और मित्रतापूर्ण प्रोत्साहन के शब्द कह रहा है। उसने तुरन्त उस सफ़ेद चट्टान के एक उभरे हुए अंश में रस्से का फँदा फँसाया। अत्यन्त सावधानी से उसने वह अनमोल तलवार उठायी और अपनी पीठ पर बाँध ली। हथौड़े को यथास्थान रखता हुआ वह शरारत से मुस्कुराया।

एक बार देखते ही उसे साफ़ मालूम हो गया कि यह चट्टान 'ग्राईसेन' से—अर्थात् प्रचण्ड ताप से परिवर्तित ग्रेनाइट से तथा

टिन-पत्थर से भरी खड़िया मिट्टी से बनी थी। उस विशुद्ध श्वेत चट्टान में जहाँ-तहाँ रजत वर्ण मस्कोवाइट, जगमग पुखराज, सड़ी काली मकड़ी जैसी तुर्मलाईन और उसकी चढ़ाई का लक्ष्य टिन पत्थर का विशाल, कुछ-कुछ भूरे केलास जहाँ-तहाँ बिखरे थे। यह 'ग्राईसेन' एक विशेष प्रकार का था जिससे उसोल्तसेव परिचित नहीं था : मूल ग्रैनाइट का अब कुछ भी नहीं बच रहा था, उसकी जगह कड़ा और ठोस दूध-सा सफ़ेद स्फटिक प्रस्तर आ गया था।

यह मूलशिला पूर्णतः परिवर्तित-सी लगती है, उसोल्तसेव ने निर्णय किया। अगर ऐसी बात है तो स्तेप के नीचे संचय काफ़ी बड़ा होगा।

उसने नीचे देखा। पहाड़ बिलकुल सीधे नीचे गया था। उसकी जड़ धूल के एक उमड़ते बादल से छिपी थी। एक विशाल स्तम्भ के ऊपर उसोल्तसेव पूर्ण निस्तब्धता में खड़ा था। लगता था कि उसके तथा नीचे की दुनिया के बीच का प्रत्येक सूत्र छिन्न हो चुका था। अवस्था सचमुच ऐसी थी, क्योंकि उसके तथा उसके प्राणों के बीच में भीषण खतरनाक उतराई थी, और वह अभी जिस अवस्था से जान बचाकर आया था, उतराई उससे कहीं ज़्यादा खतरनाक थी। उसके दिमाग़ में यह विचार भी आया कि यदि यह दिन बीतने के पहले ही उसकी मृत्यु नहीं होती है तो वह एक बदला हुआ, दूसरा ही आदमी होगा, अपने उद्देश्य पर पहुँचने के लिये उसने जो अतिमानवीय प्रयास किये थे, वे उसकी आत्मा पर अमिट छाप छोड़ जायेंगे।

इन विचारों को अलग फेंककर उसोल्तसेव अपने काम में जुट गया। स्फटिक प्रस्तर की काँच जैसी ठोस चट्टान में दरार ढूँढ़ निकालने में उसे बहुत समय लगा। उसके हथौड़े के वारों से चट्टान के बड़े-बड़े टुकड़े वज्रपात के साथ नीचे गिरने लगे। वह उन्हें गिरते देखने तथा अपने नोट-बुक में बनाये नक्शे में निशान लगा देने लगा कि नीचे वे कहाँ गिरे थे। तब उसने दूसरा नक्शा बनाया जो शृङ्ग का भूगर्भशास्त्रीय चित्र था और जिसमें संकेत था कि सञ्चय कहाँ मिल सकने की संभावना है, फिर भविष्य में खनिज पदार्थों का पता लगाने के कार्य के लिये उसने कुछ संकेत लिख डाले।

तब उसने अपनी नोट-बुक का पहला पन्ना खोला और बड़े-बड़े अक्षरों में उस पर लिखा: "ध्यान दीजिये: श्वेत-शृङ्ग सञ्चय का विवरण।" नोट-बुक को उसने अपनी ऊपरवाली जेब में रखा और बटन लगा दिया। पल भर उसने मानसनेत्रों से देखा कि उसका चकनाचूर प्राणहीन शरीर पड़ा है, जिसके पास खड़े उसके मित्र उसकी जेबें टटोल रहे हैं। उसने सिर हिलाया और वह रस्सा खोलने लगा जिसे वह अपने साथ ले आया था। रस्सा बहुत बड़ा तो नहीं था, मगर उसे भरोसा था कि उसी के सहारे वह सीधी खड़ी दीवार पर से अपनी टाँकियों तक पहुँच जायेगा।

वह रस्से के सिरे को बाँधने की जगह ढूँढ़ने लगा, पहले एक उभार के पास, फिर बिलकुल छोर के पास दूसरे उभार

पर। अब हवा पहले से ज़्यादा ज़ोर से चीख़ रही थी और उसोल्तसेव के चेहरे तथा पाँवों पर पत्थर के टुकड़े फेंक रही थी।

सहसा हथौड़े की चोट धातु पर पड़ी। कूड़े के ढेर को अलग करके उसोल्तसेव ने भारी लम्बी तलवार खींच ली जिसकी चमकती हुई मूठ सोने की थी और म्यान के ऊपर एक आधा सड़ा कपड़ा फरफरा रहा था।

उसोल्तसेव आश्चर्य से सुन्न होकर बैठा रहा। उसके सामने श्वेत-शृङ्ग के प्रथम विजयी, रूमानी कहानी के वीर की जीवित मूर्ति उठ खड़ी हुई······खान की तलवार मानव की कृतियों के अमरत्व का एक प्रतीक थी।

शृङ्ग की सीधी खड़ी आधारशिला की पुश्त में रस्सी समाप्त हो गयी। उसोल्तसेव वहाँ रुका और चारों तरफ़ देखने लगा। एक बादल उसीकी ओर झपटता आ रहा था। उस विशाल सफ़ेद ढेर की उड़ान, हवा पर उसका अनायास तिरना, कितना आज़ाद, कितना मस्त था। अपनी शक्ति का आवेगपूर्ण विश्वास उसोल्तसेव पर हावी हो गया। उसने हवा के रुख में अपना सीना तान दिया, अपने को सीधा खड़ा तथा केवल हवा के सहारे अपने संतुलन को ठीक रखता वह तेज़ी से नीचे उतरने लगा।

स्वप्नवत्, अविश्वास्य आसानी से उसोल्तसेव सँकरे थाक पर पहुँच गया और वहाँ से और भी नीचे चला गया। यहाँ, बग़ल की एक पहाड़ी की आड़ होने से, हवा सहसा रुक गयी और

एक जानलेवा भिड़न्त शुरू हुई। उस सीधे ढलवें से उसोल्तसेव बार-बार फिसलने लगा, उसके अङ्ग-अङ्ग छिल गये, उसके हाथ के नह पीसकर लहूलुहान हो गये। बार-बार वह मुड़ जाता था और अपने चेहरे को, जान बचाने के लिये, चट्टान से सटा कर दबाता था, और तब फिर नीचे उतरना शुरू करता था।

और अन्त में वह भूल गया कि वह कहाँ था, क्या कर रहा था; केवल एक ही विचार उसके दिमाग़ में दमक रहा था: उसे सटे रहना है, पकड़े रहना है; चाहे जो भी हो, किंतु जो प्रचंड शक्ति लगातार प्रबल वेग से उसे नीचे खींच रही है, उसके सामने उसे कभी झुकना नहीं है।

आखिरकार आक-सुयुँगुज पर भयानक दुःस्वप्न की वह घड़ी सहसा समाप्त हो गयी, जब अपनी सारी शक्ति का क्षय हो जाने के बाद, अपनी इच्छा-शक्ति खो देने के बाद, उसोल्तसेव ने उस धारदार चट्टान को छोड़ दिया और लड़खड़ाकर नीचे ज़मीन पर आ गिरा।

उसने आँखें खोलीं और अपने ऊपर छाये सुनहले आसमान को एकटक देखने लगा। सवेरे की हवा में एक बड़ा-सा गीध उसके ऊपर मँडरा रहा था—इतना नीचे कि उसके फैले हुए पंखों के निकले हुए परों को उसोल्तसेव आसानी से देख पाता था।

बहुत देर तक उसोल्तसेव उस गीध को एकटक देखता रह गया और अन्त में उसने समझा कि वह चिड़िया सीधे उसी की ओर उड़ती चली आ रही है। उसने उछलकर बैठने की कोशिश

की। नहीं, वह श्वेत-श्रृंग को जीत चुका है और गीध से हारने का सवाल ही नहीं उठ सकता। उठकर बैठने में उसे कोई चीज़ बाधा दे रही थी। उसकी उँगलियों ने उस तलवार को स्पर्श किया। उसने उसे खोल दिया और उठकर बैठ गया।

अपने गिरने के पहले की घटनाओं की स्मृति से उसे मतली आ गयी। उसने आतंक के साथ अपने छिले और लहूलुहान हाथ-पाँव, फटे और खून से लथपथ कपड़े देखे। अपने हाथ पाँव हिलाकर उसे सन्तोष हुआ कि कहीं कोई हड्डी नहीं टूटी है, और अपने तलवों की असह्य पीड़ा की परवाह न करके वह जैसे-तैसे अपने पाँव पर खड़ा हो गया। अपने अभिवादन में उसने अपने घोड़े का हिनहिनाना सुना, तब फिर लड़खड़ाकर ज़मीन पर गिर पड़ा।

उसके चेहरे पर, होठों पर ठण्डा पानी डाला गया। उसोल्त-सेव जब तक सका, तब तक पानी पीता रहा। उसने आँखें खोलीं और देखा कि ऊपर आसमान नीला और गर्म है। उसने आँखें फेरीं तो उईगर का बेतरह डरा हुआ चेहरा दिखाई पड़ा।

उसने अपने को जैसे-तैसे घुटनों के बल बैठाया। उईगर आतङ्क से घबराकर उससे दूर हट गया।

"तुम क्यों डर रहे हो, अरसलान? मैं ज़िन्दा..."

"बहोत ऊपर चढ़ाई करा, सरदार?" अरसलान ने पूछा।

"बिलकुल चोटी तक।" उसोल्तसेव ने ऊपर की, आक-सुयँगुज की तरफ़ इशारा किया जिसका पार्श्व सन्ध्या की छायाओं

के नीले रङ्ग से रञ्जित था। "यह लो देखो," उसने सोने की मूठवाली तलवार उईगर के हाथ में दी। गिरने के कारण आधा म्यान चूर हो गया था और ऊपर के फटे भूरे भाग के अंदर अनमोल नीला इस्पात चमक रहा था जो फारस के पौराणिक शस्त्र-निर्माताओं का बनाया हुआ था और जिसका रहस्य उनके साथ ही लुप्त हो गया था।

उईगर ने घुटने टेक दिये और तलवार को नहीं छुआ।

"लो, ले लो यह," उसोल्तसेव ने फिर कहा।

"नहीं, नहीं," अपना सिर हिलाता हुआ वह उईगर फुसफुसाया। "मामूली आदमी इसको छूने नहीं सकता, समझे सरदार! सिरफ आपका माफिक असली बहादुर छू लेने सकता है!"